हरे कृष्ण ट्रस्ट
चण्डीगढ़।

ॐ नमो नारायणायेः

अरुण संहिता
लाल किताब

सामुद्रिक

(विशेष उपायों सहित)

हरे कृष्ण ट्रस्ट
पी० ओ० बाक्स 123 सैक्टर 17 चण्डीगढ़

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक

सर्वाधिकार सुरक्षित
हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

प्रथम संस्करण 1995
मूल्य 149/— (केवल एक सो उन्नचास रुपये)

हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़ द्वारा
फोटो टाईपसेट एवं मुद्रित
1378 सैक्टर 2 बी चण्डीगढ़

(0172) 72 378
(0172) 567 9

समर्पण

Internet Version for circulation now not available in printed form
Courtsey

HKT PUblications
phone 0172-2782110, 0172-2561666
yogacollege@gmail.com

प्राक्कथन

भारतीय दार्शनिक परम्परा गहरे रहस्यों को विभिन्न दिशाओं से व्यक्त करती रही है जिस पर मानव समय–समय पर शोध करता आ रहा है। यह सभी रहस्य ऋषि मुनियों एवं मनिषियों की ही देन है। मुख्यता दर्शन शास्त्र का अर्थ है, 'दर्शन' यानि देखना (to see) जो मनिषियों ने देखा उसको एक सूत्र में पिरो दिया और जिससे वह शास्त्र बने। इसका अर्थ यह है कि जो आज हमें ग्रन्थों के रूप में उपलब्ध है वह सभी अनुभव के आधार पर ही है ।

ज्योतिष ग्रन्थों की ऋंखला में यह भी एक अनुपम भेंट है जिसका श्रेय प्रथम रूप से प्रो० ओ० पी० पुरी जी, को जाता है जिन्होंने इस ग्रन्थ को हिन्दी भाषा में लाने के लिए अकथ परिश्रम एवं प्रयास किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसी ऋंखला में **अरुण संहिता (लाल किताब) हस्त रेखा विज्ञान** जो प्रोफेसर जी ने सम्पादित की, उस पुस्तक की सराहना विशेषयज्ञों ने की परन्तु इस ग्रन्थ की कुछ विशेषताएं अनुपम ही हैं जैसे कि **इसमें कुछ विशेष उपायों का वर्णन भी मिलता है जो कि अन्य भागों में नहीं दिया गया।**

यह सभी उपाये करने से मानव जीवन पर अनुकूल प्रभाव ही पड़ता है। यहां पर हम यह बात को स्पष्ट करना चाहेंगे कि कुछ लोगों ने यह धारणा व्यवसाय रूप से पकड़ी है कि इस ग्रन्थ को घर में नहीं रखना चाहियें। परन्तु हमारे **दो भाग अरुण संहिता (लाल किताब)** के छपने के पश्चात लोगों में गलत धारणा का निराकरण हुआ तथा साहस भी हुआ इस ग्रन्थ पर कार्य करने का। अब हमें देश– विदेश के विभिन्न भागों से सूचनायें भी मिल रही है इस ग्रन्थ के प्रयोग करने के विषय में।

इससे जीवन पर अनुकूल प्रभाव ही पड़ा है और ऐसा कोई भी विधान नहीं है कि इसको रखने एवं इसमें वर्णित उपाय करने से कोई प्रतिकूल प्रभाव हो।

अभी तक जैसे कि हम (इस भाग सहित) तीन भागों को निकालने में सफल हुए हैं, निकट भविष्य में प्रभु अनुकम्पा से ही हम चतुर्थ भाग को निकाल पायेंगे, क्योंकि अभी शोध कार्य चल रहा है।

यहां पर हम यह कहना चाहेंगे कि इन सभी भागों का गहरा अध्ययन करने से मनुष्य को कुण्डली एवं हस्त रेखा के माध्यम से निकट भविष्य को सुखमय बनाने की विभिन्न विधियों का ज्ञान हो जाता है। हमारा यह विश्वास है कि एक शिक्षित व्यक्ति जिसको कुछ अध्ययन में रूचि हो एवं अपने मानसिक पटल पर थोड़ा सा जोर दे तो इसको सीखने में कोई कठिनाई नहीं है ।

इस के विषय में यहां पर यह भी कहना चाहेंगे कि इस दिशा में हमने प्रगतिशील कदम लिया है। यदि आप इस दिशा में रूचि रखते हैं तो हम निकट भविष्य में एक गठन करने जा रहे हैं जिसमें देश एवं विदेशों से विशेषयज्ञों की सहायता से इस पर और शोध कार्य हो, यही हमारा आन्तरिक इच्छा है। इस प्रकार जो व्यक्ति केवल शोध कार्य के लिए हमारे साथ कार्य करना चाहता है तो वह हमें अपना पूर्ण विवरण लिख कर भेज दें। जैसे ही कोई कार्यक्रम करने के लिए कार्यान्वित होगा उनको समय अनुसार आमन्त्रित किया जायेगा। कृपया इस बात का यहां पर ध्यान रखें कि हम इस शोध कार्य में किसी व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में कोई विचार नहीं करेंगे ।

अरुण संहिता (लाल किताब) के विषय में एक और बात स्पष्ट करना चाहेंगें कि इस में विभिन्न उपायों का वर्णन किया गया है, जोकि विभिन्न ग्रहों से संबधित है। इस बात को कहने में कोई संकोच नहीं कि यह उपाये करने से जीवन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इससे लाभ कितनी सीमा में हुआ इस विषय में तो कहा जा सकता है।

इस विषय में यदि विस्तृत जानकारी चाहते हैं तो इस के लिए प्रकाशक से सम्पर्क करें ।

डा० अरुण

हरे कृष्ण ट्रस्ट
चण्डीगढ़

विषय सू

प्रार्थना	2
व्याख्या राशि व ग्रह	5
पक्का घर खाना न. 1	5
पक्का घर खाना न. 2	7
पक्का घर खाना न. 3	8
पक्का घर खाना न. 4	9
पक्का घर खाना न. 5	9
पक्का घर खाना न. 6	1 `
पक्का घर खाना न. 7	11
पक्का घर खाना न. 8	12
पक्का घर खाना न. 9	13
पक्का घर खाना न. ो	13
पक्का घर खाना न. 11	14
पक्का घर खाना न. 12	15
ग्रह दृष्टि	16

वृहस्पति - (जगत् गुरु)

वृहस्पति खाना न. 1	18
वृहस्पति खाना न. 2	19
वृहस्पति खाना न. 3	2 `
वृहस्पति खाना न. 4	2 `
वृहस्पति खाना न. 5	21
वृहस्पति खाना न. 6	21
वृहस्पति खाना न. 7	22
वृहस्पति खाना न. 8	23
वृहस्पति खाना न. 9	23
वृहस्पति खाना न. ो	24
वृहस्पति खाना न. 11	25
वृहस्पति खाना न12	25

सूर्य (तपस्वी राजा)

सूर्य खाना न. 1	27
सूर्य खाना न. 2	27
सूर्य खाना न. 3	28
सूर्य खाना न. 4	28
सूर्य खाना न. 5	29
सूर्य खाना न. 6	3 `
सूर्य खाना न. 7	3 `
सूर्य खाना न. 8	31
सूर्य खाना न. 9	32
सूर्य खाना न. ो	32
सूर्य खाना न. 11	33
सूर्य खाना न. 12	34

चन्द्र (धरती माता)

चन्द्र खाना न. 1	35
चन्द्र खाना न. 2	36
चन्द्र खाना न. 3	36
चन्द्र खाना न. 4	37
चन्द्र खाना न. 5	38
चन्द्र खाना न. 6	38
चन्द्र खाना न. 7	39
चन्द्र खाना न. 8	39
चन्द्र खाना न. 9	4 `
चन्द्र खाना न. ो	41
चन्द्र खाना न. 11	41
चन्द्र खाना न. 12	42

शुक्र (जगत् लक्ष्मी)	
शुक्र खाना न. 1	43
शुक्र खाना न. 2	44
शुक्र खाना न. 3	45
शुक्र खाना न. 4	46
शुक्र खाना न. 5	47
शुक्र खाना न. 6	47
शुक्र खाना न. 7	48
शुक्र खाना न. 8	49
शुक्र खाना न. 9	5
शुक्र खाना न. 10	51
शुक्र खाना न. 11	51
शुक्र खाना न. 12	52

मंगल (शस्त्र-धारी)	
मंगल खाना न. 1	55
मंगल खाना न. 2	56
मंगल खाना न. 3	56
मंगल खाना न. 4	57
मंगल खाना न. 5	58
मंगल खाना न. 6	59
मंगल खाना न. 7	6
मंगल खाना न. 8	6
मंगल खाना न. 9	61
मंगल खाना न. 10	61
मंगल खाना न. 11	62
मंगल खाना न. 12	63

बुध (शक्तिमान)	
बुध खाना न. 1	65
बुध खाना न. 2	65
बुध खाना न. 3	67
बुध खाना न. 4	68
बुध खाना न. 5	68
बुध खाना न. 6	69
बुध खाना न. 7	7
बुध खाना न. 8	71
बुध खाना न. 9	72
बुध खाना न. 10	74
बुध खाना न. 11	75
बुध खाना न. 12	75

शनि (देवता)	
शनि खाना न. 1	78
शनि खाना न. 2	79
शनि खाना न. 3	79
शनि खाना न. 4	8
शनि खाना न. 5	81
शनि खाना न. 6	82
शनि खाना न. 7	82
शनि खाना न. 8	83
शनि खाना न. 9	84
शनि खाना न. 10	85
शनि खाना न. 11	86
शनि खाना न. 12	87

राहू (मुसाफिर)	
राहू खाना न. 1	89
राहू खाना न. 2	89
राहू खाना न. 3	9

राहू खाना न. 4 9
राहू खाना न. 5 91
राहू खाना न. 6 92
राहू खाना न. 7 92
राहू खाना न. 8 93
राहू खाना न. 9 93
राहू खाना न. 1 94
राहू खाना न. 11 94
राहू खाना न. 12 95

केतू (दरवेश)

केतू खाना न. 1 97
केतू खाना न. 2 98
केतू खाना न. 3 98
केतू खाना न. 4 99
केतू खाना न. 5 99
केतू खाना न. 6 1
केतू खाना न. 7 1 1
केतू खाना न. 8 1 1
केतू खाना न. 9 1 2
केतू खाना न. 1 1 2
केतू खाना न. 11 1 3
केतू खाना न.12 1 4

दो ग्रहों का योग

वृहस्पति - सूर्य 1 5
वृहस्पति - चन्द्र 1 8
वृहस्पति - शुक्र 112
वृहस्पति - मंगल 114
वृहस्पति - बुध 116
वृहस्पति - शनि 119
सूर्य - चन्द्र 124
सूर्य - शुक्र 126
सूर्य - मंगल 127
सूर्य - बुध 127
सूर्य - शनि 131
चन्द्र - मंगल 132
चन्द्र - बुध 133
चन्द्र - शनि 136
शुक्र - चन्द्र 138
शुक्र - मंगल 1 4
शुक्र - बुध 141
शुक्र - शनि 144
मंगल - बुध 146
मंगल - शनि 148
बुध - शनि 151
राहू - केतू मुशतरका 155
राहू - वृहस्पति 157
राहू - सूर्य 159
राहू - चन्द्र 1 6
राहू - शुक्र 161
राहू - बुध 162
राहू - शनि 164
राहू - केतू - बुध 164
राहू - चन्द्र - वृहस्पति 165
राहू - चन्द्र - शनि 165
राहू - सूर्य - शुक्र 165
राहू - सूर्य - चन्द्र 166
राहू - सूर्य - बुध 166
राहू - शुक्र - केतू 166
राहू - बुध - शुक्र 166

राहू – बुध – वृहस्पति 167
राहू – बुध – चन्द्र 167
राहू – वृहस्पति – शनि 167
राहू – मंगल – शुक्र – बुध 167
राहू – वृहस्पति – बुध – चन्द्र 167
राहू – मंगल – शनि – बुध 167
केतू – वृहस्पति 168
केतू – सूर्य 168
केतू – चन्द्र 169
केतू – शुक्र 169
केतू – मंगल 1 7
केतू – बुध (राशि फल) 171
केतू – शनि 171
केतू – सूर्य – चन्द्र 172
केतू – शुक्र – बुध 172
केतू – मंगल – वृहस्पति 172
केतू – मंगल – शनि 172
केतू – सूर्य – वृहस्पति 172
केतू – सूर्य –बुध 173
केतू – सूर्य – बुध – चन्द्र 173
केतू – मंगल – शुक्र – बुध 173
वृहस्पति – सूर्य – बुध 173
वृहस्पति – चन्द्र – शनि 173
वृहस्पति – शुक्र – बुध 174
वृहस्पति – शनि – शुक्र 174
वृहस्पति – शनि – बुध 174
सूर्य – बुध – वृहस्पति 174
सूर्य – वृहस्पति – शनि 174
सूर्य – शनि – शुक्र 174
चन्द्र – शनि – बुध 175
चन्द्र – शुक्र – सूर्य 175
चन्द्र – शुक्र – बुध 175
चन्द्र – शुक्र – शनि 176
चन्द्र – शुक्र – वृहस्पति 176
शुक्र – बुध – मंगल 176
शुक्र – बुध – शनि 176
मंगल – बुध – सूर्य 176
मंगल – बुध – चन्द्र 176
मंगल – चन्द्र – शनि 177
मंगल – शुक्र – शनि 177
मंगल – चन्द्र – वृहस्पति 178
मंगल – चन्द्र – शनि 178
मंगल – शनि – वृहस्पति 178
मंगल – शनि – सूर्य 178
चन्द्र – शनि – शुक्र – मंगल 179
चन्द्र – वृहस्पति – बुध – शनि 179
मंगल – शनि – सूर्य – बुध 179
मंगल – चन्द्र – शुक्र –बुध 179
मंगल – चन्द्र – सूर्य –वृहस्पति 179
मंगल – शनि – सूर्य – बुध 179
चन्द्र – शुक्र – बुध –शनि 179
चन्द्र – शुक्र – बुध – सूर्य 179
पंचायत **(पांच ग्रह)** 18
वर्ष फल चार्ट 181
वार्षिक हालत के लिए दिया हुआ वर्षफल 186
वार्षिक कुण्डली 187
मासिक कुण्डली 187
दिन कुण्डली 188
घंटा कुण्डली 188
मिनट कुण्डली 188

सैकेंड कुण्डली	189
रात कुण्डली	189
दिन कुण्डली	189
ग्रहों से घर	1 9`
दृष्टि ग्रह	191
बुध का हर घर से संबंध	193
ग्रहों की उमर	194
औसत आमदन माहवार	195
ग्रहों की दोस्ती दुश्मनी	196
कुण्डली में बन्द मुट्ठी के खाने	197
चेहरे पर ग्रह	198
कुर्बानी के बकरे	198
सप्ताह व एक दिन में ग्रह	199
ऋण	199`
जन्म कुण्डली के खाने (दिमाग़ पर)	2``
मसनूई ग्रह	2`1
सूर्य का प्रभाव	2``
मकान कुण्डली	2`1
जन्म कुण्डली के प्रत्येक खाने का मकानों से संबंध	2`1
आम कुण्डली के खाने	2`2
उमर कुण्डली	2`2
अभ्यास कुण्डली	2`3
खर्च – बचत	2`4
औलाद	2`5
मकान	2`7
मकान के कोने	2`7
महादशा	2`8
उपाय ग्रहों के	2 1`
ग्रहों की उमर	212
चन्द्र कुण्डली	213
कुण्डली की जाँच	215

ॐ नाराणाये नम:

****

ॐ

खुद इन्सान की पेश न जावे,
हुक्म विधाता होता है।
सुख दौलत और साँस आखिरी,
उमर का फैसला होता है।
हथेली की लकीरों से
टेवा व जन्म कुण्डली के
बनाने और जिन्दगी
के पूरे हालात देखने के लिये
(सामुद्रिक ज्ञान) की

अरुणा संहिता
लाल किताब

प्रार्थना

क्या हुआ था क्या भी होगा, शौक दिल में आ गया ।
इल्म ज्योतिष हस्त रेखा, हाल सब बतला गया ।
जन्म कुण्डली या कि चन्द्र, हिस्से दो बना गया ।
हाथ दायां ले के बायां, भेद है समझा गया ।
जन्म राशि घर में पहले, लग्न को लिखवा गया ।
लग्न पहला अक्षर गिन कर, 12 घर चलवा गया ।
इस तरह पर कुण्डली पूरी करके, जब बनवा गया ।
हाल सब ग्रह ख़ाना दारी, कापी पे लिखवा गया ।
भेद बाक़ी इतना रखा, उमर को छिपवा गया ।
लड़का लड़की न बोला, बच्चा यह बतला गया ।
जन्म कुण्डली मर्द दाँया, पहले है रखवा गया ।
औरत कुण्डली चन्द्र बाँया, पीछे है लगवा गया ।
इशारे से ही बात कर के हाल, सब पढ़वा गया ।
दो छपे थे हिस्से पहले, एक यह बनवा गया ।

उदाहरण के तौर पर जन्म कुण्डली तुला लग्न इस प्रकार है ।

ऊपर की कुण्डली में लग्न को एक माना ।

(1) हालत देखने के लिये वृहस्पति खाना नम्बर 1, सूर्य नम्बर 2 इत्यादि देखें। इसी तरह वर्षफल भी पढ़ें।

(2) हर ग्रह के खानादार प्रभाव के शुरु से जो चीज़े लिखी है जब वह पैदा होगी, इस खाना नम्बर में दिया हुआ असर शुरु होगा। उदाहरण के तौर पर शुक्र नम्बर 1-8 में लेने से या शादी 25वें साल, मन्दा फल शुरु होगा।

क्या टेवा ठीक भी है।
लाल किताब है ज्योतिष निराली,
जो किस्मत सोई को जगा देती है।
फरमान पक्का देके बार आखिरी,
दो अक्षरों से ज़हमत हटा देती है।
शर्त राहू केतू की 7वीं भी तोड़ी,
जन्म राशि भी वह मिटा देती है।
लग्न एक का हिन्सा लेकर जो चलती,
खत्म 12 पर ही वह कर देती है।
है बुनियाद रेखा क्याफा से चलती,
फलादेश ज्योतिष बता देती है।
हवाई ख्यालों को यह तर्क करती,
खड़ा घोड़ा चन्द्र को कर देती है।
न 28 नक्षत्र न पंचाग गिनती,
भुला राशि 12 को वह देती है।
जन्म वक्त दिन माह उमर साल सब कुछ,
इसमें नाम को भी उड़ा देती है।
फक्त रेखा फोटो या छत से कुण्डली,

जब विधाता किसी को हो शक्की,
उपायें मामूली बता देती है।
ग्रह फल व राशि के टुकड़े दो करती,
यह रेख में मेख लगा देती है।

आरम्भ

हुकम विधाता जन्म मिले तो, लेख ज्योतिष बतलाता है ।
लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, किस्मत साथ ले आता है ।
इस बच्चे की नन्ही मुठ्ठी में, पकड़ा देव आकाश का है ।
भरा खजाना जिस के अन्दर, निधिं सिद्धि की माला है ।
नौ निधि को ग्रह 9 माना, सिद्धि 12 राशि हैं ।
9 गुणा जब 12 गिनते, होती माला पूरी है ।
राहु केतु जो पाप गिने है, ग्रह सब ही को घुमाते हैं ।
गुरु अकेला दो को चलावे, घूमते पर वह बुध में हैं ।
सात हो नौ या माला चौरासी, पाप फ़रक 2 ही का है ।
ऊपर नीचे जगत के अन्दर, झगड़ा इन दो ही का है।
पाप अगर सब दुनिया छोड़े, सात ग्रह बच जाता है ।
राशि 12 और सात ग्रह से, नरक चौरासी कटता है ।
नन्ही मुट्ठी जब खुली बच्चे की, आकाश–हवा भरपूर हुआ ।
हरकत–गर्मी–पानी से मिट्टी, ब्रह्माण्ड सारा जाग पड़ा ।
हाथ दायाँ और कुण्डलीजन्म को, तदबीर मर्द का नाम हुआ ।
बाँया हाथ और चन्द्र कुण्डली, तकदीर का काम हुआ ।
उलट हाथों से औरत माना, ग्रह फल राशि आम हुआ ।
इलम क्याफा ज्योतिष मिलते, लाल किताब का नाम हुआ ।
9 ग्रह राशि 12 घूमे, किस्मत का आग़ाज हुआ ।
नेक हवा जब चलने लगी तो, जहाँ दोनों आकार हुआ ।
तरफ 12 तेरे लौ की होते, गुरु जगत् में जन्म हुआ ।
पिछला जन्म अब खत्म हुआ ।
माया हवा जब मिलने लगी तो, पिछला जन्म जब समाप्त हुआ।
राजा रवि बच्चा ग्रह चाली, घर अपने प्रवेश हुआ ।
अ़कल लेख का झगड़ा चला तो, गृहस्थी गुरु उपदेश हुआ ।

राशि व ग्रह

मेश, वृष जब मिले मिथुन से, तर्जनी उंगली गिनते हैं।
कर्क, सिंह और कन्या राशि, अनामिका उंगली लेते है।
तुला, वृश्चिक, धन तीनों की, छोटी कनिष्टका होती है ।
मकर, कुम्भ और मीन इकट्ठी, मध्यमा उंगली बनती है ।
मेष, वृष मालिक मंगल, तुला, वृष शुक्र की है ।
कन्या मिथुन का बुध है मालिक, कुम्भ, मकर दो शनि की है ।
गुरु मालिक है धन, मीन का, कर्क चन्द्र की होती है ।
सिंह अकेला दुनिया गरजे, राशि जो सूर्य की है ।
केतू बैठता कन्या में तो, राहू निवासी मीन का है ।
पाप चढ़ा आसमान के ऊपर, जड़ जिस की पाताल में है ।

व्याख्या

सिद्ध 12 ब्रह्मा (वृ) 9 निधि, मोह (शं) माई (चें) आकाश।
राई(रा) घटे न तिल(के) बढ़े, मच्छ (शं),भाई (मं), प्रकाश **(सू)**

गुरु रवि और मंगल तीनों, नर ग्रह भी कहलाते हैं।
शनि राहू और केतू तीनों, पापी ग्रह बन जाते हैं ।
शुक्र लक्ष्मी चन्द्र माता, दोनों इस्त्री होते हैं ।
बुध अकेला चक्कर सभी का, जिस में सब ये घुमते हैं ।
नेकी बदी दो मंगल भाई, शहद जहर दो मिलते हैं ।
बद लालच गर मारे दुनिया, नेक दान को गिनते हैं ।

पक्का घर खाना नम्बर 1

घर पहला है तख्त हज़ारी, ग्रह फल राजा कुण्डली का ।
ज्योतिष में इसे लग्न भी कहते, झगड़ा मनुष्य है माया का ।
पूर्व तरफ–पक्का घर सूर्य, पर उपकार चवन्नी का ....।
चार दीवारी तह के कोने, सींग मवेशी खड़े हों जाकि ।
राज संबंध रंग हों गुड़ के, रसम पुरानी साज़ सफर के ।
झिल्ली धन जो पैदा होंगे, नाम हैसियत दुनिया लेंगे ।
पहला घर सारा तख़्त गिना तो, ७वाँ टिकने की धरती हो ।

७वाँ ही गर ख़ाली होवे, उलटा तख्त वह २४ हो ।
साल २४ से जितने आगे, दुश्मन ग्रह उस आता हो ।
टक्कर ऐसी उस ग्रह होगी, आगे न वह चलता हो ।
लग्न अगर खुद खाली होवे, किस्मत साथ न आई हो ।
किस्मत उसकी सातवें बैठी, या घर चौथे १०वें हो ।
मुट्ठी के घर चारों खाली, 9–3–11–5वेंहो ।
ये घर भी यदि ख़ाली होवें, 2–6–12–8वेंहो ।
घर 12 ही घूम के देखे, ऊंच कायम या घर का जो ।
किस्मत का वह मालिक होगा, बैठा तख़्त पर उसके हो ।
घर पहला जब राज हकूमत, सात वज़ीरी होता है ।
हर दो से कोई दुश्मन होवे, साथ फ़कीरी होता है ।
ऊंच, नीच, घर के जो गिने है, वह नहीं इन घरो लड़ते है ।
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते, उमर से भी वह मरते है ।
तख़्त पर बैठा नर ग्रह राजा, दूसरों से वह स्त्री है ।
7वें इसकी औरत बेटी, बुध शुक्र दो बैठती है ।
ज़्यादा एक से घर पहले में, नर ग्रह स्त्री होती है ।
दो से ज़्यादा घर 7वें में, स्त्री ग्रह–नर होती है ।
गिनती मगर हो राजा अलग राये कमेटी होती है ।
ज़ाहिरा बेशक तीन हों बैठे, गिनती चार की होती है ।
अकेला पहले बहुत हो 7वें, ग्रह फल राशि होती है ।
उलट अगर हों टेवे बैठे, जड़ 7 वें की कटती है।
गुरु शनि और मंगल टेवे, कहीं भी इस के बैठे हों।
फल वैसे ही घर पहले के, उस टेवे में होते हैं ।

पक्का घर खाना नम्बर 2

घर पक्का दूजा गुरु, ब्रह्मा गाय स्थान है ।
मिलता जहां पर है इकट्ठा, मान व धन ससुराल है ।
ज्ञान समुद्र घर 9वें का, या फल उमर हो पहली का ।
सफेद झण्डा किस्मत पे झूले, उमर बुढापा घर 2 का ।
दिशा उत्तर, पश्चिम है तो, असर–हवा–मिट्टी का है ।
घर 8 वां और 6वां मिलते, दरवाज़ा यह दो का है ।
ग्रह शत्रु पापी सभी, हृदय सफा सब कलेश ।
मौत–पातान के देखन कारण गुरु सुनें उपदेश ।
घर चल कर जो आवे दूजे ग्रह किस्मत बन जाता है ।
घर 10वां गर खाली होवे, सोया हुआ कहलाता है ।
कमाई किस्मत–बचत, जाति, स्त्री धन भी गिनते है ।
माता, बूआ, फूफी मासी, जगह तिलक की लेते है ।
क़द–सीधापन उंगली उसकी, भूख सुभाओ नेकी है ।
ज़ायका में वह खट मीठा तो, मोह माया भी होती है ।
गैस रतूबत शाख़ दबा कर, दरख्त भी पैदा होता है ।
सिफात इकट्ठी–राज रइयत, बैल पे साधु चढ़ता है ।
घर दूजा मैदान है 8 का, बैठक राहु केतु है ।
सर –पांवे के दोनों मालिक, माथा कुरआ–हवाई है ।
पीपल, पित्तल, मिट्टी पीली, केसर पीला रंग भी है ।
असर सभी का इस घर आकर, मंदे का भी उमदा है ।
ग्रह मुशतरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में ।
फल 2–11 अपना अपना, धर्म मन्दिर गुरद्वारा में ।
स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर, बैठे 2 या कहीं भी हों।
ग्रह दृष्टि से जो कोई देखे, वह औलाद से मरते हों ।
पाप की बैठक घर है गुरु के, गृहस्थ शुक्र बन जाता है ।
किस्मत सबकी जोमाथे पर चलती, केतु गुरु बुध मिलता है ।
चन्द्र–मंगल बद–शनि बैठे, मौत जन्म 2 मिलता है ।
आठ ग्रह इस घर में आते, जुदा रवि पर रहता है ।
केतु गुरु करें मस्तक लम्बा, करम धरम बढ़ता है ।
बुध कलम जब लिखे विधाता, माथा खुला हो जाता है ।
दुनियाकी किस्मतहै आकाश बुधमें, फर्क लम्बा चौड़ा गुरु केतु है।
गुरु लम्बा गिनते तो केतु है चौड़ा, मिले दोनों बैठे गुरु दाता है।
गुरु शुक्र उस टेवे में जैसे, कहीं भी इस के बैठे हों ।
फल वैसे ही घर दूजे के, उस टेवे में आते है ।

पक्का घर नम्बर 3

घर तीसरा है पक्का मंगल, *धन दौलत के जाने का ।*
रवेश ओ अ़क़ारब भाई अपने *या चोरी चलाकी का ।*
असर नज़र और जंगो जदल सब, *महल भी उनके लेते है ।*
बढ़ना बढ़ाना फ़र्ज इत्यादि, *न्याय मीठा भी गिनते है ।*
उठती जवानी या खून जिगर का, तना दरख्त आकाश भी है ।
खुशी गमी और साले भनोइये, *सामान उनका मकान भी है ।*
शेर दरिंदे इस घर रहते, *त्रिलोकी भी होता है ।*
ताक़त बच्चा पैदा करने, *सुसराल इतना अकेला है ।*
इस घर का जो रंग है खूनी, *असर होता भी खूनी है ।*
ग्रह जो इस घर बदी पे होवे, *कहलाता वह कष्टी है ।*
स्त्री ग्रह जब तीजे आवें, *औरत भी वाँ मर्द कहलावें ।*
शुक्र बैल और चन्द्रमा साधु, *मरद बढ़ेगे बढ़ेगी आयु ।*
मंगल बद–मंगलीक न होगा, *शिवजी हो के दया करेगा ।*
स्त्रियों की भी पूजा होगी, *तीन काल वहां उन्नति होगी ।*
होगी तो कुल उमदा होगी, *गर न होगी–चोरी न होगी ।*

पक्का घर नम्बर 4

घर चौथे पेट माता चन्द्रमा, *ठण्डी रोशनी माना है ।*
चार तरफ का पानी दुनिया, *दूध समुन्द्र दरिया है ।*
दिल–सफर–माता–धरती घोड़ा, *दिशा उत्तर, पूर्व है ।*
चरिन्दे चावल दूध पिलाते, *बज़ाज़ी मुर्गे – आबी है ।*
धन दौलत या वक्ते जवानी, *रंग गिना है चाँदी का ।*
अनविध मोती–घर माता का, *रस होता है शांति का ।*
झुकाव तबीयत फर्श मकाना, *संबंध गिनते है मरदों का ।*
चक्र, शंख पर्वत हो पूरी, *निशान भी लेते है जौ का ।*
राहु केतु घर चौथे में, *पाप से हरदम डरते है ।*
तारें चाहे न तारें मर्ज़ी, *कसम पाप की करते है ।*
ग्रह चौथे के रात क्के जागे, *या जागे वह मुसीबत में ।*
मदद कोई न हो जब करता, *आ तारे वह बुढ़ापे में ।*
एक अकेला ग्रह ख़ाह कोई, *घर चौथे जब बैठा हो ।*
फल बुरा न वह कभी देवे, *चाहे चन्द्रमा का दुश्मन हो ।*
घर चौथा जब खुद हो ख़ाली, *आखिर उम्र तक उत्तम हो ।*
चन्द्रमा का फल घर ही देवे, चाहे चन्द्रमा खुद नष्टी हो ।
घर चौथे में ग्रह जो आवे, आखीर चन्द्रमा वह होता है ।
असर मगर उस घर में जावे, शनि जहां के बैठा हो ।
गुरु रवि और चन्द्रमा टेवे, कहीं भी इसके बैटे हो ।
फल वैसे ही घर चौथे के, उस टेवे में होते है ।

पक्का घर नम्बर 5

घर 5वां है ज्ञान गुरु का, *तेज तपस्या होता है ।*
हवा रोशनी लड़के पोते, *वक्त आइन्दा होता है।*
औलाद जन्म ता उमर बुढ़ापा, *महल बच्चत औलाद के है ।*
पाँचों ही इन्दरी हाज़मा उसका, *गरमी शोहरत नेकी है ।*
लिखत गुफ़्त रफ़्तार हो *सायाइलम सबर ईमान भी है ।*
पैवन्दी पौदे जो गिने तो, *खाली जगह दर उंगली है ।*
रोशनी पक्की घर पहले की, *हवा अच्छी घर 5 वें है ।*
दोनों पक्की इस जा इकट्ठी, *दीवार मशरिकी कुण्डली है ।*
उमर औलाद तो सेहत अपनी, *घर 5 वें से लेते है ।*
घर 3–9– या 4 हों मंदे, *असर बुरा 5 गिनते है ।*
रवि गुरु दोनों से कोई, *घर 10 वें जा बैठा हो ।*
5वें घर चाहे दोस्त इसका, *पक्की दुश्मन होता हो ।*
गुरु रवि और राहु केतु, *कहीं भी इसके बैठे हो ।*
फल वैसे ही घर 5 वें के, *उस टेवे में होते है ।*

पक्का घर नम्बर 6

घर 6 वें पाताल में बैठे, *केतु बुध इकट्ठे है ।*
दुश्मन से वो बाहम होते, *इस जा वो नहीं लड़ते है ।*
केतु लड़का तो बुध है लड़की, *वम बुध कहते केतु की साथी है।*
रिशतेदार हों माता पिता के, *अंकल सफर खुद कम ही है ।*
बुध सेवा नहीं शुक्र करता, *केतु भी धोका देता है ।*

अकेले अकेले ही दोनों उमदा, मिल कर चेहरा बनता है ।
आकार चेहरे का गर बुध से हो, खूबसूरत हो केतु से ।
नौ ही ग्रह पाताल कद कदामत, या हथेली उंगली की ।
खटाई व गोबर या हो सच्ची नेकी, यह खुद असलियत है केतु की ।
नाना नानी या मामू इसके, हमदर्दी फोकी बुध की है ।
इधर–उधर काम का होवे, .ज़ाइका पट्ठे सब्जी है ।
बरताब होवे या होवे साहकारा, माथा चेहरा होता है ।
तरफ उत्तर या हो फोका पानी, फूल सुगन्ध्या होती है ।
आकार परिन्दे हाथ के नाखुन, सुख औलाद का होता है।
भईआ यह अपार हे दुनिया, नक्कारा स्वयं भी होता है ।
केतु की चीज़ो पे केतु हो मन्दा, पर मन्दा न हो दूसरों पर ।
बुध भी अगर साथी होवे, खुद मंदा बुरा दूसरों पर ।
उमर मंदी इस ग्रह की होवे, घर 6 वें आ बैठे जो ।
लाख उपाय करो न टलता, ग्रह फल लिखा जिसको हो ।
फल औलाद का शुक्र रवि, पर रवि न दौलत हो ।
गुरु सूरज से कोई दूजे, शुक्र का फल 12 हो ।
बुध केतू और शुक्र टेवे, कहीं भी इस के बैठे हो ।
फल वैसे ही घर 6 वें के, इस टेवे में होते है ।
* इस घर में सिर्फ सूर्य या वृहस्पति राशि फल के है ।

पक्का घर नम्बर 7

घर 7 वां है पक्का शुक्र, घूमता बुध ऊपर का है ।
दोनों इकट्ठे चक्की चलती, निचला शुक्र माना है ।
बुध 7वें का चक्र घुमायें, मिट्ठी शुक्र होती है ।
दोनों घुमावे कीली लोहे की, घर 8 वें जो होती है ।
शुक्र बुध जब दोनों इकट्ठे, शनि भी अच्छा होता है ।
अन्न दौलत की कभी न कोई, घी मिट्ठी से निकलता है ।
तरफ दक्षिण, पश्चिम पाये, औरत शान बैठती है ।
हालात हथेली .ज़र्रे मिट्ठी के, होती शादी उन्नति है ।
फल सफेदी तथा पलस्तर, घर लड़कियों के लेते है ।
जैसा शुक्र हो वैसे ही सब फल, निचले पत्थर से होते है ।
बिना फूल बुध तो हो पिस्तान लड़की,
जुवान नेक होवे तो शुभ की
पैदाइश हो अण्डों से, काम शक्ति हो वाह की ..... ।
इस तरह अ़कल अपने, दौलत सभा की ।
घर पहले के खाली होते, 7 वां फौरन सोया ।
दिन उसी ही सूर्य निकले, 8 वां जब दूजे होया ।
शुक्र बुध उस टेवे जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 7 वें के, उस टेवे में होते है ।

पक्का घर नम्बर 8

घर 8 वें है मौत निमानी, मंगल बद ही लेते है ।
ग्रह नर में से कोई हो 8 वें, मौत टली ही गिनते है ।
अगला हिस्सा घर पहला तो, 8 वां पीठ भी होती है ।
बद शुतर की पीठ हो अपनी, नीची ऊंची होती है ।
तरफ दक्षिण कच्चा कोयला, .ज़न मुरीदी होती है ।
कच्ची चरबी खून हो मन्दा, पित्त मेदे की होती है ।
शनि मंगल का झगड़ा होता, केतु चीज़े मन्दी हों ।
छत मकान से नीचे उतरे, चारपाई भी गन्दी हों ।
घर 8वां जब बदी पे आवे; 2, 6 भी आ मिलते है ।
12 तो है दूर ही बैठा, फैसला इस का लेते है ।
मंगल बद है सबसे मन्दा, मन्दा जादू मन्तर है ।
एक अकेला हर दम अच्छा, शनि मंगल या चन्द्र है ।
घर 11 है दुनिया का अन्दर, 8 को बाहर गिनते है ।
*रीढ़ की हड्डी है खलिस केतु, बाकी पीठ है मंगल बद ।
घर 11 की चीज जो आवे, छत गिरी ही लेते है ।
महीना का पानी या दूधहो छतपर, बुध चाँदी से बांधते है ।
आतिशी शीशा जब कभी चमके, खतम कहानी गिनते है ।
शनि मंगल और चन्द्र टेवे, कहीं भी इसके बैठे हो ।
फल वैसे ही घर 8वें के, उस टेवे में होते है ।
* जैसे कि शनि 11 वें हो तो जब शनि की संबंध चीज़ इस के घर नई आवे ।

* बुध का मंगल बद या लड़की के लाल चमकीले कपड़े ।

पक्का घर नम्बर 9

घर 9 वां है गुरु बजुर्गी, जड़ बुनियाद ग्रह नौ की ।
मकान जद्दी जो होवें अपना, पर उपकार बजुर्गों की ।
उमर दादा या बाप हो अपनी, ज़माना है खेल खिलाड़ी का ।
घर कच्चा वा पक्का होवे, हाल है दुनिया ग़ैबी का ।
मात पिता की हालत अपनी, आराम–हराम की रोज़ी है ।
करम धरम या पिछला जन्म हो, मेंढक खुश्क पानी है ।
दरियाओं से गंगा हो तो, पेट माता का होता है ।
.खत उंगली पर लेटे खड़े हों, मणि बीरज भी होता है ।
इन्सान का धड़ चौपाया, हवा परों से उड़ता है ।
एक जहां से दूजे चलता, करम धरम से फलता है ।
जड़ नथनों की सांस दुरंगी, किस्मत का आग़ाज़ भी है ।
घर दूजे पे बारिश्श करता, समुन्द्र घिरा ब्रह्मांड भी है ।
तीजे घर का असर हो पहले, बांद गिना घर 5 का है ।
पानी मिट्टी के ऊपर उड़ता, असर पक्का घर 9 का है ।
9 वें घर के ग्रह कुल ही का, असर ख़ाहिश सब मन्दा है ।
रुह बुत के झगड़े में लेते, असल पैमाइश अन्दर है ।
मंगल बद या शुक्र बुध हो, मन्दे इस घर होते है ।
शनि केतु या तर ग्रह उमदा, चन्द्र 9 गिना लेते है ।
घर 9 वां है केन्द्र कुण्डली, धरती का जो महवर है ।
जिसम में रुह की हरकत गिनते, हाकम सब ही ग्रह का है ।
गुरु अकेला उस टेवे में, कहीं भी उसके बैठा हो ।
फल वैसा ही घर 9 वें का, उस टेवे में होता है ।

पक्का घर नम्बर 1०

घर 1०वां है शनि का अपना, खुद विरासत लाता है ।
सुख पिता को या उसे होवे, वृष मकान 3 रहता है ।
चार तरफ की चीज़े दुनिया, चाला की मक्कारी हो ।
सामान खुराक या वक्त हो शादी, तरफ ग़रब की होती है ।
ईंट पत्थर और काठी इसकी, कांटे बाड़ भी होती है ।
काली खांसी उमर पिता की, .ज़हर दरिंदे होती है ।
त्रिकोण बड़ी चौकोर हो लम्बी, नमक स्याह और तेल भी है ।
आम सलाह बरताओ दुनिया, न.ज़र ग्रह की होती है ।
लोहा लक्कड़ या कीड़े मगरमच्छ, ताकत बिज़ली होती है ।
न.ज़र उमर या झपट कौए की, दहशत साँप की होती है ।
बाल जिसम के काले भूरे, खुशी ग़मी भी होती है ।
साँप का घर और आँखेकी पुतली, रंग स्याह भी होते है ।
गाय भैंस हो लोहे रंगी, दुम .ज़हरीले होते है ।
अंधेरा या .खतम रोशनी, आर द्वार इकट्ठा हो ।
सिफ़र जमा कुल एक की दुनिया, किस्मत सब की 1०वें हो ।
घर 1० वें में तीन ग्रह तो, चलते शनि से है ।
राहु केतु और बुध तीसरा, तीनों ही शक्की है ।
ग्रह पापी उस टेवे में जैसे, कहीं भी इसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 1० वें के, इस टेवे में होते है ।

पक्का घर नम्बर 11

घर 11 का शनि है मालिक, पर दरबार गुरु का है ।
घड़ा भरा पानी है बेशक, बरताबा तो गुरु ही है ।
.फ़कीरकी झोलीकी किस्मत गिनते, जन्म–वक्त खुद आमद है ।
शनि गुरु का हलफ उठावे, फैसला करता बाद में है ।
ऊरध श्रेष्ठ धन रेखा तो, किसमत का मैदान भी है ।
लालच दुनिया मकान खरीदे, उमर तादाद औलाद भी है ।
छिलका पोस्त शान और शौकत, हाथ की किस्में पालना है ।
दो मुंह के यह साँप का घर तो, खुद–रौ बूटा बेल भी है ।
दीवार मग़रबी पहला हाकम, मिसलें राहु केतु है ।
दूध माता का याद है कर के, फैसला करता शनि भी है।
अहवाल है नाखुन रंग भी उनके, एक अकेला दो भी है ।
खुद बेड़ी को पापी चला दें, डूब डोबाते वह नहीं है ।
धन दौलत है 11 आता, घर तीजे से जाता है ।

मंगल कुण्डली कहीं हो बैठा, फैसला इस का होता है ।
बुध गुरु नहीं इस घर अच्छे, या कि चन्द्र बैठा हो ।
उमर पहली है शक्की गिनते, जब घर तीजा मंदा हो ।
किस्मत का ग्रह उस घर तीजे, मदद न 5 से होती है ।
घर 3 खाली 11 सोवे, किस्मत शनि पे होती है ।
ग्रह मुशतरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में ।
फल 2–11 अपनो अपना, धर्म मंदिर गुरुद्वारा में ।
घर 11 में ग्रह जो आवे, तासीर शनि में वह होता है ।
असर मगर उस घर में जावे, गुरु जहां टेवे बैठा हों ।
शनि गुरु उस टेवे में जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 11 के, उस टेवे में होते है ।

पक्का घर नम्बर 12

घर 12 है सुख गृहस्थी, गुरु राहु दो बैठे है ।
मछली ढूंडे पानी बादल का, बचन सराफ इकट्ठे है ।
धन की थैली 7 वें होवे, मर्द बोलते 6 वें है ।
घर 8 वें से उमर मिले तो, बने महल घर दूसरे में ।
गज साधु हों मवेशी पाले, आबाद वीराना मिलते है ।
शोहरत दुनिया हड्डी उसकी, खून नसल का गिनते है ।
निशान पेशानी उंगलियां, महल पड़ौसी होता है ।
खर्चा जाती दिमाग की हरकत, सुसराल का क़र्ज़ा होता है ।
मर्द औरत का उमर संबंध, हाथ झुकाओ दोस्त है ।
पाँव के उसके नाखुन लेते, होती हथेली वृहस्पति है ।
तरफ जनूबी पूर्व हो तो, पालना बेवा होता है ।
एक खत्म से दूजा शुरु हो, 12 जहां 2 होता है ।
ग्रह 12 न गर कोई बोले, घर 2 में वह बोलता है ।
फल घर 12–2 का इकट्ठा, साधु समाधि होता है ।
खुद इन्सान की पेश न जावे, हुकम विधाता होता है ।
सुख दौलत और साँस आखिरी, उमर का फैसला होता है ।
शनि गुरु और राहु टेवे, कहीं भी उसके बैठे हों ।
फल वैसे ही घर 12 के, इस टेवें में होते है ।

ग्रह दृष्टि

एक अकेले का दुश्मन न कोई, न ही दोस्ती होती है ।
रियाया बिना न राजा कोई, न ही वज़ीरी होती है ।
1 से 6 तक तरफ जो पहली, हिस्सा दाँयां कहलाती है ।
बाद के घर 7 वें से 12, तरफ बांई हो जाती है ।
तरफ पहली न ग्रह हो कोई, बाद के ग्रह सोये होते है ।
घर जब बाद का खाली होये, तरफ सोई पहली गिनते है ।
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जागता घर वह लेते है ।
जागे घर न ही असर ग्रह का, जब तलक खाली होते है ।
ऊंच दृष्टि कितनी ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर ।
घर दृष्टि का जब तक खाली, असर जावे न दूजे घर ।
घर 9–11 गुरु से जागे, चन्द्र से 8, 4, 2 घर ।
रवि जगाता घर 5 वां तो, शुक्र जगावे 7 वां घर ।
शनि से दसवें राहु 6 को, बुध जगाता है तीसरा घर ।
मंगल से घर पहला जागे, केतु जगावे 12 वां घर ।
ग्रह दोस्त नहीं बाहम लड़ते, झगड़ा कराते दूसरे है ।
शनि रवि दो इकट्ठे बैठे, फटते ग्रह स्त्री से है ।
ग्रह संबंध बुरा नहीं करते, बन्द मुट्ठी के ख़ानों में ।
फल 2–12 अपना अपना, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा मैं ।
स्त्री दृष्टि से जो कोई देखे, मरते औलाद से हों।
इस जहर को घर 9 वें से, राहु केतु हटाते है ।
अगर मदद न उन की लेवें, मंगल केतू मरते है ।
एक दीवार के घर 2 साथी, ग्रह मुशतरका होते है ।
शत्रु ग्रह तो कभी न मिलते, दोस्त मिले ही गिनते है ।
बजह किसी दीवार फटे गर, दुगनी ज़हर हो जाती है ।
अकल बुरी किस्मत हो मन्दी, मौत खड़ी हो जाती है ।
घर 10 वें में लड़ते दुश्मन, ग्रह 9 टेवा अंधा हो ।
सूर्य 4 शनि हो 7 वें, नोहराता आधा अंधा हो ।
राहु केतु घर 4थे 10 वें, या चन्द्र भी साथी हो ।

शनि या गुरु साथी, टेवा वह कुल धर्मी हो ।
घर अपने से 5वें दोस्त, 7 वें उलटे होते हैं ।
8 वें घर पर टक्कर खाते, बुनियाद 9वें पर होती है ।
तीसरे घर के जुदा जुदा तो, बुध से वह आ मिलते है ।
घर 10 पर आपसी दुश्मनी, घूमते फिरते चक्कर है ।
नर ग्रह बोलते घर में, स्त्री बोलते ताक़ में है ।
बुध है बोलता 3, 6 में तो, पापी नहीं बोलते 2 में है ।
ग्रह शत्रु में गुरु जो आवे, वैर खतम हो जाता है ।
माता चन्द्र जब साथी होवे, दोस्ती पैदा करता है ।
घर 5 वां औलाद का गिनते, 11 होता घर धर्मी है ।
घर 8 वें जो मौत निमानी, साथ लगी 9 बजुर्गी है ।
घर पहले की उमर सौ सालह, 9वें 3, दस बारह है ।
85 उमर 7 चौथे की लेते, 80 होती घर 6 की है ।
पौन सदी या साल 75, गुरु मन्दिर घर 2 की है ।
घर और ग्रह की उमर जुदा पर, गुजरती दो की इकट्ठी है।
गुरु जगत की उमर 75, बुध केतू 80 होती है ।
शुक्र चन्द्र की उमर 85, शनि मंगल राहु 90 है ।
स्त्री ग्रह जव मिले नरों से, उमर 96 होती है ।
रवि मालिक है पूरी सदी का, उमर लम्बी उसकी होती है ।
ग्रहण लगे जब रवि चन्द्र को, साल तीन कम होती है ।

वृहस्पति-जगत् गुरु

पापी ग्रह या बुध संबंध , पिघला सोना गुरु होता है ।
उपाय ग्रह साथी का होवे, गुरु राशि फल होता है ।
पापी मन्दे या केतु मंदा, गुरु भी मंदा होता है ।
ग्रहण के वक्त हवा बरफानी, असर मंदा हो जाता है ।
नष्ट मंगल आकाश बेल तो, बुरा शुक्र मन्दा करता है ।
शत्रु ग्रह के जब वह अन्दर, वैर नष्ट कर देता है ।
हाथ रुहानी कद पेशानी, सांस चोटी गुरु गिनते है ।
नाक सिरा अगला इसका, फैसलाकुन हुआ करते है ।
1 ता 5 या 12 बैठा, मदद शनि रवि करता है ।
घर 6 ता 11 में बैठा, सिर्फ शनि को तारता है ।
गुरु अकेला सब को तारे, मदद न जब कोई करता हो ।
पर केतु को वह मरवावे, खुद ही जब वह मरता हो ।

वृहस्पति खाना नं० 1

कीमियागर-पेशानी-पीले रंग, शेर नर चलता साधु ।
घर पहला है तख़्त हज़ारी, ग्रह फल राजा कुण्डली का ।
गुरु मगर न इस को चाहवे, झगड़ा मनुष है माया का ।
गुरु अगर घर पहले ही आवे, विद्या सोना ले आता है ।
लिखना पढ़ना अगर न जाने, भेस फकीरी पाता है ।
सोना भी जो सब से उमदा, दया धर्म भी उत्तम हो ।
सेहत दौलत रिश्तेदारा, नाग बली का साया हो ।
उमर 16 से घर को तारे, कुल संसार बुढ़ापे में ।
गुरु हवा दोनों है चलते, फिरते कुल ज़माना में ।
उमर 27 पिता से बिछड़े, खुद कमाई करता हों ।
शनि चक्कर से 7 वें आवे, पिता न उस का बैठा हो ।
उमर मामों की छोटी होवे, पर छोटी न अपनी हो ।
घर 7 वां गर खाली होवे,टाँग तख्त की टूटी हो ।
माता इसकी शिव जी होवे, पर औरत से डरती हो ।
बेटे को तो तारती जावे, खुद इकावन मरती हो ।
** टेवे वाले की 50 साला उमर पर*
केतु लड़का आसन उमदा, बुध निकम्मा लेते है ।
घर 5 वें गर शनि हो बैटा, कोठे भी उसे मंदे है ।
चक्कर दूजा हो जब उसका, उमर निनावन (99) गिनते है ।
गुरु जगत में प्रकट होगा, सुख दुनिया का लेते है ।

शादी के दिन से बुलन्द होगा मगर पिता के साया का सिर पर साथ न होगा । अगर होगा इस के साथ मददगार और नेक न होगा । फिर भी होगा तो जुदा सर पर पड़ता होगा । अक्सर उमर कर हर आठवां साल तरक्की का न होगा । अगर होगा तो बचन या आर्शीवाद पूरा होगा मगर शराप या बद-दुआ से खुद अपना आप तबाह होगा ।

वृहस्पति खाना नम्बर 2 (पक्का घर)

गाय, स्थान, महमान नवाज़ी, पूजा धन माया चने की दाल

गुरु दूजे स्थान गऊ का, आसन ब्रह्मा – माया है ।
दुश्मन ग्रह घर 6 तथा 11, राजा वली चाहे कोई हो ।
वृहस्पति तब भी गुरु ही होगा, चाहे वह औरत का ही हो ।
अगर गुरु न होवे ऐसा, वही गोबर का पुतला हो ।
ज़हर बिच्छू से मर्द व औरत, कुल अपनी के मारता हो ।

सुलह कुल और बख्शीश करे तो नेकों से वह नेकी मे बढ़े वरना
कर भला तो होगा भला । सोने की तार की तरह बढ़ता होगा । वरना
हाथ पुराने मिट्टी – मलते रहने की तरह हो जाये ।
साधु अपनी धूनी पर होगा मगर गृहस्थी व कुटिया की शर्त न होगी ।

ए- शुक्र बुध

इस का मामूली ताँबे का पैसा उसे सोने का काम देगा । सौ चूहे खाके बिल्ली हज को गई । गुरु घंटाल होगा । ब्रह्मा जी व लक्ष्मी जी अपने सिंहासन पर की तरह किस्मत का अच्छा हाल होगा । अपनी मौत का उसे मरने से पहले पता लग जायेगा । मिट्टी के कामों से सोना मगर सोने के कामों से बुरी हालत प्राप्त होगी ।

वृहस्पति ख़ाना नम्बर 3

दुर्गा पूजा – विद्या

त्रैलोकी का मालिक होगा, गुरु जो तीजे बैठा हो ।
पग हो तो 18 से 19, वरना 3 ही काना हो ।
दुर्गा पूजन भेद गिना है, 3–18 होने का ।
नेक होवे तो सब से उमदा, वरना बुध हो 3–9 का ।

मुनासिफ मिज़ाज दुर्गा जी शेर की सवारी का साथ होगा । जिसे तारे शेर की तरह मारी हुई मार (शिकार) दे जावे । मगर जिसे बिगाड़ने पे आये, इस का बिस्तरा तक भी जला दे । तारीफ और खुशामद से इसकी शक्ति नष्ट और बर्बाद होगी ।

वृहस्पति खाना नम्बर 4 (ऊंच फल का)

वर्षा **सोना**

वृहस्पति चौथे घर हुआ, समुद्र दूध भरा ।
ग्रह चारों ही नेक हों, पानी, मिट्टी, आग, हवा
(चन्द्र) (शुक्र) (मंगल) (वृहस्पति)
ऊंच वृहस्पति जब हुआ, बढ़ता चन्द्र हो ।
बुध अकेला छोड़ के, फल सब का उमदा हो ।
10 वें बुध गर आ हुआ, खोटी हवा चलने लगी ।
दुनिया को क्या तारे जब खुद बेड़ी अपनी डूबती ।

(32परियां) और राजा बिक्रमाजीत के साये का मालिक होगा । उस के साया में लाटरी, सोने की कानों की दमक चमक और धन दौलत का दरिया बहता होगा ।

माँ पर घी, पिता पर घोड़ा – बहुत नहीं तो थौड़ा थौड़ा ज़रुर होगा ।

वृहस्पति खाना नं० 5 (पक्का घर)

नाक – केसर – असर है ग्रह फल का

गुरु है 5वें में मालिक, पत्थर में वह मोती है ।
छोटी नैया चाहे बेशक होवे, नरक कुटुंभी धोती है ।
दुश्मन 2–9–11 बैठे, डूबती बेड़ी होती है ।
बिन गुरु कोई लड़का जन्मे, शेरों कह जाड़ी होती है ।
जब तलक न हो कोई ऐसा, नींद भरी शेर होती है ।
लड़के पोते बेशक बैठे, किस्मत सोई होती है ।

वर्ष फल के हिसाब या किसी तरह भी अब अगर शनि खाना नं० 9 में आ जाये तो वृहस्पति की मीठी हवा में शनि का साँप सो जायेगा । मगर वह मुर्दा नहीं हो जायेगा और शनि के दिन की औलाद के जन्म पर जाग कर बुनियादी उमदा 600 साला और उत्तम चीज़ों से फायदा न होगा।

वृहस्पति ख़ाना नम्बर 6 (राशि फल)

गरुड़ (परिंदा) मंदे वक्त केतु का उपाय मदद करे ।

6 वां घर पाताल का, गुरु छिपावे मुंह ।
मदद करे न बाप की, बेटा, बेटी न नूह ।
हवा भली उस शख्स की, मान सरोवर हो ।
कुल माता बुध भी बढ़े, केतु उमदा हो ।
चूहे से केतु बने, बुध गरुड़ ही हो ।
रोटी खाये वह मुफ्त की, ऐशी पट्ठा हो ।

साधु अपनी कुटिया में होगा। समाधि और धूनी की शर्त न होगी। या पिता छोटी उमर में चल बसने वाला होगा। मगर टर्राने वाला मेंढक न
फिर भी अगर होगा धन की वर्षा का मालिक या सोने की कानों मे रहने वाला होगा । आखिर होगा तो खुशहाल होगा

पर कभी कंगाल न होगा ।

वृहस्पति खाना नं० 7 (राशि फल का)

किताबें, दमा, मेंढक, आवारा साधु, मसनूई वृहस्पति (सूर्य शुक्र) खाली हवाई वृहस्पति । मन्दे असर के वक्त चन्द्रमा का उपाय मददगार होगा ।

7 वें वृहस्पति सब को तारे, खुद तकड़ी की बोदी हो ।
धर्म ईमान में अपने पक्का, पर भाइयों से दुखिया हो ।
सबका ही वह देवन हारा, चने का छिलका खुद हो गुज़ारा ।
खुद किस्मत का अपनी मारा, चन्द्र पूजन हो निस्तारा ।
बुध शनि घर 2–6–11, या कि 12 बैठा हो ।
ऊर्ध रेखा का डाकू, लड़के को वह तरसता हो ।
45 जब उमर हुई तो, लड़का भी आ बैठा हो ।
पिछले धोने सब कुछ धो कर, सुख सागर का मालिक हो ।
लोग गये जो मेला बैसाखी, लालाजी जकड़े घर की राखी ।

भाईयों से तंग होकर कई दफा कहता होगा कि ''भाई जी! तुसाँ जमदे क्यों न मर गये ..... धान फाड़ने गये । स्त्री धन से बरकत होगी । अगर अपनी कमाई होगी तो सब मिट्टी के बराबर होगी । आवारा साधु का साथ शुभ न होगा । अगर होगा तो मुसीबत व खर्चा बड़ा करेगा । ब्राह्मण की बोदी मींह मंगदी!

(चन्द्र पूजन शुभ होगा)

वृहस्पति नं० 7 की मंदी हालत का प्रभाव । यदि घर में रत्ति (सोना तोलने वाली) होगी । जिन को कपड़े में रखना धन दौलत के लिए शुभ होगा ।

वृहस्पति खाना नम्बर 8

अफवाह - नक्कारा . - फकीर का यज्ञ दान

घर 8 वां जो खोपड़ी सबकी, साधु का वह प्याला है ।
शनि मंगल सब को ही जला दें, गुरु का फल पान निराला है ।
गुरु के घर जब उत्तम होवें, सोने का भण्डारा है ।
शनि मंगल जब चौथे बैठे, दुखिया भस्म गुज़ारा है ।

लम्बी उमर का बजुर्गों ने ही पट्टा लिखवाया हुआ होगा । हर दम बढ़े परिवार और जागती हुई किस्मत का हाल होगा । सिर की खोपड़ी को सर से उतार कर हाथ में लेकर चलने की हिम्मत का वह मालिक होगा । सब कुछ जला कर जंगल में एक पत्थर पर भी बिठा दें तो भी उस वीराना में सोने की खानें वह ढूंढ लेगा और जले जंगल में मीठा मंगल और हरियाली कर लेगा । मगर फकीरी का साथ न देगा ।

वृहस्पति खाना नम्बर 9 (पक्का घर)

घर का और ग्रह फल का - किस्मत को जगाने वाला-जद्दी मकान-मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा।

वृहस्पति हो जब 9–12 में, घर उस के गंगा[1] आती है ।
किस्मत उमदा पत्तन सबका, नाव हवा में चलती है ।
जूं जूं पानी इसका बर्ते, होता ब्रह्म ज्ञानी है ।
नौ निधि का मालिक गिनते, होती 12 सिद्धि है ।

प्राण जाये पर वचन न जाये । वचन से अपना धर्म भी पाये और धर्म से उसके धन में हार न आये । वरना मन्दे वक्त से वह पहले ही चल जाये। सर्राफ या जौहरी कमाल का होवे ।

वृहस्पति खाना नं० 10 (नीच)

गुरुद्वारा 10 वें हुआ, स्वर्ग लोक के काम ।
लालच में दोनों गये, माया मिली न राम ।
घर शनि के आन कर, गुरु चढ़ावे स्वास ।
ग्रह न कोई चल सके, सिर्फ शनि का आस ।
कीड़ा गन्दा अब हुआ, भरे भसम भण्डार ।
लाज गुरु की है शनि, चाहे मन्दा कुल संसार ।
9 चौथे घर 5 वें, शनि रवि या बुध ।
शुक्र राहु हों मरे, केतु पाये न सुध ।
10 वें घर का नीच वृहस्पति, 4 रवि से चलता है ।
चाहे से है वह सोना बनता, 4 शनि से गलता है ।
गुरु रवि दोनों से कोई, घर 10वें जब बैठा हो ।
5वें घर चाहे दोस्त उनका, पक्का दुश्मन होता हो ।

निर्धन पिता यतीम बच्चे को निर्धन ही छोड़ जावे । उसकी जिन्दगी में बच्चे ने स्वपन में महल देखे मगर जागने

पर उसी टूटी हुई चारपाई और तवेला ख़रा में लेटे पाया । न शुरु देखा न आखिर देखा, जो खूब देखा तो अफसोस देखा और लिपटी हुई आरजू को कफन में ही ले जाते देखा 27 साला उमर से 36 तक बहुत मन्दा मगर 28 के बाद (जबकि भाई की मदद् या इसका साथ हो) गणेश जी या सब के पूजने की जगह बनते देखा । बहरहाल मर मर कर बढ़िया राग गावे । लोग कहें उसे ब्याह–उस ने गरीब का तरस खा कर रोटी दी तो पुलिस के डंडे की मार इसका इवज़ मिला । किसी का तो पेशाब भी तेल की तरह रोशनी देवे मगर उसका तो शुद्ध तेल भी पेशाब से कम कीमत होवे ।

* वास्ते खुद अपनी व उमर शुक्र की, जब नर
ग्रह का साथ न हो । वरना उमर लम्बी होगी ।

वृहस्पति खाना नम्बर 11 (पक्का घर)

ग्रह फल का–किस्मत को जगाने वाला

गुरु शनि की 1 1 राशि, बुध से दोनों चलते है ।
बुध दबाया या हो मंदा, दोनों निष्फल जाते है ।

उमदा शनि मंगल

मक्खी थी तो शहद भी था। मक्खी उड़ी तो शहद न पाया। न ही मुर्ग (वृहस्पति) के बाद मुर्गी के सोने के अंडे का पता चला। और आखिर पर अपने हाथों से ही अपने मुंह के लिए रोटी बनानी पडी। पिता की हाज़िरी में साँप ने भी सजदा किया । सबका ही साया बढ़ा। मगर जैसे कि वृहस्पति का सांस या हवा पीछे हटा–मर्द की माया–साधु गुरु राजा या वृक्ष का साया उसके साथ ही उठ गया । मालूम हुआ और फिर वही मच्छर सताने लगा ।

वृहस्पति ख़ाना नम्बर 12 (घर का)

पीपल का हरा वृक्ष –हवा–आम दुनिया–साँस–पीतल (धातु)

वृहस्पति घर हो 1 2 बैठा, फल 9 का भी लेते है ।
पापी उसके घर हों बैठे, बुध शुक्र भी मरते है ।
माया को वह मूत्र समझे, होता ब्रह्म ज्ञानी है ।
राज छोड़ वैरागी होवे, होता साधु त्यागी है ।

नाक का पानी खुश्क होने के दिन से बृहस्पत कायम हुआ होगा । या नाक का पानी खुश्क रखने से मदद होगी । ज़रद तिलक कारामद होगा । माला गले में डाले रखना बृहस्पत नष्ट होने का सबूत होगा । चोटी या बोदी का कायम रहना या रखना हरदम शुभ होगा । साधु अपनी समाधि में होगा । जिसके सताने से श्राप और सेवा से आशीवाद होगी । राहु की हर दो हालत–(ऊंच राहु)–यह वृहस्पति दो जहाँ का मालिक । (नीच राहु) वृहस्पति (सिर्फ दुनियावी) गुरु की हालत का फैसला करेगी।

सूर्य तपस्वी (राजा)

रवि गुरु दो का इकट्ठा, असर मिला दो जुदा ही है ।
गुरु पिता गर रवि के होवे, रवि पिता खुद शनि का है ।
रुहु संसार का गुरु जो मालिक, दुनिया सब रवि का है ।
साँस प्राणी गुरु का होवे, ढांचा पर खुद रवि का है ।
गुरु अगर आसमान गिना तो, रास्ता रवि आसमान का है ।
हवा रोशनी मिले जो रहते, आकाश बिना बुध दो का है ।
प्रगट दुनिया बुध जो होवे, ब्रह्माण्ड बढ़ा आकाश का है ।
फटे रोशनी हवा से दुनिया, जुदा जुदा घर दो का है ।
बच्चा हुआ जब राजा दुनिया, गुरु शरण उस होता है ।
रवि बैठा जब 1–5–11, ग्रह बालिग़ सब होता है ।
घर 1–5 जब रवि हो बैठा, तलवार धारी दो होती है ।
खुद कभी न राशि फल का, ग्रह सब ही को दबाता है ।
1–5 बैठे हों राशि फल के, शत्रु भी दोस्त बनता है ।
रवि नीच न खुद कभी होवे, असर साथी मंदा होता है ।
ग्रह दोस्त अपना मदद पावे, खुद ही जब वह मरता है ।
शत्रु ग्रह गर साथी होंवे, घर बैठक उड़ जाता है ।
कुण्डली मगर घर पहले होवें, असर रवि खुद मंदा है ।
अंग शरीर या आँख हो दाई, हाथ सपाट भी होता है ।
बुध मंगल या पाप की हालत, फैसला कुल रवि होता है ।
सूर्य रोशनी मंगल किरणें, ग्रहण राहु केतू है ।
बुध आकार तो तेज गुरु का, चमक चन्द्र रवि देता है ।
रवि शनि दो इकट्ठे बैठे, झगड़ा नहीं कभी करते है ।
बजह किसी गर दोनों झगड़ें, हत्या शुक्र की करते है ।

सूर्य ख़ाना नम्बर 1 (पक्का घर–ऊँच)

दिन का वक्त–दायाँ हिस्सा या आँख

बैसाख का सूर्य घर पहले में, राज जिस्म रुह उमदा हो ।

तेज देवे हर निर्धन को वह, पर उपकार चवन्नी हो ।
मात पिता खुद उमर हो लम्बी, पर औलाद हो गिनती की ।
आँखों पर वह निश्चय करेगा, परवाह न हो सुनने की ।
सतयुग का वह आदमी होगा, किस्मत खुद बनाई हो ।
चोटों से वह हरदम डरता, बेशक बहन न भाई हो ।

शनि का 1/4 हिस्सा बुरा असर शामिल होगा । बाकी एक बचने वाले मकान की हैसियत का राजा होगा लक्ष्मी को वह खुद पैदा करेगा । मगर खुद लक्ष्मी का दिलदार न होगा । यदि चमका तो क्या चमका–अगर वह खुद अपनी रुह पे भी न चमका । यानि परोपकार और सेवा साधन के बिना अब सूर्य निष्फल होगा और कुछ न देगा । अगर देगा तो आग देगा । मगर तो फिर भी न देगा । अक्सर गन्दे इश्क और मंदे कामदेव से ज़रुर दूर होगा।

सूर्य खाना नम्बर 2

गन्दम

जेठ महीने सूर्य दूजे, माया शेर सवारी हो ।
त्रैलोकी का सुख सागर तो, उमर का इच्छा धारी हो ।
खुद चमके सब को दमका दे, घर 6वाँ भी बढ़ता हो ।
सुखी होवे तो बढ़ता जावे, बछिया से वह गलता हो ।
झगड़े औरत धन ज़मीन, बादल का अंधेरा हो ।
मंगल पहले चन्द्र 12, आलसी निंधन दुखिया हो ।

जिस तरह इस की तह में पानी बढ़े, सूर्य का रथ और भी ऊंचा हो कर चले लेकिन जिस कदर इस की तरफ़ पानी बढ़े, वह कागज़ की तरह और चौपाया का सुख जरुर साथ रहे ।
गलता जाये । या अगर वह शुक्र के झगड़ों से दूर रहे तो हरदम बढ़े । वरना आंधी के बादलों से खुद अपने लये ही अंधेरा कर ले । मगर सवारी और चौपाया का सुख जरुर साथ रहे।

सूर्य ख़ाना नम्बर 3

दिन की औलाद – भतीजे

असाढ़ महीने सूर्य तीजे, मंगल बुध बलकारी हो ।
चन्द्र से गर धरती घूमे, फिर भी तख्त हज़ारी हो ।
बुध मंदा तो मामूं मन्दे, मन्दा राहु केतू हो ।
पर मन्दा न इल्म ज्योतिष, या कि इल्म रियाज़ी हो ।
मंगल भी गर मंदा होवे, मंदा शुक्र कभी न हो ।
मंगल बद, मंगलीक भी होवे, फिर भी डरके चलता हो ।

अब चन्द्र का फल रवि न होगा । माता की उमर लम्बी होगी वा चन्द्र नष्ट हो–बाप दादा गरीब हों, तो बेशक पड़ौसी मरे तो मुमकिन मगर वह खुद अपनी आखिरी उमर में और आखिरी वक्त में निर्धन न होगा । और अगर होगा तो खुद अपनी बद् चलनी या मंदे कामों से बर्बाद होगा । मगर फिर भी गरदिशे ज़माना या अक्ल के धोके और फ़रेब से वह कभी नहीं बचेगा ।

सूर्य ख़ाना नम्बर 4

दाईं आख का डेला–बूआ का लड़का भाई

सावन सूर्य चौथे गिनते, मेघ पानी चन्द्र का घर ।
पानी बरसे पर्वत जंगल, बुध शनि दोनों के घर ।
रवि मगर खुद जला जलाया, मदद चन्द्र की पाता है ।
शनि ने जो हों पत्थर फूंके, लाल रवि कर देता है ।
मंगल राजा घर दसवें का, शनि नज़र का मालिक है ।
मंगल खुद अब आँख दे अपनी, रवि को शक्तिशाली करता है ।
नहोराता या आधा अंधा, टेवा ऐसा होता है ।

खोज का मालिक होगा । समुद्र की सीप में मोती पैदा करेगा और अगर सीप में कीड़ा भी पड़ जाये तो भी क़ीमत दे कर जायेगा । रेशम का कीड़ा अगर स्वयं बरबाद भी हो जाये तो फिर भी बाकी रेशम ही छोड़ कर जायेगा । यानि अगर खुद बुलन्द न हो तो अपने पैरोपकार या पीछे रह जाने वालों को तो ज़रुर बुलन्द ही करके जायेगा ।

सूर्य ख़ाना नम्बर 5 (घर का व ग्रह फल का)

किस्मत को जमाने वाला–इकलौता लड़का–
लाल मुंह का बन्दर – पोता

भादों सूर्य 5 वें घर का, तेज तपिश का पक्का हो ।
राजा पर–उपकारी होवे, साधु अल्प न आयु हो ।
भेड़िया बकरी अग्नि पानी, सब को इक जा रखता हो ।
लड़के इसके शेर हों अपने, और बुढ़ापा उमदा हो ।
गुरु अगर हो 10 वें बैठा, औरत इसकी मरती हो ।
शनि अगर घर तीजे होवे, औलादें भी दुखिया हो ।
ग्रह पाँचों से अपने घर का, या पापी ग्रह 9 वें जो ।

सूर्य की वह होंगे प्रजा, हंस हुआ भी तारता हो ।

सूर्य का खुद जाती फल अब कभी मंदा न होगा । शेर की गाड़ी में शेर-बबर जुता हुआ होगा । अगर राजा न तारे तो साधु ही तार देगा । मगर कफन में लिपटी हुई किसी आरज़ू का साथ न होगा । अगर राजा न हो तो साधु भी छोटी उमर का न होगा । जब होगा बकरी (बज़ = बकरी)
मरग = भेड़िया) और भेड़िये को इकट्ठा रखने की हिम्मत वाला बजुर्ग होगा । या बकरी की हैसियत से बढ़कर भेड़िया तो जरुर होगा । साफ दिल होवे तो बुढ़ापा उमदा और औलाद का सुख पूरा होगा । नहीं तो कान से पकड़ कर भेड़िया की तरह-भगाई हुई बकरी की तरह किस्मत का हाल होगा ।

सूर्य ख़ाना नम्बर 6 (राशि फल का)

गन्दगी रंग-पाँव की खराबियां-बुध का उपाय सहायक होगा । मामों की मदद के लिये बन्दर को गुड़ देने का उपाय मददगार होगा-दोहता

आसुज सूर्य 6वें घर का, अग्नि बाण ले चलता है ।
घर 12 में शनि पे मारे, शुक्र उससे मरता है ।
मंगल घर 10 वें पे मारे, लड़के भस्म बनाता है ।
घर दूजे से कोई न देखे, पिता को भी वह खाता है ।
अग्नि बाण से वही बचेगा, चन्द्र पूजन जिस की हो ।
घर अपने में जिसने रखी, घोड़ी, पानी, चाँदी हो ।

पैदाइश नानके घर होगी
पहले बनी प्राख्ध पीछे बने शरीर ।
केतु राजा हो बना, राहु बने बजीर ।।

जन्म स्थान उत्तम और संतान शुभ हालत बल्कि राजस्थान होगा। मगर पापी ग्रहों के वक्त से ग्रहण का मन्दा ज़माना जरुर होगा । या एक समय तो ज़वाल जरुर होगा । मगर औलाद होने के दिन तक फिर वही रोशन व सूर्य का अच्छे समय की निशानी होगी । मगर राज संबंध और राजा के दरवाजे से कई बार वापिस आकर फिर सवाली ज़रुर होता रहेगा।

सूर्य ख़ाना नम्बर 7 (नीच राशि फल का)

लाल गाये (सूर्य रंग की) - रुहानी नुक्स - सफेद गाये गैर मुबारक होगी मगर काली गाय मददगार होगी । चन्द्र (दूध) नष्ट करने से मदद होगी । बुध या भोड़ी गाय भी मुबारक होगी।

कार्तिक सूर्य 7 वें आया, सोने से घर मिट्टी पाया ।
जन्म वक्त थे लाख हजारी, बोलते बोलते बिहारी ।
गुरु मंगल उस घर से भागे, शुक्र रहे न चन्द्र जागे ।
पापी ग्रह भी गिने अभागे, मिली मदद बुध सब है जागे ।
न धन रहे धनाढ़ हो । न गुल रहे गुलज़ार हो ।।
सब मालो जान बर्बाद हो, गर बुध का नवां साथ हो।
घर पहले के खाल होते, सूर्य 7 में सोया वरना
दिन उस ही सूर्य निकले, 8 जब दूजे होया ।

जमीन में तांबे के चकोर चौरस टूकड़े दबाना मदद्गार होगा। पराई ममता जरुर साथ रहे। अगर औरत भी रहे तो लाजवन्ती हो करे रहे वरना वह न रहे। अगर औरत बद हो और फिर भी रहे तो शुक्र का घर (सुसराल की तरफ) ही न रहे। फिर भी रहे तो धन की जगह मिटटी रहे या बद लक्ष्मी रहे। अगर फिर भी रहे तो कोई न रहे। अगर बुध खाना नम्बर 6 में न हो या बुध निकम्मा ही हो - तो कागज पर फैलने वाली काले रंग की तरह किस्मत का हाल होगा। या वह सिर्फ बुध की मदद् से ही खुशहाल होगा।

सूर्य खाना नम्बर 8

रथ गाड़ी - पक्की व सच्ची आग

मघर महीने रवि है 8वें, बटी है गर्मी सरदी से।
घर अब मौत न होगा, जिन्दे होवेंगे मुर्दो से ।
बड़ा भाईऔर गाय सेना, लम्बी उमर निशानी हो ।
कुत्ता गर सुसराल का होवे, हर जा इस की हानि हो ।

ऐसे टेवे में शुक्र का पतंग (शुक्र नं० 1 होता है जो काग रेखा का फल देगा) मकानों को बसाने वाला और पानी भरे बादलों को बरसा लेने वाला होगा। पत्थर से आग और आग से पानी से मिट्टी या सारा

सूखा पीपल-नुकसान ज़र-तालीम खतम-मन्दे असर के वक्त दरिया नदी में ताँबे के पैसे का उपाय मददगार ।

ब्राह्मण्ड पैदा कर लेने वाला होगा। मार्ग स्थान के बिच्छू से मूर्दे जिन्दा करवा लेगा। और इस की ज़हर से जलाये हुये पत्थरों से संखिया और संखियें से हिजड़ों और नामर्दो को तपस्वी राजा और मर्दो में गिनवा लेगा बशर्ते कि दुनिया (3 कुत्ते) या चोरी का हिस्सेदार न हो ।

सूर्य खाना नम्बर 9

भूरा रीछ - सूरज ग्रहण के बाद का सूरज

पोह महीने सूरज 9 वें, उम्र लम्बी का मालिक हो ।
पर – उपकारी कुन्वा परिवार, कुल 7 अपनी तारता हो ।
खाली बरतन मोटे पीतल, बुध की ज़हर हटाते हैं ।
राज से चाहे न संबंध होवे, हकीमी शिफ़ा तो पाते हैं ।

किसी का कुछ बने न बने मगर खानदानी खून के लिये अपना सब कुछ बहा देगा मगर बदले में कुछ न मांगेगा। इस का खानदान लम्बी उमर का ठेकेदार होगा। अगर ज्यादा नहीं तो 7 पुश्त (3 उस से ऊपर और तीन उससे नीचे और खुद अपना भाग्य मध्य में) का जरुरत देखने वाला और सहायक होगा। सीमा से ज्यादा गरम या नरम होने से बरबाद होगा। **चाँदी का दान देना इस के बढ़ने का नतीजा होगा और चाँदी का दान लेना बरबादी का कारण होगा।**

सूर्य खाना नम्बर 10

भूरा न्योला — भूरी भैंस

माघ महीने सूर्य 10 वे, राहु कच्चा धूआँ हो ।
अल्प आयु या किस्मत मंदी, जब तक इन का साथी हो ।
शुक्र चौथे पिता को मारे, चन्द्र मारता 5वें है ।
मच्छर से भरपूर हो किस्मत, छटे अगर वां शनि है ।
रवि गुरु दोनों से कोई, घर 10 वें जब बैठा हो ।
5वें घर चाहे दोस्त उस का, जहरी दुश्मन होता हों ।[1]

राज दरबार में स्याही से सिफारिशी कागज़ स्याह कर के कई बार देखा । आर देखा न उसे कभी पार देखा। बल्कि नर ग्रह की मदद साथ- साथी होने के बगैर उसे दर जहाँ देखा। फिर भी देखा तो सूर्य के गुस्से की गर्मी की आग के ज़ोर से रुद रंग स्याह देखा। औलाद बरबाद देखी। किस्मत अपनी के लेखे में भी उसे न कभी खुश देखा और अमीरी स्थिति में भी न उसे मंडराते देखा। **अगर देखा तो सफेद पगड़ी या दस्तार से ही उसे शाहों का शाह देखा ।**

पर बुध की उमर से पहले न कभी यह हाल देखा फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी अलंगाकर देखा ।

सूर्य खाना नम्बर 11

सूर्ख ताँबा

फागुन सूरज 11वें होवे, शनि स्याही करता है ।
चन्द्र होजब 5 में बैठा, साल 12 में मरता है ।
बुध गिना है तीजे मन्दा, सूर्य पर न असर करे ।
चमके खुद न चमकने देवे, उमर की पर वह रक्षा करें ।

जूठ मारे या झूठ मारे। शराब गाले या पत्थर शनि की चीजो का संबंध सूर्य की चमक पर सही फेर देगा । वृहस्पति के दरबार जहां कि शनि प्रश्न उठावे – किस्मत का फैसला कर रहा है । उसी कलम से सूर्य पर क़तल का हुकम लिख देगा । यानि शनि की खुराक या मंदी चीजों के प्रयोग से औलाद की तबाही का हुकम सादर कर देगा। जिसे राहू केतू की म्याद तक कायम कराना इनसानी ताकत से
बाहर होगा। गल्ती की ठीक अपने हम – वज़न दूध के बराबर दूध देने वाली बकरियों की तदाद के बराबर तादाद के बकरे छोड़ने पर ठीक होगा। **और ४० या ४३ दिन तक रेत का बिस्तरा शुभ होगा ।**

सूर्य खाना नम्बर 12

भूरी चिउँटी - दिमागी ख़राबी मसनूई सूरज (शुक्र - बुध)

चैत्र सूर्य 12 वे होवे, ब्रह्म गुरु ही होता है ।
लाल चमकता गर न होवे, धर्मी गर वह पूरा हो ।
धन परिवार की कमी न होवे, राहु से गर बचता हो ७

दस्ती कमाई, हुनर मंदी, मिस्त्रीपन, मिकैनिक तथा सूरज ग्रहण होगा। अगर मकान का सहन न हो तो ससुरजी का नेक फल बरबाद होगा। अंधेरा मुबारक न होगा। और न ही किसी हालत में वह पुत्रहीन होगा । विशेष कर घर से बाहर वीराना में वह कभी साधु न होगा । अगर होगा तो जागीरदार – आजाद जिन्दगी – बड़े बड़े गाँव और व आमदन जायदादों का मालिक होगा ।

चन्द्र धरती माता

चन्द्र पक्का घर चौथा गिनते, ग्रह सब का पेट माता है ।
हर घर में यह राशि फल का, घर उस का धरती माता है ।
खाली पड़ा जो घर चन्द्र का चौथा,असर उमदा और नेक दे देता है
चन्द्र घर से बाहर हो बेशक,
घर खाली ही दूध पिला देता है ।
जहां चन्द्र पानी, वहाँ असर सूर्य भी आ जाता है ।

ग्रह लड़ते आपस में आ बैठे चन्द्र,
तो दोस्त वह उन को बना जाता है
बैठा चन्द्र पहले या दुश्मन को देखे,
असर नेक बंद अपना कर देता है ।

मगर दुश्मन पानी जब बैठे हो पहले,
असर चन्द्र मन्दा ही हो जाता है ।
पड़ा पाप खुद अपने चन्द्र के घर जब,
शनि बुध भी नेकी पे हो जाता है ।
अंग फड़कना या आँख हो दांई,
मतफर्का हाथ भी हो जाता है ।
तहरीर लिखाई हो शान्ति अपनी,
फैसला कुल चन्द्र हो जाता है ।

चन्द्र खाना नं० 1

दिल - बाग़ - बायाँ हिस्सा - बांयाँ डेला आँख का ।

दूध चन्द्र का पहले घर में, .ज़हर शनि से होता है ।
शुक्र बुध भी दुश्मन उस के, केतू राहू मंदा है ।
२४ साल २७ होते, माता सिर पर मौत चले ।
इन सालों में हो न सफर , तब माता की उमर बढ़े।
बिन 28 का औरन पानी,28 साल ही रक्षा है।

28 साल उमर से पहले शादी का संबंध चन्द्र की उमर खराब और औलाद का फल मन्दा कर देगा। यही बुरी हालत 24 साला आयु से पहले नये मकान बनाने पर खड़ी होगी। **चाँदी के वर्तन में दूध का प्रयोग बड़े परिवार और बुध का संबंध बरबादी पर होगा।** धन की कल्पना सुर्ख **खूनी रंग मंगल की चीजों के साथ से और परिवारकी इच्छा चांदी थाल से पूरी होगी। चारपाई के चार पायें ताँबे से नेक होंगे। यदि यह भी शर्त न हो तो दूध थोड़ी मात्रा में बड़ के वृक्ष या काक में डालने से शुभ होगा। औलाद को दरिया पार ले जाते समय पैसा (ताँबे का) दरिया में गिराना शुभ होगा** नहीं तो मल्लाह अपनी मल्लाही के ख्याल में औलाद पर ही हमला कर देगा।

चन्द्र खाना नं0 2 उँच

किस्मत को जगाने वाला, माता, दूध, चावल ,
रुहरानी हिस्सा सफेद घोड़ा।

चन्द्र चढ़िया कुल सभी को देखे, गर वहन न देखे तो भाई देखे।
मात पिता तों जरुरी देखे, हो अपने या औरत लेखे।
सब को ही वह तब तक देखे, जब तक चीजें चन्द्र देखे।
यदि न देखे वह न देखे, चन्द्र होगा 12वें लेखे।

ऐसे व्यक्ति की आमतौर पर बहिन नहीं होती मगर भाई जरुर होते हैं। जन्म शुक्ल पक्ष का होगा। नहीं तो चन्द्र आखिरी उमर में नेक फल देगा। 24 कदम तक बल्कि मकान के अन्दर ही कूएं का सबूत होगा। पैदाइश चबारे पर होगी। जिस के नीचे कूआं या पानी भी (चन्द्र का) जरुर होगा। नहीं तो बुढ़ापा मंदा होगा। माता की उमर का साथ चन्द्र के दो चक्कर (48 साला आयु) तक होगा। **कम से कम लम्बी उमर के लिये मकान की तह में चांदी की चीजे दबाना सहायक होगा। या चन्द्र की चीजों का साथ शुभ होगा। माता की उमर के बाद घर में चावल को पुराने करते जाना माता की आखिरी आर्शीवाद को बढ़ाना होगा।** दुनिया से अलग ही रहने वाला या छोड़ने वाला होगा।

चन्द्र खाना नम्बर 3

घोड़ा - शिवजी भोले नाथ।

इतना तो फल जरुरी, कर देगा तीजे चन्द्र।
मौतों से बच रहेगा, सब मालो जान मन्दिर ।
गर मर्दे न बचें तो, औरत तबाह न होंगी ।
चाहे पापी नष्ट करते, हों चन्द्र ही का पानी ।
चन्द्र घर जब तीजें आवे,माता भी वां पिता कहावे ।
शुक्र बेल तो चन्द्र साधु, मर्द बढ़ेगें बढ़ेगी आयु ।
मंगल बद मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा ।
स्त्रियों की भी पूजा होगी,गर न होगी चोरी न होगी।
नहीं है कमी तेरे खजाने में, शिव शम्भु भोले नाथ ।
गरीबों में दया हैं करता,मदद यतीमां लम्बे हाथ ।

बुध के साथ (लड़की की पैदाइश) पर चन्द्र की चीजों का दान शुभ होगा । केतू (लड़के के जन्म पर) सूर्य की चीजों का दान । शुक्र (औरत, शादी पर - गाय आने पर) सूर्य की चीजों का दान (वास्ते चोरी व मौत से भय) शुभ होगा। यानि वह चीजें जो गुड़ के रंग की तो हों परन्तु चमकदार न हो ।

चन्द्र खाना नंम्बर 4 (पक्का घर व घर का)

ग्रह फल का किस्मत को जगाने वाला -
तालाब कूंआ - चश्मा शांति ।

सोना नहीं तो चाँदी, दूध नहीं तो पानी ।
पानी भी न सही तो, गुरु देव की ही वाणी ।
घर चौथे चन्द्र होने पे, होगा जादवानी (हमेशा)

पिता को तारे, माता तारे तारता वह कुल अपनी है ।
नाभी देखी आँख भी देखी, देखी तो पुड़पड़ी भी है ।
जो न देखा राहु न देखा, न ही देखा केतु है ।
पाप नहीं वह इस घर करते, मदद तो उन की होती है ।
तारें चाहे न तारें मरजी, कसम पाप की होती है ।

जद्दी कारोबार शुभ फल का होगा। जन्म शुकल पक्ष (शुरु चन्द्र) हो तो बुढ़ापा उम्दा नहीं तो बचपन उम्दा और राहु केतु का साथ ही होना गिना जायेगा । **कपड़ा बज़ाजी के काम में माता का साथ शुभ नहीं तो नुकसान होगा।** औलाद 12 साल होती रहे।

चन्द्र खाना नम्बर 5

चकोर (परिन्दा)

आठों ग्रह चाहे इस के, दुश्मन घरों रहेंगे ।
यदि चन्द्र पाँचवे हो, सब पानी हो बहेंगे ।
दुश्मन चाहे इसके कितने हों, मुल्कुलमलूक हों ।
इक सर्द आह के खिचते हो, सब खाकों भस्म होंगे ।
दुश्मन ग्रह ८–११ बैठे, नेक नतीजे देते हैं ।
गर वह ग्रह २ – ३ में आवें, यम बिजली के होते हैं ।
हाल ऊपर का उल्टा होवे, दोस्त ग्रह जब आते हैं ।
२–३ घर ८–११ होंवे, पानी तक भी फूंकते है ।
चन्द्र बैठा पाँचवें होवे, चलता वहहघर ४ ही है ।
आगे पीछे दोनों चलता, जलता घर १०: १२ है ।

धर्मात्मा होवे। राज दरबार में इज्जत हो। यद्यपि जंगल पहाड़ को आबाद करने वाला होगा, मगर कामयाब मुसाफिर न होगा। अगर होगा, वक्त मुसीबत चिड़ियों से बाजू लड़ाने की हिम्मत वाला होगा। माता व नर औलाद पर बुरा प्रभाव होगा । चाहे पापी ग्रहों का साथ हो । नर औलाद 5 से कम न होगी । राहु ठंडा होगा ।

चन्द्र खाना नम्बर 6

खरगोश – सफर (केतू का पूरा चाँद ग्रहण होगा)

जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं कीती तो कर के देख ।
6 हो चन्द्र, 12 देख, आठवें दूजे, चौथे देख ।
गर हो यह घर रवि सब, चन्द्र होगा मिटटी तब ।
कुआँ लगे, माता मरे, मरेगी आल औलाद भी ।
घर अपने के काम न आवे, माया उस इन्सान की ।
धर अपने खुद के लिये, कोई न मन्दा जवाब ।
खोह वरते जो खेती दुनिया, मिटटी मौत खराब ।

साहिबे तदबीर व अक्लमंद होवे । 6 साला उमर या चन्द्र के विशेष समय (24 साला उमर) में कूँए खोदना खुदवाना अपनी माता और चन्द्र की शक्ति के लिये गन्दी कबर खोदना खुदवाना होगा । खास कर, जब कूँआ आम लोगों के काम आवे या बाहर खेती की जमीन में लगे ।

चन्द्र खाना नम्बर 7

खेती की जमीन (आपसी या जददी), मगर आबादी की न हो ।
शनि तीजे, वृहस्पति सातवे, कितना ही कंगाल हो ।
खुद अकेला चन्द्र 7 वें, लम्बी अवतार हो ।
औरत आये, माता गई , पर न जावे लक्ष्मी ।
अगर हो घर में चन्द्र चीजे, दूध पानी हर घड़ी ।

जायदाद जद्दी तो इतनी पर रौनक न होगी अगर नकद नामा बहुत होता । **चन्द्र के वक्त 24/25 आयु में शादी होना शुभ न होगा।** चन्द्र व शुक्र दोनों ग्रहों का आपसी झगड़ा खड़ा होगा। जिस पर केतु की निगहरानी हमलें और उस के मासूम बच्चों पर अचानक धक्के और नतीजे मन्दे जाहिर होगें । शायरी व इल्मे ज्योतिष का माहिर भी हो सकता है । परन्तु चाल चलन शक से बरी न होगा । यदि होगा, तो बैकार भूत ही होगा।

चन्द्र खाना नम्बर 8

(नीच)

किस्मत को जगाने वाला – उमर के लिये समुद्र
न खुद समुन्द्र – बालाई आमदनी – जिसमानी व दुनियावी (धन) 1/6 मन्दा असर होगा । मिरगी या मुरदा दिल भी हो सकता है ।

सूर्य मन्दा – पापी बुरे, चाहे मंगल बद भी हो ।
राहु केतु बुध मिले, गुरु शुक्र नीच भी हो ।
खाशें अकारब, मालों दौलत, अपने और बेगाने को ।

चन्द्र ८ वें सब सब हारे, पर न हारे उमर को ।
सुसराल तारे –दामाद तारे, तारेगा मामों को भी ।
उल्टी गंगा होके तारे, उमर के आखिर भी ।

खुद चन्द्र का चन्द्र की जाती चीजों पर मन्दा फल कभी न होगा। जाहिरा धुंधलापन व मान सरोवर मगर अन्दर से कपट की कान और गंदी नाली के पानी की किस्मत का मालिक होगा। यह गन्दा पानी या उसकी जायदाद जद्दी खेती के काम या शुक्र (औरत) के घर उड़ कर जाती मालूम होगी । बहर हाल वह खुद उस के अपने काम की न होगी । अगर होगी तो गर्दिशे पहाड़ होगी । इसके इलावा ६साल तकलीफ भी होगी ।

अगर जौहरी (सराफ) या जुआ या (जुयेबाज) ही हो तो बद बख्ती ही होगी । चन्द्र या कूएं का नजदीकी साधन होगा ।

चन्द्र खाना नम्बर 9

जायदाद जद्दी, दुनिया का दैविक समुद्र - अकसर राहु के ग्रहण से मारा हुआ केवल चन्द्र होगा ।

चन्द्र9 वें कभी ही होगा, घड़े बराबर मोती होगा ।
शुतर–मुरग का अण्डा होगा, मात पिता अमोलक होगा ।
बुध शुक्र और मंगल बद, चन्द्र होते मांगेसब ।
घर वह इसे घर आते हों, सर झुकायें तारते हों ।

ऐसा व्यक्ति चन्द्र की नेक ताकत में पक्का होगा । कर्म, धर्म, तीर्थ यात्रा का शुभ नाम व यात्रा, नेक अर्थ व काम का आदमी होगा। भला लोग - भले काम और नेक तबीयत होगा । पापियों के पाप काटने वाला और दुखियों को आराम देने के नसीबा वाला होगा ।

चन्द्र खाना नम्बर १

रात का वक्त - तह जमीन - आम पानी मगर कड़वा ।

खाना नं० २ के ग्रहों की चीजों से रक्षा व पालना होगी । अगर वह खाली हो तो वृहस्पति बैठा होने वाले घर की संबंधित चीजों से मदद होगी ।

चन्द्र १०वें साँप की माता, बच्चे क्या व छोड़ेगी ।
उमरे खाँ की उल्टी क्श्ती, कोई न पीछे छोंड़ेगी ।
या कि
जिस की खबर को वह गये, बीमार मुर्दा हो गया ।
मीठा शरबत देते देते, ज़हरे कातिल हो गया ।
पहाड़ से दरिया था चलना, चल पड़ा कोहसार ही ।
मकान मन्द – सुसराल मन्द, और मन्द हुआ है चाँद भी ।
गर्ज के
चन्द्र १० वें – दुश्मन दूजे या तीजे होती है आजार ही

ऐसे आदमी का पेशा हिकमत बेइमानी होगी । अगर होगा तो वह श्मशान का ठेकेदार होगा । बाकि वह इल्मे हिकमत का साहिबे कमाल होगा । अगर होगा तो जर्राहे नायाब होगा । खुद चोर डाकू का संबंध भी उसे आम होगा ।

चन्द्र खाना नम्बर 11

चाँदी, मोती सफेद - खूनी कूँआ - उड़ते बादल

अकेला चन्द्रमा ११वें होवे, होगा माखन माझा ।
दुश्मन साथी या कि तीजे, चन्द्र नष्ट ही होगा ।
शुक्र बुध या पापी भाई, चोट लगे न दें दरियाई ।
घर गाँव सब तेरे भाई, कोठी हाथ न लायें ।
इस घर के चन्द्र का कोई भरोसा नहीं
पल में वह तूफान पे होता, पल में होता वां निशान नहीं ।
माखन में तो धी भी होता, पर चन्द्र में तो इस घर में जान नहीं ।

न बूढ़ी मरे च चारपाई छूटे - या दादी पोते को तरसती रहे । लेकिन अगर घर में गड़ा हुआ पत्थर होवे या वह **दूध से पत्थर को धोते रहे तो चन्द्र का माखन और परिवार बढ़ता रहे ।** दादी पोते का झगड़ा होवे। कुण्डली वाले की १२ साला उमर तक दोनों से एक ही होवे । या शनि के वक्त तक दोनों ही न होवें ।

चन्द्र खाना नम्बर 12

खुशामद - सफेद बिल्ली बादल का पानी मदद्गार होगा ।

चन्द्र दूजे पेट गिना है, रेत हुआ घर १२वां ।
खेती भी जो पानी से उजड़े, बसदे घर उजाड़ा ।
नीम । मंगल । बूढ़ी से पानी टपकता रहा,
माता । चन्द्र । बूढ़ी का पोता भटकता रहा ।
या
पानी पे पानी बरसता रहा,

बीकानेर (वह घर जहाँ बुध हो) बेचारा तरसता रहा ।

यानी

जायदाद जद्दी का वह गनीम होगा,
नौमन लौहा हर घड़ी अफीम होगा ।

वक्त गुजरे मर्द पछतायें - आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना —— (२) कभी हम भी बा - इकबाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो —— (३) पिदरम सुलतान बूद ——

मगर अब तू कहाँ है कि जवाब वह आँसुओं से ही देगा । अपनी और अपने सुसराल की जायदाद पर बरबादी होगी । बल्कि कम नसीब, स्याह बख्त या मंदा हाल ही होगा ।

शुक्र

जगत् लक्ष्मी

शुक्र आँख है शनि की पाई, तरफ चार जो देखता है ।
शनि अगर कहीं जावे मारा, बली वह अपनी देवता है ।
साथ मंगल के चन्द्र बनता, बुध केतु जिस में न हो ।
शुक्र अकेला बुरा न करता, बैठा घर चाहे किसी हो ।
घर 7वें जब अपने बैठा, असर–नज़र–रुह अपनी को ।
दे देता ग्रह उसी को है यह, बैठा जो घर 7 वें हो ।
चन्द्र भला या बुध हो अच्छा, बुरा शुक्र नहीं होता है ।
घर तीजे में जब आ बैठा, शुक्र मर्द हो जाता है ।
9 वें मंगल बद है यह होता, छटे में खुद ही मन्दा है।
माग रेखा है तख्त पे होता, चौथे औरत दो होता है ।
12 दूसरे सब से उत्तम, 10 वें शनि खुद बनता है ।
घर 5वें में पक्की मिट्टी, 11 लट्टू बन घूमता है ।
घर 8वें ग्रह सब ही मन्दे, शुक्र भी मन्दा होता है ।

भव सागर से पार है करता ।
शुक्र गऊ जब होता है ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 1

(काग रेखा - शुक्र का पतंग)
पराई औरत की मुहब्बत

शुक्र पहले काना गिनते, शनि नज़र का मालिक है ।
फल दोनों का एकसां मंदा, प्रबल होता शनि का है ।
(शनि खाना नम्बर 1)
दौलत मिटटी हो गई, औरत मद अभिमान ।
जैसी कीली चक दी, वैसा जिसम ईमान (खाना नं० 7)
शत्रु ग्रह जब 7 वें आवें खांसी खूनी तपैदिक लावें ।*
गिना अच्छा तो साधु हावे, पर्वत जंगल रहता होवे ।
गौमूत्र–जौ–सरसों दान, सत–अनाजा ज्वार
(चरि) कल्याण ।
जब तक न वह शादी करें, तुरन्त पीड़ जिस्मानी हरे ।
गर शादी के बाद हो दुखिया, गौदान (कन्यादान) से होवे सुखिया।*
शुक्र का फल बेशक मंदा, पर मन्दा न सूरज है ।
कुटुम्भ कबीला सब सुख लेवे, खुद फटा खरबूजा है ।
रथ सवारी आराम चौपाया, इश्क जवानी होता है ।
धर्म से कदरे हीन हो बेशक, पतंग शुक्र का होता है ।
हम–असरों की नम्बरदारी, या मुखिया वह होता है ।
घर का जब खुद ही मोहरी, खुश्क तालाब डबोता है ।
औरत की जब सेहत हो मन्दी, दान ज्वार (चरी) का होता है ।
माता पर कोई असर न होवे, औरत जब वह अलग है ।
औरत रिजक से पहले आवे, शुक्र बैठा जब पहले घर ।
शादी अगर उसकी 25वें होवे, औरत रहे न दौलत घर ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 2

(घर का–हवाई)
आलू–गाय–अस्थान–घी–अबरक सफेद–काफूर–राग

शुक्र जिसके दूजे आवे, 60 साल धन दौलत पावे ।
बाल बच्चों की बरकत आवे, सुलह का झंडा खूब लहरावे ।

मिन्नतकश ग़ैर हरगिज़ न होगा, खुदा का ही अमूमन अहसान होगा ।
जूती चोर–साधु वह हरगिज़ न होगा, गृहस्थी न होकर जगत गुरु होगा ।

मवेशियों गूजरों के कामों से मिसले राजा होगा। शुक्र का खुद जाति फल मन्दा न होगा। औरत, गाय, लक्ष्मी आदि सब नेक फल के होंगे । माता के बछड़े (भाई) और गाय के बछड़े (लड़के) बहुत होंगे । घर उसका गौ–घाट होगा। या बाकी 5 बचने वाला मकान होगा । वरना वही भठूर की मिट्टी (खुश्क, जली हुई) की तरह किस्मत का हाल होगा । आम तौर पर जानों व जानदारों का हर तरह से उमदा हाल होगा । पर बीमारी के झगड़ों का न कोई हिसाब होगा । अगर न होगा–तो रिज़क न कभी खराब होगा ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 3

शादी–सती या सत्यवान औरत

शुक्र घर जब तीजे आवे, औरत भी वाँ मर्द कहावे ।
शुक्र बैल तो चन्द्र साधु, मर्द बढ़ेंगे तो बढ़ेगी आयु ।
मंगल बद–मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा ।
स्त्रियों की भी पूजा होगी, गर न होगी, चोरी न होगी ।

अब शुक्र का ख़ाना नं० 9 पर कोई बुरा असर न होगा बल्कि पितृ रेखा का उत्तम और नेक फल साथ होगा । पर लड़कियों के हाथों और संबंध से इसका धन खराब होगा और न ही अपने बनाये मकान का आराम होगा । अगर होगा तो खाऊ मर्दों से वह घर वीरान होगा । एवं एक दफा उजड़ा हुआ न फिर कभी आबाद होगा । अगर चन्द्र का इस घर में साथ होगा, किस्मत भली तो वहाँ रहने का मकान ही न होगा । यह सब कुछ बुध की 34 साला उमर तक का हाल है। आखिर जगत् गुरु वृहस्पति के दूसरे दौरा पर प्रकट होते ही खुशहाल होगा । पर बुध के संबंध से न कभी वहां बा रौनक गुलज़ार होगा ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 4

(राशि फल का)

दही–चौपाया–चरिन्द–वृहस्पति का उपाय मददगार होगा ।

शुक्र चौथे जब पानी आया, औरत हुआ वैराग ।
एक से दो भी हुई, पर बुझी न उनकी आग ।
दुनिया की वह है दलदल, तालाब की वह चिकड़ी ।
औलाद ममूँ दो घर, बिखरी हुई हो खिचड़ी ।
पत्थर (शनि) भी रेत (बुध) हो गर, तो रेत उड़ता होगा ।[1]
औरत की हो आज़ारी, बुध (बहन) केतू (लड़का) मन्दा होगा।
कूआँ चलता उमदा होवे, दबता मिट्टी जो रहे ।
गर कूआँ ही बन्द होवे, लक्ष्मी वाँ न रहे ।

औरतें दो होती हुई भी औलाद में कमी होगी । जो बुध की 34 साला आयु के बाद मंगल, शनि या केतू के दौरा के वक्त (जब वह तखत या खाना नं० 1 में आवें) दूर होगी । अगर शुक्र खुद किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो तो **आड़ू की गिटक में सुरमा स्याह भर कर बाहर मिट्टी में दबाने से मन्दा असर दूर होगा। चन्द्र के उपाय से जब मामूँ घर बर्बाद हो चुका हो, तो ऊपर का लिखा हुआ न बुरा हाल होगा** । जब तक कि घर के पहले दरवाज़ा की दहलीज़ पुरानी, उमदा, साफ और बदस्तूर हो। अगर खुद शुक्र (औरत) की ही सेहत बर्बाद हो, तो छत पर तालाब की मिट्टी (चिकड़ी) से उमदा हाल हो या **छत पर शहद का भरा बर्तन दबाने से औलाद का दुख दूर हो** और सब कुछ बहाल हो । अक्सर वह शख्स न कभी पुत्रहीन हों और न ही आज़रदा हाल हो और जब कभी भी हो उमदा और खुशहाल हो । पर औरत की ज़ाती किस्मत का न उससे साथ हो । फिर भी हो तो विधाता की कलम उसके वृहस्पति के हाथ हो । व शर्ते के शनि न उसके साथ हो ।

शुक्र ख़ाना नं० 5

फल – आवा कुम्हार या भठ्ठा ईंट ।

शुक्र घर 5वें हुआ, मिट्टी आग पड़ी ।
कच्ची थी उड़ती फिरी, अब इक जा टिक गई ।
आग जली न मिट्टी उड़े, उड़ेगी जिस दम वह ।
जो ग्रह पहले घर 9वें, अंधा काना हो ।
पापी ग्रह या बुध जाँ आवे, शुक्र उनको सोना दिलावे ।
गर न देवें दुख न देवें, देवें तो वह उन्नति देवे ।

देश व क़बीले के प्यार का दिवाना और शुभ फल का हो। अगर आशिक दुनिया हुआ तो दरख़त में फंसे हुये पतंग की तरह किस्मत का हाल हो । लेकिन अगर सूफ़ी हुआ तो भव सागर से पार हो । वरना, एक को क्या रोते, यहाँ तो आवा ही ऊत गया ।

शुक्र ख़ाना नं० 6

(नीच)

चिड़िया–लड़की–सफेद गाय – मन्दा फल देगी ।

शुक्र 6वें घर बरबाद होवे, अक्ल से मन्दा हो ।
आशिक दुनिया न हुआ, पर त्यागी पूरा हो ।
आप ते डुब्बी डूमनी, नाल प्रभ भी गाले ।
गधा गिरा पाताल में, कुम्हार छट सब नाले ।
लल्लू करे कोलियाँ, रब सिधीआँ पावे ।
लड़के उस घर से डरें, कुड़ियाँ पल्ले पावे ।

वृहस्पति अगर ख़ाना 2 से मिलेगा तो संख्या बच्चों की 6 तक करेगा। मगर जब वृहस्पति हो 12 में बैठा, शुक्र मिट्टी उड़ती, चाहे केतु हो बैठा । अगर केतु भी घर छटे में मिलेगा, तो शुक्र का सुख सब से मंदा करेगा ।

धन दौलत या गाय, बैल, पशु, जानवर की चोरी या गुम हो जाना आम सबूत होगा । अब यह ग्रह आखिरी उमर में ही क़ाबिले आराम होगा। और चन्द्र का उपाए मददगार होगा । अगर सिर्फ एक ही लड़की तो 12 साल तक ही लड़के के आने का दर्वाज़ा बन्द होगा । जो दुबारा हर 7 वें साल से पहले न खुल सकेगा । अगर खुलेगा तो कन्या को ही आने का हुकम देगा । वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र तीनों का ही मन्दा हाल होगा । या उनका साथ ही न होगा । अक्सर वृहस्पति या सूर्य के साथ या संबंध से शुक्र अब एक क़ीमती चीज़ होगा । हालाँकि पाताल का शुक्र उनका दोस्त भी नहीं है । मगर वह खुद दोनों या कोई एक गुरुद्वारा में बैठे पाँव पड़ी शुक्र मिट्टी आदि को नीच नहीं देख सकते । क्योंकि गुरुद्वारा भी तो खुद शुक्र का अपना ही घर है। **शुक्र नं० 6 में होते वक्त इसकी औरत को ज़मीन पर अपना नंगे पाँव चलना ग़ैर शुभ होगा ।** अच्छा तो यह है कि हर दम जुराब बगैरा डाल कर रहे तांकि ज़मीन से पाँव का चमड़ा न लगे ।

शुक्र ख़ाना नं० 7

(पक्का घर-घर का)

चरी (ज्वार) -सफेद गाय - काँसी के आम बर्तन - हर दो मुहब्बत - ग्रह फल का - किस्मत को जगाने वाला ।

शुक्र 7वें फल हुआ, पर खेती उमदा हो ।
शायर, उमदा जिन्दगी, और सुख सवारी हो ।
खरबूजा देख ख़रबूजा पक्के, 1–9–या 7–11
चोरां टोली इक्को पोली, बुध–शनि–और शुक्र यारां ।
दुश्मन ग्रह गर इन घर आंवें, जूता पत्थर खूब चला दें ।
पर शुक्र न हिम्मत हारे, हरे न खुद वह सब को मारे ।

अपने फल की बजाये साथी या साँझा ग्रह का फल देगा । मगर खुद शुक्र (औरत-लक्ष्मी) का कभी मन्दा फल न होगा। जब तक कि खुद शुक्र (गाय, औरत) सफेद रंग न होगा। यदि होगा तो दर जहाँ न होगा। तो ऐसे शुक्र या 25 साला उमर तक खराब होगा ।

फिर भी अगर होगा तो रंग काला (शनि) ही होगा । आम तौर पर लक्ष्मी से दूर न होगा । अगर होगा तो स्वार्थी से खराब होगा । आख़िर होगा तो शुक्र एक आँख ही होगा । जिसे झुक झुक कर सब को सलाम होगा । नहीं तो जायदाद जद्दी से वे बहरा और बेआराम होगा ।

बिल्ली की खाल हर तरह से अशुभ होगी । अगर फिर भी रखनी होगी तो कम्बल के टुकड़े में ठीक होगी । मगर चमड़े के बटुये में रखी हुई निहायत ही अशुभ होगी । फिर भी होगी तो लक्ष्मी व औरत बर्बाद कर देगी ।

शुक्र ख़ाना नं० 8

जिमीकंद - गाज़र - क़बर - भोडी या
सफेद गाय मंदी (बिना सींग)

शुक्र 8वें क़बर है मन्द शगुन ही हो ।
गऊ सेवा या दान से, सब कुछ उमदा हो ।
हम भी डूबे तुम भी डूबो, डूबेंगे मिलकर सभी ।
ससुराल डूबे औरत डूबी, डूबेगी औलाद भी ।
उमर सारी गंदी नहीं है, सिर्फ पहली 25 तक ।
कमी सारी पूरी होगी, दूसरी 25तक ।

चन्द्र के शक्की होने पर शुक्र का बुरा फल न होगा । अगर चन्द्र भी मन्दा हो तो बुध ही मदद देगा । अगर वह भी रद्दी हो तो मंगल से मदद पा लेगा । आगे वह भी मन्दा हो, तो राहु के गन्दे वाले से मदद पा लेगा । **जिस में ताँबे (सूर्य) या फूल (बुध) का दान शुभ होगा** । सफेद गाय मन्द भाग मगर स्याह या सुर्ख गाय मुसीबत में मदद देगी । शुक्र खुद की मदद के लिये चरी (ज्वार) मिट्टी में दबाना उसे दुखों से बचा देगा ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 9

सफेद रंग (दही के) और सफेद गाय गैर मुबारक

नीम के दरखत में चाँदी का चौरस टुकड़ा दबाना मुबारक ।

बुध – पापी – नर – स्त्री, चाहे सब ही अच्छे हों ।
शुक्र 9 वें जब हुआ, कुल मंगल बद ही हों ।
घर से भूली लक्ष्मी, ढूँढे आल पाताल ।

शनि अकेला तारेगा, *जब गुज़रें सतरह साल ।*

1) मकान बनने के 17 साल गुज़रने के बाद ।
2) शुक्र ख़ाना नं० 9 में 23 साला उमर में आता है ।

वर्ष फल 25 साल गुज़रने तक पानी 48 साला उमर तक अपना फल देगा । इस 48 साला उमर तक अपना फल देगा । इस 48 साला उमर के बाद 17 साल गुज़रने यानी 65 साला उमर गुज़रने पर – तीर्थ यात्रा तो उत्तम मगर रोज़ी एवं औलाद वास्ते मन्दा होगा । धन तो हो पर मर्द न होंगे । शुक्र से या की शादी (25 साला उमर) या सफेद रंग गाय की सहायता से पूरी बर्बादी होगी । मंगल बद खड़ा होगा । चाँदी की ईंटों की जगह सफेद मिट्टी होगी । लेकिन अगर बुनियाद **मकान में खालिस चाँदी या खालिस मंगल (शहद) हो तो शुक्र की जगह अब चन्द्र होगा ।** फिर भी बुध व केतु मन्दा होगा ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 1०

मिट्टी – कपास – शनि उत्तम

दीवार कच्ची, मिट्टी कच्ची, *न ही कच्ची गर्द हो ।*
जिसम मोटा, सेहत उमदा, *शुक्र घर 1०वें से हो ।*
बाग बगीचे, उमदा कोठे, *ऐश करेगा वह सदा ।*
शनि हो उसका 7 वें चौथे, *या कि घर दूजे में हो ।*
मिट्टी से भी खाँड है बनती, *मोटर लाँरी उमदा हो ।*
पहले पाँचवें इश्क करेंगे, *बुरा नहीं कर सकते है ।*
मदद तो उनकी बेशक होवे, *हसद कभी नहीं करते है ।*

यह ग्रह अब बुढापे में आराम देगा । शनि की हाज़री में हर समय जवानी इश्क का घर होगा । जिस से केतु का फल मन्दा होगा । बल्कि मंगल भी चिल्लाता होगा और चन्द्र पछताता होगा ।

शुक्र ख़ाना नम्बर 11

रुई – मोती – दही – रंग सफेद

शुक्र 11 घूमता लट्टू, *दौलत का भण्डारी हो ।*
अगर ऐसा न होवे कोई, *बुज़दिल, बुधू, हिजड़ा हो ।*
माता बेशक चल बसे, *गऊ, औरत का साथ ।*
कन्या बढ़ें, दौलत बढ़े, *बढ़ेंगे हर दो साथ ।*
शुक्र जब ग्यारह हुआ, *और बुध भी मिलता हो ।*
धन दौलत की न कमी, *पर पापी मन्दा हो ।*
औरत तारती अपनों को, *और बनी हो घर की मेहरन ।*
ज़ाहिरदारी हो भोली भाली, *हृदय भरी हो ज़हरन ।*

औरत किस्मत की मालिक मालूम होती होगी मगर वह खुद ही बाइसे तबाही होगी ।

पापी ग्रहों के मन्दे असर के वक्त तेल दान कल्यान होगा । इस की आमदन शुरु होने से पहले शादी१ शुक्र की अशया का होना ज़रुरी होगा । अगर शुक्र सोया हुआ होवे तो नर औलाद शुक्र की पूरी म्याद (2 साला महादशा) के बाद कायम होगी जिस का उपाय बुध की पालना होगा। अगर ऐसा न हो तो औरत के कम-से-कम 3 भाई होंगे जो अब शुक्र को हर तरह से बचा व जगा देंगे।

शुक्र खाना न. 12

(उच्च)
काम धेनु गाय – लक्ष्मी –चौपाया व अपनी गृहस्थी –
औरत का सुख सागर (37 साला सुख)

शक्र 12– राशि– 12, *पग भी उस के 12 हों।*
पत्थर सुखा भी ब्रेशक होवे, *घी का मौसम बाराँ हो ।*
अकेला शुक्र ही इस को तारे, *मदद न कोई करता हो ।*
दु:ख शत्रु सब मिट्टी कर के, *दया से अपनी तारता हो ।*

तारने वाली काम धेनु गाय होगी । अब शुक्र खाना न. 2 का नेक फल भी साथ होगा और किस्मत का सब कुछ इस की अपनी औरत के हाथ होगा। जो मामूली नीले फूल से ही राहु व बुध दोनों को ही दबा सकेगी। जबकि वह दोनों ही मन्दे हों। औरत का सुख 37 साल होगा ।

मंगल

शस्त्रधारी

मंगल नेक जंगल में मंगल, *खून चढ़ा खूनी होता है ।*
अकेला बैठा जब शेर है जंगल, *घर चिड़िया कैदी होता है ।*

सिर रेखा य बुध दरुस्ती, मंगल बद नहीं होता है ।
न्याय का राजा क़ातिल खूनी, तलवार धनी वह होता है ।
जग चारों में चन्द्र चलता, तरफ चार शनि चलता है ।
बद मंगलीक जो चौथे बनता, बदला खून से लेता है ।
पहले तीनों घर बड़ा है भाई, चौथे मंगल बद होता है ।
घर 5 या 9 न्यायक होवे, 1 2 भाई नहीं रहता है ।
तखत सूर्य या किरणों उसकी, पौन पूतर भी होता है ।
शनि के घर यह राजा चीता, मर्द मगर नहीं मारता है।
होंट बाज़ू या मुहं का दहाना, हाथ मुरब्बा होता है ।
पेट छाती जो प्रबल होवे, मंगल का फैसला होता है ।
चन्द्र दूध में शहद से मिलता, शुक्र मिट्टी पानी होता है ।
बुध मगर इसे चक्कर देता, मन्दा मंगल हो जाता है ।
राजु बना है हाथी इसका, केतु से हरदम लड़ता है ।
नेक रहे तो दया हो शिवजी, टुकड़े बदी दो करता है ।
मंगल बद–मंगलीक, हिरण, ऊँट, चीता ।
मंगल बद–मंगलीक दो भाई, खून इकट्ठा होते है ।
बद लड़का है शनि का होता, मंगलीक को भाई लेते है ।
मंगलीक मारे गर मर्द व औरत, बद उड़ाता है जानो ज़र ।
भाई शनि घर एक ही मारे, लड़का शनि का दोनों ही घर ।
मंगल बद मंगलीक शनि की, माता एक को कहते है ।
नुतफे पिता तीनों के अलैहदा, उमर बराबर गिनते है ।
असर में तीनों जुदा जुदा हों, आयु गिने तीनों लम्बे है ।
एक तरफ मंगलीक ने पकड़ी, बद ने दो–शनि चारों में ।
शुक्र–सुख दौलत और मिट्टी, ग्रह न कोई नीच करे ।
खून शनि का मंगल ऐसा, शुक्र पर भी जुल्म करे ।
गुरु पिता है दोनों जहाँ का, रवि पिता है शनि का ।
शनि का ऐसा चौथा दर्ज, बद मंगलीक है परलै[1] का

मंगल बद - मंगलीक (हिरण, ऊँट, चीता)

शनि तरफ चारों ही चलता, घर चौथा[2] चन्द्र का है ।
उमर के मालिक 3–8 चन्द्र, मारता बद मंगलीक को है ।

मंगल–बद मंगलीक का उपाय

जब यह ज्ञात हो जाय कि बद या बद –का असर आ रहा है तो उसी समय चन्द्र का उपाय करना चाहिये । यानि **(मंगल-बद) बड़ के वृक्ष को दूध डालकर गीली हुई मिट्टी का तिलक लगाना मंगल बद (पेट की खराबियाँ) को दूर करेगा ।** अगर वह आग से जलाकर तबाह हो कर जावे तो उसके बुरे असर के ज़ख्मों को **दूर करने के लिये खाँड़ (देसी खाँडा) की बोरियों का बोझ छत पर कायम करें । अगर ला-वल्दी या औरत की हत्या करता जावे तो शहद से मिट्टी का बर्तन भर कर बाहर मैदान में दबाया जावे।** अगर मौत तो न देवे मगर बसने भी न दे तो **मृग शाला से उसकी ज़हर मिटा दें** । अगर फिर भी बाज़ न आवे तो **चाँदी चौरस की मदद लेवें ।** या **दक्षिण दरवाज़ा में ही लोहे से उसे कील दें ।** और मंगल बद का संबंध अशिया काला, काना, ला–वल्द बगैरा डेक के दरखत से दूरी पकड़ें । **या बँदर (सूर्य) को आबाद करें ।** बहर हाल इस लानत से बेख़बर न होवें । **ख़ान दानी उपाय में चिड़े चिड़ियों को मीठा देवें ।**

मंगल ख़ाना नम्बर 1

(घर का - ग्रह फल का)

32 दाँत - किस्मत को जगाने वाला

मंगल पहले तेग़ अदल की, सच का हरदम हामी है ।
बढ़ो से भी वह नेकी करता, भला पुरुष वह प्राणी है ।
बद कभी न बदी को छोड़े, नेक कभी न नेकी तोड़े ।
नेकी छोड़ कलंकी होवे, भाई मरे, सुसराल भी रोये ।
पापी ग्रह सब मन्दा होवे, सूर्य चन्द्र मदुधम होवे ।
न ही साथ वृहस्पति होवे, गर होवे वह घर न होवे ।

खुद बड़ा भाई हो, वरना बड़ा बनना पड़े यानि उसके बड़े भाई उससे पहले ही मर जावें । मंगल के दायें बांयें अगर चन्द्र सूर्य पड़े हों तो माता पिता के लिये वह व्यक्ति मियान में मानिन्द तलतार होगा । जिस दिन मंगल का ज़माना –14–28 या 13–15 होगा–माता पिता का साया खत्म होगा । मगर वह खुद तलवार का धनी होगा दाँत गिनती में 32 होंगे (31 भी मंगल नेक होता है) । बहन न होगी । अगर होगी तो पूरी मानिन्द राजा होगी । गर न होगी - मंगल बद

न होगी । अगर बद् ही होगी तो बस खुद् (अकेला ही दम) अकेली होगी । और बाकी सब तरफ मेहर ख़ुदा (परमात्का की मर्जी मन्दे अर्थों में) होगी । **साधु के साथ से दर बदर होगा।** लेकिन जब अपने घर होगा और साधु का भी साथ होगा - तो भाई उसका दुखिया व मरीज़ होगा । लेकिन अगर किस्मत भली हो तो साधु ही न होगा । और न ही सुसराल के कुत्ते का साथ होगा । यदि होगा तो सब का ही बूरा हाल होगा । मगर यह नज़ारा न हर घड़ी होगा । फिर भी होगा तो शनि की उमर के बाद (39 साला उमर) न यह हालात होगा ।

मंगल खाना नं० 2

चलता हिरण

मंगल दूजे मुखिया गिनते, लोह लंगर का मालिक हो ।
लाख करोड़ों को वह पाले, गाँठ न अपनी बाँधता हो ।
शहद मक्खी का काम, उसके है नहीं आता ।
अगर आता तो रात है आता, रात दूजी है नहीं आता ।
पानी कूँऐ सुसराल में, मीठा ही बढ़ता होगा ।
गर वो कूआँ न होवे, तो कम नसीब होगा ।

अगर खुद बड़ा भाई न होवे तो अपने बड़े भाइयों से पहले गुज़र जाये । अगर रहे, तो बाकी सब भाई न रहें । सुसराल को किस्मत में बुलन्द करके खुद उनसे मीठे शहद का सुख लेगा । मगर वह ला-वल्द न होंगे । और उसे ज़रुर जायदाद और ज़र दौलत ही देंगे । अगर वह दूसरों को पाले तो बढ़ता ही जावे वरना वही एक-दूनी-दूनी का चक्कर इसके गले पड़ा रहे । **अगर मंगल बद हो तो लड़ाई में ही मारा जाये ।**

मंगल ख़ाना नम्बर 3

(पक्का घर)

पेट-होंट-छाती-हाथी दाँत मुबारक

दोस्त 9वें हो 1 1 या कि हों वह सातवें ।
मंगल तीजे सबसे बर्ते, बरतेगा वह शहद में ।
बुध – गुरु अच्छे नहीं है, 1 1–9– या सातवें ।
मंगल उन से मिल न बर्ते, बर्तेगा वह ज़हर में ।

अगर हिरण हो तो बुजदिल लेकिन अगर चीता हो तो शेर से भी खूँखार होगा । अकसर दोनों रंग का साथ होगा । शहद में बराबर का घी या ज़हर होगा । पेट बड़ा तो खून भी बर्बाद होगा । अक्सर यह ग्रह का अब भरोसा न होगा । अगर होगा तो तेज़ आँधी के मुकाबला पर नरम और आजिज़ घास ही होगा। आज़ाद, बरी और आबाद होगा । अगर बुलन्द वृक्ष की तरह तबीयत का सख्त हो तो खवार व ज़ेरबार ही होगा। या बाकी 3 बचने वाले मकान की किस्मत का मालिक (बहक मरदाँ) शेर की भांति खूँखार होगा । वरना

खाना पीना लाह, सुथरे दम का क्या बसाह

का एतकाद वाला अय्याश व ठन ठन गोपाल होगा ।

मंगल ख़ाना नम्बर 4

(नीच)

राशि फल का-चन्द्र का उपाय मददगार होगा । या मृग शाला होवे । तलवार । डेक का दरखत-घड़ी व धुन्नी के दरम्यान बीमारियाँ

चौथे मंगल मंगलीक होगा, जला देवे वह समुन्द्र को ।
ठण्डा उस दम ही वह होगा, 8 तीजे जब चन्द्र हो ।
दुश्मन इसके चौथे तीजे, या घर 8 वें ही आवें ।
आग से जलता चौथे मंगल, तेल मिट्टी का ही पावें ।
रवि–गुरु जो 3–8–चौथे, या कि 9 वें बैठा हो ।
ज़हर के बदले दूध पिलाता, मंगल बद मंगलीक ही हो ।

मंगल की चीज़ों (खाँड शहद बगैरा) से कोयले हो जायेगें। स्वयं अमल न करने वाला परन्तु औरों को शिक्षा देने वाला होगा। गले में कटे हुये सिरों का हार डालने में आँख का मालिक शिवजी - अजल का फ़रिश्ता-ए-नाम नामी हाथ पर शमशान या कब्रिस्तान को भी जलाने वाली आग उठाये फिरता होगा। अपनी किस्मत के असर में भी तंगदस्त (सूखी छड़ी) होगा । मंगल बद व मंगलीक के दोनों हिस्सों के फर्क की बजाय दोनों ही का बुरा असर साथ होगा ।

माँ–नानी–सास–ज़नानी (औरत) पर मौत तक का सबक होता है ।

मंगल बद या मंगलीक सिर्फ उसके टेवे में होगा जिसके खानदान में उससे पहले बजुर्गों में एक दो पुश्त कोई शख्स पूरा वृहस्पति ब्रह्म गुरु शुद्ध सोना या शाहाना हालत हो चुका हो । यानि उमदा तख्त व गुलज़ार बन चुका हो जिसे यह बुरा ग्रह बर्बाद कर सके ।

मंगल ख़ाना नम्बर 5

भाई - नीम का दरख्त

मंगल 5 वें 5 गुणा हो, नेकी और बदनामी में ।
पवन पुत्र की तरह, उछले वह अग्नि पानी में ।
माया आती 11 वें से, जाती वह तीजे से है ।
मंगल 5 वें घर में बैठे, पूँछ से ही चलती है ।

मंगल अब सामने बैठे खाना नम्बर 9 के दुश्मनों पर भी मेहरबान होगा । और खाना नं० 3 का ग्रह भी (अगर कोई हो) हनुमान की दुम की तरह मंगल का साथी व मददगार निगहबान होगा और धन दौलत का मालिक देवता - दुनियावी लक्ष्मी-(शुक्र या चन्द्र) इसके पीछे चलने वाला होगा । या वह शख्स राजों रइसों मा बाप दादा होगा । मगर रात की नींद से कदरे बे- आराम होगा । **जिसका उपाय- वक्ते नींद सिरहाने पानी मा साथ रखना शुभ व सहायक होगा ।** साहिबे इल्म व साहिबे औलाद होगा ।

मंगल ख़ाना नम्बर 6

नाभि-राशि फल का - शनि का उपाय सहायक होगा ।

मंगल 6 वें घर हुआ, हों केतु शुक्र मन्दु ।
रवि मगर उस ऊँच हो, बैटा किसी हो अँग ।
उस कुल बुध न होगा चौथे, चन्द्र 2 न गुरु ही पहले ।
न सिर्फ पहला ही लड़का, मागूँ घर कुल ही चटका ।
छटे मंगल हो भाइयों की हानि, राजा जनक चाहे लाख हो दानी ।
जिस दम वह खुद ऊँचा होगा, साया सब पर उमदा होगा ।
वरना वही हो शिव शम्भू, या कोठे तूला तम्बू ।

इसके भाई 499 रुपये 15 आने (जब वह 5 रुपये तक चल सकते हैं) लेकिन इसके भाई 5 रुपये 1 आना पर होंगे । लकड़ी की तरह छत से गिर कर फिर वही ऊपर को चलना सीखेंगे । वह बाँस की तरह अपने खून की किस्मत का निगहवान होगा । जो पाताल में भी आग जलाने या शहद से ज़ुबान मीठी कर देने की हिम्मत का मालिक होगा । जिस तरह मंगल ख़ाना नं० 12 में होने से राहु गुम हो जाता है उस तरह ही मंगल के इस धर होने से केतु (लड़का) पता होगा । या अब औलाद होगी । **जिस का उपाय बुध की पालना बज़रिया चन्द्र मुबारक होगी ।**

बच्चों के जिस्म पर जब तक सोना (वृहस्पति) वे होगा - वह सोना कमायेगा । लेकिन जब इन के जिस्म पर सोना होगा - वह दुनिया में ख़ाक उड़ायेंगें । या औलाद का मंगल शुभ न होगा । अगर होगा तो ज़हमत या दुख ही खड़ा होगा । या उनकी खुशी करनें से मुआमला संगीन ही होगा । बहर हाल वह खुद साहिबे इकबाल और हुकमरान ज़रुर होगा। और सिर्फ मंगलवार के दिन की पैदाशुदा औलाद (नर) का साथ होगा । और सिर्फ शुक्र या शनि के दिन की पैदा शुदा लड़की की उमर का एतबार होगा । हर दो हालत में वह बुध की उमर (34 साला) से पहले न साहिबे औलाद होगा । फिर भी होगा तो उनकी मौतों से दुखिया होगा ।

मंगल खाना नं० 7

बेलें (फली वाले पौदे) दाल मसूर पहला लड़का ।

मंगल ७ वें सब कुछ उमदा, धन दौलत परिवार ही सब ।
सब का सब ही रवि होगा, बुध (बहन)मिले मंगल (भाई) से जब ।

ऐसे व्यक्ति का बहन के पास आना या रहना बुरा प्रभाव देगा। दोनों को **जिस के लिए बहन को मंगल की चीजे देना शुभ होगा।** शनि का बज़रिया नया मकान या मामूली सी दीवार भी जगाना शुभ होगा।

छोटा वज़ीर और धर्मात्मा होगा। रोते को हँसाने वाला नेक- नाम और इल्म हिसाब जानने वाला होगा। **हालत मन्दी के समय चन्द्र की ठोस चीज़ का उपाय सहायता देगा।**

मंगल खाना नं 8

(पक्का घर - घर का)
ग्रहफल का ब मंगल बद हो -
बाजुओं के बगैर बाकी जिस्म ।

मंगल आठवें आठ बरस तक, फर्क भाई छोटा गिनते हैं ।
लाख मुसीबत खड़ी है करता, अन्त बुरा नहीं गिनते हैं ।
माता पिता सब का, साथ भी होबे ।
जिसम उमदा ज़र सेम, पाया भी होवे ।
तनूर शुक्र (मिटटी) जग, तपाया वाँ होवे (मंगल शुक्र)
न हो, वह न हो यह, तबाही ही होवे ।
न कोई नेकी का ना, न कोई ही होवे ।
मंगल बद हो आठवें, तो कोई न हो वे ।

खुद मंगल का मंगल की चीजों पर बुरा असर (कभी मंदा फल) न होगा। लेकिन जिस कदर बुध का फल उमदां (बुध प्रबल) होता जावे उसी कदर ही मंगल का फल मन्दा पड़ता जावे। जब बुध का साथ या संबंध होता होवे। बेहतर तो है यही कि न बुध का फल बढ़े। यानि मंदी हालत में बुध से बचता होगा। या बुध की फोकी खाली चीजों और बातों से नुकसान होगा । तबाही के वक्त तन्दूर से मीठा या मीठी रोटी लगा कर कुत्ते को देवें ।

मंगल खाना नं० 9

सूर्ख रंग

मंगल जब घर ८ वें आवे, ८ ही ग्रहों का मंगल गावे ।
भरे खजाने दौलत अंदर, तर ततफ ही जंगल मंगल ।
न तीजा न ५ बिगाड़े, गर देखे मंदा– जान की ।
बुध अकेला छोड़ के सब, उमदा होग्रह चाल ही ।

मंगल की (१३ साला या निसफ अरसा) तक बाल्दैन को राजा बनाववे । फिर अपनी २८ साला उमर में खुद भी राजा हो । लाल रंग से दुनिया का लाल होगा। कुण्डली में सूरज अब कहीं भी बैठा हो, उच्च फल का होगा।

मंगल खाना नम्बर 10

(ऊंच)

शहद – मीठा भोजन

अकेला मंगल १० वें बैठा, राजा होता है वली।
दूजे पापी – शुक्र चन्द्र, सोने में होगे कलई ।
तीजे तो 6 वें में बैठे, दोस्त ३ इस के अपने हों ।

जंगल जलता, लड़का मरता, धन है घटता, उँच वा कितने ही हों।

(बुध का मन्दा केतु बर्बाद वृहस्पति नीच)

मंगल राजा घर दसवें का, शनि नज़र का मालिक हो ।
मंगल पर ब काना होगा, घर चौथे जब सूरज हो ।

शनि के घरों (खाना नं० 1 – 11) में मंगल बहैसियत चीता होगा । जो आदमियों पर हमला नहीं करेगा। इस की मामूली सी बैठने की चौकी एक तख्त का काम देगी। लेकिन अगर शुक्र या किसी भी और ग्रह का साथ हो जावे या सूर्य ही खाना नं० 6 में होवे तो औलाद के लिये लम्बी उमर (45 साला) तक तरसता रहे। मगर बिना सन्तान न होगा। दौलत मन्द जरुर होगा। अक्सर 28 मौतें 22 बीमारी 15 साल तक होगी।

मंगल खाना नं० 11

सिंधूर – लाल

ग्यारहवें मंगल है रखता, शहद के बर्तन भरे ।
शहद उमदा उस का होगा, फूल (बुध) हो जिस के खरे ।
फूल छोड़ो मक्खी (शनि) ही, जब नेक और उमदा है ।
दम मेंही ले आयेगी वह, शहद के बर्तन भरे ।

मंगल अब चीता होगा परन्तु अपने गुरु वृहस्पति के हाथ में हवाई ज़जीर में जकड़ा हुआ होगा । भाई बन्दुओं का कोई ज्यादा लाभ न होगा। और न ही वह इन को कोई सुखिया देख रहा होगा। यह सब राहु के जमाना तक (42 अधिक से अधिक 45) ही होगा। इस मन्दे समय में इस का अपना केतु (लड़का) न होगा मगर दुनियावी केतु (कुत्ता बगैरा) सहायक होगा ।

मंगल खाना नम्बर 12

बुलन्द आवाज – हाथी का महावत

मंगल १२ सुख का राजा, घर गुरु परवेश हो ।
जन्म कुटिया या कि जंगल, या ही वह दरवेश हो ।
शेर गरजे हाथी ढरके, बिजली कड़के धमकती तलवार हो ।
खून खालिस–धन शाहना, सबका माना, दमकता परिवार हो ।
मंगल १२ गुरु हो दूजे, आसमान से पाताल ।
दो शेरों से गूजें गुबंद, हाथी छिपे हों जा गारॉं ।
केतु तीजे–मंगल १२, मच्छ मुआवन दोनों तारां ।
साल २४ में उत्तर हो, या लड़का जब पहला हो ।

कुण्डली में राहु अब बिलकुल ही चुप होगा और न ही वह कोई बुरा फल देता होगा बेशक किसी भी घर में

बैठ रहा हो क्योंकि महावत अब हाथी के ऊपर या हाथियों के तबेला में खुद हाज़िर होगा।

बुध शक्तिमान

बुध अकेला आकाश का चक्र, निर्पक्ष निर्तेप होता है ।
घर २–४ या ६ में बैठा, राज योगी हो जाता है ।
घर तीजे या ८ में होवे, मदद रवि को देता है ।
९ ता १२ या दूसरे पहले, शनि को प्रबल करता है ।
घर पक्का जिस ग्रेह का होवे, बैठा वहाँ वही बनता है ।
७ वें घर में पारस होवे, ग्रह साथी को तारता है ।
९–१२–८–३ में बैठा, कोढ़ी धूकता होता है ।
घर पहले होवे घूमता राजा, परिवार रवि ५ करता है ।
सिर का ढाँचा या दाँत हो उसके, अगला सिरा नाक होता है ।
रफतार आवाज हो नाडे
या गर्दन, मनतकी हाथ भी होता है ।
शरम हया तजीम जो खाली, अक्ल सुराख भी चलता है ।
हिसाब सुभाऊ जो जाती
है उसका, फैसला बुध का होता है ।
शनि वृहस्पति १२ राशि, बुध से दोनों चलते हैं ।
बुध दबाया हो या मंदा, दोनों निष्फल जाते हैं ।

****

बुध खाना नं० 1

आम साधारण हालत- माँ - धी- जुबान - सिर का ढाँचा आकाश का चक्कर औरत के टेवे में अब बुध मानिदं सूर्य उत्तर होगा। और पैदाइश भी - दिन (सूर्य के बाद मगर सुबह की तरफ होगी।)

पहले घर का बुध है राजा, घूमे फिरता दर बदर ।
चशम तोता – अकल खोट, मंदा हो बुढापा, बचपन ।
तबला उमदा राग मंदा, हमचू मान दीगरे ।
रंग काला गर हो उसका, पानी में पत्थर तरे ।

बहैसियत तख्ते शाही बुध में पाप (राहु सुसराल - केतु औलाद) की मन्दी हालत का साथ होगा । और शनि भी अब बुध के इशारे पर काम करता होगा । जिसका सबूत - वह व्यक्ति खाने पीने वाला, शराबी कवाबी और अपने कर्म धर्म से लापरवाह होगा ।

बुध ख़ाना नम्बर 2

खड़ा अण्डा - लड़कों की सिफ्त की लड़की - मूँग - क़लम की निब - चोंच - साली

बुध से जब लड़की बनी, दूजा घर है सुसराल का ।
इज़्जत जहाँ दो की इकट्ठी, जानोज़र और माल का ।
मौत गूँजे आठवें घर, पाताल खाना 6 ही है ।
9 में हारे – 12 गाले, तारता बुध 2 ही है ।
शान राजा राग उमदा, जब अकेला घर में हो ।
नज़र इसकी आगे आवे, सोना (गुरु) लोहा (शनि) भस्म हो ।
पीछे इसके हो न कोई, न ही आगे ठहरता ।
बुध को माना खाली ग्रह है, फाँस है वह ग़ज़ब की ।
घर 8 वें गर शत्रु आवे, फाँस बुध का मन्दा हो ।
धन दौलत सब को ही गाले, हीरा जल कर कलई हो ।
पिता मरे औलाद न आवे, कन्या से भरपूर हो वह ।
कुटुंब कबीला सारा पाले, थोड़ा सा मग़रुर भी हो ।
घर 8वां अगर खाली होवे, राज योग कहलाता है ।
बुध गिना लड़की है सबने, अब राजा हो जाता है ।
रंग सुनहरी क़ीमत गहरी, खड़ा अण्डा दरबार ।
काफिर करे बुध आस्तिक, शाहाँ दे परिवार ।

हर समय अपनी तबीयत को बदलने वाला होगा । राग व ज़बान दानी का मालिक अपनी माता के घर खुद अपने ही तान पर चलता होगा । जिसका बुध ग्रह चाली तबीयत के नियम पर बुरा हो वह खुद तो किसी तरह से भी सब्ज़ क़दमा (हर तरह से मनहूस) न होगा । मगर इसकी अपनी आँखों के सामने बुध का सब्ज़ ज़ार - धन दौलत और अपना ही ख़ानदानी परिवार बहुत कुछ जलता व बर्बाद होता होगा । वह खुद तो नहीं मरा होगा मगर लड़कियों की ज्यादती और सथियों की आहोज़ारी (मौतों) से दुखिया और मुर्दे से कम भी न होगा । मगर हजूम की मौत में भी जशन ही रखता होगा । बहर हाल धन दौलत के लिये उमदा मगर खुद पिता होगा तो पिता के हाथों से धन दौलत का असर मंदा ही होगा । मगर वह खुद किसी भी हालत में भी दिमाग़ी बीमारियों का शिकार न होगा । फिर भी अगर होगा तो लड़कियों की सेवा से इसका कल्याण होगा ।

बुध ख़ाना नम्बर 3 (घर का)

भतीजी - चमगादड़ - चौड़े पत्तों का दरखत - तिलस्मी भूत - शक्ति - जिसका साया न होवे - खुद अपने असर में किस्मत को जगाने वाला - बाण - दीमक - चन्द्र का उपाए।

बुध बैठा घर तीसरे, 9 वें घर उजाड़ाँ ।
खुद अंधेरा जंगल होवे, राख पड़े घर ग्यारहवां ।
बुध घर तीजे जब हुआ, जली अनोखी आँच ।
9 उजड़े 11 मरे, ग़रके 4 और पाँच ।
बुध गिना जो तीजे मन्दा, 11 रवि से डरता है ।
बोले खुद न बोलने देवे, उमर की रक्षा करता है ।
पापी ग्रह 7 वें हुये, बुध का पक्का घर ।
पिता की मिट्टी न रहे, खालू मामूँ घर ।

हर रोज़ फिटकरी से दाँत साफ करना आदमियों की बरकत देगा । अगर हकीम होवे तो दमा के मरीज़ों के लिए नायाब हकीम होगा । अँगूठे की तरफ की सिर रेखा की दो शाख़ी खुद टेवे वाले के लिये मन्द भाग होगी । और ख़ाना

नं० 8 की तरफ की दो शाखी दूसरों को तबाह करेगी । दरुस्त हालत सिर रेखा की सिर्फ सेहत रेखा की हद तक की लम्बाई होगी। अगर ऐसा न हो तो मन्दा और खड़कता बुध होगा । **जिसका इलाज़ फर्शी ज़मीन में पत्थर गाड़ना होगा** । जिसका रंग खाना नं० 9 या 11 के ग्रह के विरुद्ध न होवे । **इस पत्थर के नीचे पहले दूध से भिगोये हुये पलाह के पत्ते देने शुभ होंगे । या मकान के केन्द्र या पिछली दीवार में लाल (सूर्य) हाशिया शुभ होंगी ।**

अगर मंगल नेक हो तो उस घर में खुद बुध का अपना ज़ाती फल यानि लड़की, बहिन, बुआ बगैरा बुध की संबंधित चीज़े व खानदान बगैरा सब बिना रौनक होंगे । दूसरे घरों पर बेशक बुध का बुरा ही असर होगा ।

बुध खाना नं० 4

तोता – कलई – खड़ा अण्डा – बुआ – मासी

बुध चौथे कच्चा घड़ा, कोरा उमदा साफ
अरब करोड़ी लखपति, मारे अपना आप (खुदकशी)
धन का तों दरिया है चलता, जो समाप्त होता नहीं।
लड़की बैठी राज करती, दिल मगर होता नहीं।
बुध चौथे हो सूर्य 5, गुरु हो बैठा 9 वें अंग।
राज योग वह मर्द कहावे, बकरा जंगली साँप खावे ।
तोता सब्ज मैना का साथ, ठण्डा रहता (रेत) पानी बे हाथ ।
हीरा कीमती कुल जो तारे, धन दौलत परिवार हों सारे।
चन्द्र सूर्य हो 3—11, गुरु 9 में बैठा बुध चहारॉ।

बिल्ली से तोते का दिल मुर्दा होगा। या राहू के संबंध से बुध खुद मुर्दा होगा। ज़रा सी ठोकर से कच्च घड़ा स्वयं टुकड़े होगा। जिसके लिए सूर्य की अशिया का उपाए होगा। **दौलत के लिये वृहस्पति का उपाए मदद देगा।** कई बार सफर बिना कारण होगा और केतू के संबंध से बर्बाद ही होगा। धन दौलत तो उमदा मगर माता की उमर के लिए मन्दा होगा। अगर माता जिन्दा हो तो माता के हाथों से धन दौलत मन्दा होगा।

बुध खाना नम्बर 5

बाँस – फकीर की आवाज़ – आर्शीवाद –
दूध वाला बकरा पोती लड़का (सूर्य)
बिला तड़ागी मन्दा (बुध), गुरु मन्दा बिन ज्ञान (सूर्य) ।

बुध घर 5 वें जब हुआ, सब कुछ उमदा जान ।

बुध घर पहले 5 वें, सूर्य को परिवार (दायरा[1])
बारिश धन की हो रही, दिन न गुजरें चार ।
चन्द्र हो या नर ग्रह, बैठे 9, 3, 11वाँ।
बुध[2] आ निकले पाँचवे, बाबे पोते ताराँ ।

अपनी औरत और खुद अपने लिये निहायत शुभ मगर पिता के लिये मन्द भाग होगा । पर किसी हालत में भी औलाद पर कोई बुरा असर न होगा। बल्कि बाकी 5 बचने वाले मकान की किस्मत का साथ होगा । या इसका घर गऊ-घाट होगा । आमतौर पर वह इन्सान्यित का मालिक ज़रुर होगा ।

बुध ख़ाना नम्बर 6

फूल – लड़की – मैना – खड़ा अण्डा –
सुख औरत 37 साल – दोहती

बुध 6 वें सिर श्रेष्ठ रेखा तो, तो राज योग भी कहते हैं ।
उस टेवे के ग्रह जो कायम, उत्तम फल वह देते हैं ।
घर 6 वें पाताल में, बुध शुक्र नहीं मिलते हैं ।
लड़की होवे जो उत्तर ब्याही, फल मन्दा ही लेते है ।
उमर छोटी अब बुध की होवे, घर 6 वें जब बैठता है ।
लाख उपाऊ करो न टलता, ग्रह फल लिखा इसको है ।

खुद बुध का ज़ाती फल बुध की जाती चीज़ों पर कभी मन्दा न होगा । खरबूज़ा देख खरबूजा पके । यानि तमाम कुण्डली में जब भी कोई ग्रह उमदा फल देने वाला होने लगे, बुध भी फौरन उसी के (ग्रह के) नेक फल का हो जायेगा मगर खुद खाना 6 की चीज़ों के लिये बुध का वही असर होगा । जो कि शुक्र का उस टेवे में हो । या जैसे ग्रह ख़ाना नं० 2 के होंगे । बुध अब वैसा ही फल देगा (सिर्फ नेक अर्थो के लिए) छापा खाना – दौलत पब्लिक, ईमानदारी का धन उमदा और नेक नतीजे देवे । अगर हकीम मगर लालची होवे तो बर्बाद होगा । पहली औलाद लड़की होगी झगड़े में हमेशा फतेह मन्द और कामयाब होगा । चन्द्र की जानदार चीज़ों का बेशक कोई फायदा व आराम न होगा । मगर चन्द्र की बाकी सब चीज़ों का पूरा फायदा और मदद होगी।

लड़की की उमर की मदद के लिये दूध से भरा बर्तन (मिट्टी का) खुले मैदान में दबाना शुभ होगा । जब कि शुक्र मन्दा हो और गंगा जल (दरिया- बारिश का पानी) खेती की ज़मीन एक बोतल में बंद करके (जिसका ढकना भी शीशे का हो) दबा देवें । जबकि चन्द्र भी मन्दा हो । अगर केतु भी बुध (लड़की) की बरखिलाफी पर रहे तो इ**सके बदन पर दाँए हिस्सा में चाँदी की चीज़** (बुध की अंगुली में अँगूठी बैगरा) कायम करें । बहर हाल बुध खुद अपने लिये (पेशा हुनर) कभी मन्दा फल न देगा ।

बुध ख़ाना नम्बर 7 (पक्का घर)

हरी घास - भोडी गाय - बकरी - आम माँ धी की हालत - दूसरी चीज़ों का ठप्पा या ढाँचा

बुध को 7 वें सबने माना, भरे आये खाली है जाना ।
पर जो साथी इसका हो, डूबता पत्थर तैरता हो ।
7 वें बुध को रेत भी माना, शुरु बुरा आखिर शाहाना ।
पहले 10 वें जो ग्रह आवें, बुध सातवें से नेक हो जावें ।
नेकी गो वह अपनी देवें, बुध फिटकरी रंगत लेवें ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 7

बुध 7 वें हीरा हुआ, तारे सब को जो ।
पर खुद अपने असर में, जंगल रेता हो ।

यद्यपि इस घर में बुध सब साथी ग्रहों को तारता है लेकिन मंगल का संबंध हो जाने से मंगल बद खड़ा होगा । बेशक मंगल और बुध दोनों अकेले इस घर में दुष्प्राप्य ग्रह हैं - किसी दूसरे ग्रह की मदद करते वक्त बुध का खुद ज़ाति फल बेशक मन्दा हो जाये मगर दूसरो के असर को तो वह ज़रुर ही नेक कर देगा - सिबाया चन्द्र ख़ाना नं० 7 के जिसका फ़ल दूध में बकरी की मींगने होगा । और खुद बुध ज़ाती हालत कल्लर की ज़मीन और रेगिस्तान हो सकता है जिसमें कि चिकनी मिट्टी (शुक्र) का नेक असर न होगा । या गृहस्थ रुखी और इसका जंगल चरिंदों से खाली होगा । या इसका खानदानी हाल कोई शानदार न होगा । बल्कि वहाँ अकल की बारीकी दूर होगी । यह सब बुध की उमर (34 साला) तक की गुज़रान होगी । यानि की - तमाम हाजिर ममल का व्यापार उमदा होगा । और दस्ती व हुनर मन्दी का काम शुभ होगा । बहर हाल क़लम में तलवार से उमदा ताकत होगी । गर न होगी, फौजदारी न होगी । अगर वह होगी तो फिटकरी से लिखे कागज़ की तरह वह इक आन में सफेद और नेक होगी । फिर भी होगी तो ज़बान की थूक से ही दुश्मन की गर्दन सर कलम होगी ।

बुध खना नम्बर 8

लेटा हुआ अण्डा - मुर्दा या मुर्दे के फूल - दीमक - बहन

बुध 8 वें जब आ हुआ, भट्टी रेत तपा ।
लड़की बहन सुसराल से, बेवा होके आये ।
रेत जली है जंगल की, जलता मंगल बद ।
लड़का मामूँ और माता भी, सफा चट हों सब ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 71

भेड़ चाल सब ग्रह करें, मन्दा बुध जो हो ।
बन्द साँस सब ही करें, बुध नाग बिल हो ।

उमर के हर आठवें साल फोकी खुशी का शानदार बाजा बजता होगा। मगर पौदे से टूटा हुआ मुर्दा फूल या मुर्दे पर चढ़ाया जाने वाला मन्दा फूल होगा । जिसमें राहु (सुसराल) केतु (औलाद) शुक्र (स्त्री तादाद) और खुद बुध (बहन - लड़की - बुआ - फूफी) व ख़ाना नं० 6 की चीज़ें (मात पिता के रिश्तेदार - मामूँ , मामूँ खानदान) सबका मन्दा हाल शामिल होगा । मगर मंगल से अब मंगल बद न होगा । बल्कि भाइयों को बुलन्द करे और मौत का दरवाज़ा बन्द हो। मगर वाल्दैन बर्बाद मौतें 14 साल हों। बुध ख़ाना नं० 8 बेवा बनाता है । अपने खून के संबंधित में जब तक नं० 2 खाली हो । लेकिन अगर नं० 2 में कोई ग्रह हो तो सुसराल खानदान में भी यही लानत देगा । जिसका सबूत - मकान में सिर्फ पौड़ियाँ सारी की सारी गिरा कर दुबारा बनाना होगा । कुछ सालों के बाद वह मकान भी दुबारा बनेगा। लानत से बचने का उपाय - **बुध के स्थान की पूजा शुभ होगी ।** वरना ख़ाली घड़ा बजता रहे (औलाद व मर्दों का बुरा हाल) । **बुध जब कुण्डली (जन्म, सालाना, माहवारी बगैरा) के ख़ाना नं० 8 में आवे - मिट्टी का कोरा बर्तन (गोल) मंगल की चीज़ों से भर कर शमशान या कब्रिस्तान या किसी उजाड़ व वीराने में दबाना शुभ होगा ।**

बुध ख़ाना नम्बर 9 (तिलसमी भूत)

तिलसमी भूत जिसका साया मालूम न होवे । चमगादड़ । सब्ज़ रंग । थथलाना । जंगल - सब्ज़े दरखतों का ।

जब तक बुध 9 वें बैठा, ग्रह न कोई बोलता ।
भूले से गर कोई बोले, बुध न उसका छोड़ता ।
साया तो है नज़र आता, बुध नज़र आता नहीं ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 72

मार पड़ती सब ग्रहों को, कोई छुड़वाता नहीं ।

आसमाँ ऊंचा तो बहरे फ़ना हुआ गहरा ।
बुध बढ़ा इतना कि दोनों में ही न ठहरा ।।

अगर ठहरा[9] तो तेहर साल, या 13 महीनें ही वह है ठहरा ।
साल 16, माह 16 दिन भी 16, है नहीं ठहरा ।
फिर भी ठहरा–न ही ठहरा, ठहरा ठंडे दिल से है ।
बहन, मासी, बूआ, फूफी, मारता सब ही को है ।
बुध 9 वें घर[3] सब पर प्रबल, चन्द्र से वह डरता है ।
जो रेते को तह में करके, बुध को चलता करता है ।
चन्द्र बैठा घर पहले में, बुध भी 9 वें बैठा हो ।
पानी वाले बादल चन्द्र, बुध कभी वाँ न मन्दा हो ।

अब बुध बेबुनियाद और गहराई का खाली कूँआ का महल होगा । ऐसे व्यक्ति की पैदाइश में भेद होगा जिसके ज़ाहिर करने में उसकी अपनी ज़बान में भी थथलेपन का सबूत होगा । मंगल या सूर्य या दोनों के साथ से लसूड़े की गिटक की तरह किस्मत का हाल होगा । (मन्दे शब्दो में) । और उमर का मंगल बद या खुद (बुध का ज़माना (13–15–17–34 वाँ साल महीना का दिन) न कभी नेक खुशहाल होगा । चमगादड़ के महमान आये । ज़हाँ हम लटके वहाँ तुम लटको– की तरह साथियों का हाल होगा । **जिसका उपाय नाक छेदने के अलावा न कोई और होगा** । गर फिर भी होगा तो चन्द्र की चलती चीज़ें या वृहस्पति के प़ीले रंग में रंगी हुई अशिया[8] से वह एक चलता दरिया होगा । (सब्ज़ रंग मन्दा होगा) जिसकी तूफानी हालत का न कोई इन्तहा होगा । या वह ज़ालिमों को फाँसी देकर गिराने के लिये तिलसमी कूआँ होगा जिसकी तह देखने के लिये सीढ़ी का न कभी इन्तज़ाम होगा । अगर यह सब कुछ न हुआ तो वह न दो जहाँ होगा । हालांकि बुध नम्बर 9 या 3 या किसी और घर का मन्दा असर उस साल या वक्त ही नेक होगा जिसमें कि वह अपने ज़ाती स्वभाव के असूल पर नेक हो जाये मगर जन्म के पहले साल या पहले महीने में उसका हीरा ज़हर से खाली न होगा । अगर होगा तो जन्म मरण का झगड़ा ही दूर होगा ।

बुध खाना नं० 1 (राशि फल का)

दाँत-खुश्क घास – शराब कबाब – नास्तिक – या भूत की खुराक – लेटा हुआ अण्डा – शनि का उपाय मददगार होगा।
सीढ़ीयाँ (मकान) ।

बुध का हुआ दसवें बसेरा, शनि करेगा फैसला तेरा ।
किसी तरह से अगर मिलेगा, चन्द्र अपनी दया करेगा ।
खुश्क घड़े में सबमें पानी भरेगा, शंख में वह मोती पैदा करेगा ।
शनि बिना कुछ भी न मिलेगा,
अगर कुछ मिला, सख्त धोका मिलेगा ।

लाख का महल, बारुद का पटाखा, साँप के ज़हरीले दाँत – हड़काये कुत्ते की दुम – शनि के इशारा पर काम करेंगे । जैसा कि शनि होगा वैसा ही बुध काम कर दिखायेगा । पिता की मर्जी हो सुख देवे न देवे। पिता का साया कोई विश्वासी न होगा । न ही खुद कोई नज़र का भरोसा होगा । गर होगा ज़वान का चस्का शराब कबाब का मन्दा मज़ा बाइसे तबाही होगा। पर उमर लम्बी का साथ भी होगा ।

बुध ख़ाना नम्बर 11

कच्च घड़ा – कन्ठी वाला तोता – गुरु (वृहस्पति) का उपदेश देवे – चौड़े पत्तों का दरखत – सीप – हीरा – फिटकरी – उलटा घर या जन्म वक्त जबकि इन्सान इस दुनिया में आते वक्त सर नीचे मगर सब को प्रणाम करता आवे । कुंभ घड़ा उलटा है बेशक, बुध 11 में हुआ ।

हर तरह से हो जो डूबा, उसको जिन्दा कर गया ।
ग्रह जभी सब खतम हों तो, बुध अकेला रह गया ।
तारने ही वह लगा जब, घर ही सारा वह गया ।
तारने बुध न किसी को तारे, तारता जब वह आखिर है ।
शनि वृहस्पति चन्द्र मारा, तारता आखिर बुध ही है ।

बुध बद करदार खोटे काम व मन्दी हालत का होगा जिसका असर उसकी पूरी उमर (लड़की की 17 मगर टेवे वाले की अपनी 34) तक साया की तरह साथ होगा । सब तरफ से बर्बाद और निराश हो जाने के बाद खास कर शनि वृहस्पति या चन्द्र मन्दे वाले को या इन तीनों से तबाह शुदा को आबाद व खुशहाल कर देगा।

बुध ख़ाना नम्बर 12 (नीच)

राशि फल का – केतु का उपाय मददगार होगा । अण्डे – खिलौने – भेड़ – गन्दा अण्डा – हड़काया कुत्ता
(आम टेवे में) मगर 12 में बैठा ख़ाना नं० 6 का फल देने वाला (ऊँच बुध) सिर्फ ज़ाती खून के लिये और सिर्फ जिस टेवे में शनि वृहस्पति मुशतरका हों **(केतु का उपाय खुद बखुद हो जाता है)** बाकी तरफ वही मंदा असर शनि 12 में बैठे बुध का कभी बुरा असर न होगा ।

बुध जब बैठा 12 में तो, रेत बरवाने लगा ।
12–6 से सब ही भागे, कुत्ता हड़काने लगा ।
आसमाँ से कुत्ता हड़का, भागता पाताल को ।
12 गाले – 6 भी मारे, साड़े .खाना 4 को ।
गर न मारे धन न मारे, मारता है जान को ।
बच सके न इससे कोई, नाक जूब तक साफ हो ।
दमदमें में दम नहीं अब, खैर माँगों जान की ।
बस खत्म अब हो चुकी, रफतार सब ग्रह चाल की ।
12 कुत्ता बुध जो हड़का, तारता केतु ही है ।
गर न घर में कुत्ता रखे, झपटता बुध राहु (बाज़) है ।

सिवाय शनि के जो अब साथ या साथी ग्रह बन रहा हो बुध नं०12 सब बाक़ी ग्रहों (जो साथ साथी नं० 12 या 6 में हों) को अपने बुरे असर की ज़हर देगा । मगर सूर्य (बन्दर) इसकी ज़हर को पहचान लेगा । और बचता जायेगा । हड़काया कुत्ता भाइयों का दुश्मन दौलत का राखा – दूसरों के लिये जोड़ेगा । लोगों में बे–एतबारी की ज़िन्दगी और तबीयत का हर लम्हा घूमने वाला होगा । व्यापार – सट्टा (बुध की हवाई ताकतों व चीज़ों का संबंध) भी मन्दा होगा । **नाक छेदना या गले में पीला धागा हर वक्त कायम रखना मुबारक । भले असर के लिये ज़रुरी होगा । वरना हर तीसरी बोली (3 दिन, 3 महीने, 3 साल और हर तीसरी गिनती अपनी उमर की या अपने तअल्लुक दारों की) पर निलाम की बोली खत्म कर देगा ।** चाहे सेठ का माल ही दे देवे मगर दलाल को किसी भी नमक हलाली का ख्याल न होगा । सिर्फ होगा तो अपने मालिक (पिता) को आखीर पर छोड़ देने का ज़रुर लिहाज़ होगा । या वह खुद उस घर से बाहिर होगा । बशर्ते कि जंजीर में जकड़ा हुआ न होगा । अगर होगा तो सर पागल होने की बजह से सब पर हमला

आवर होगा । **शुक्र की उमर (25 साला) से पहले शादी करना न भला होगा । चस्का ज़ुबान (पापी ग्रहों की संबंधित चीज़ों की खुराक) से परहेज़ शुभ होगा ।**

शनि ''देवता'' – ज़ाहिर पीर

शनि साँप का साँस भी मन्दा, इच्छाधारी पर होते है ।
मदद पे जिसकी हो वह बैठे, तारते इक दम दोनों है ।
शत्रु ग्रह जब बढ़ते जावें, जहर रंग शनि तब बढ़ते है ।
शुक्र बच्चा सह कभी न मारे, साँप[5] दो बच्चे[6] मारतें हैं ।
गुरु के घर कभी बुरा न करता, न ही पाप खुद करता है ।
पाप किया जो राहु केतु, फैसला धर्म से करता है ।
नर ग्रह जब हो साथ अकेला, .जहर शनि नहीं होता है ।
नर ग्रह होवें दो या ज्यादा, काबू शनि हो जाता है ।
तीन गुना घर पहले मन्दा, 2 गुना मन्दा तीसरे है ।
एक गुणा घर छटे में मन्दा, पर मन्दा नहीं सदा ही हैं ।
अबरु – छींक और बाल जिस्म के , हाथ दिखावा होता है ।
टक टक करते बोलना उसका, फैसलाकुन शनि होता है ।
9–7 वें – घर 12 बैठा, कलम विधाता होता है ।
खाली काग़ज़ हो घर 10 वें का, छठे स्याही होता है ।
घर 11 में लिखे विधाता, जन्म बच्चे का होता है।
किस्मत का हो हरदम राखा, स्याही पाप की धोता है ।

शनि का मन्दा फल दिये हुये खानों का उस वक्त ही नेक होगा जब वह राहु केतु के अपने दांये बांयें होने के असूल पर नेक स्वभाव हो जावे बमूजब वर्ष फल ।

शनि ख़ाना नम्बर 1 (काग रेखा)

हलक का कौवा – गन्दा कीड़ा – आग से जलना

शनि शुक्र घर पहले बैठे, काग रेखा कहलाती है ।
मालिक .खाह हो तखत हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है ।
धन दौलत सब चूल्हे धरके, उमर को लम्बा करती है ।
9 ही ग्रहों पर परबल होके, सब को निर्बल करती है ।
सूखी लकड़ी आग का कीड़ा, दोनों झगड़ा करते हैं ।

गर हो राहु केतु मन्दे, भस्म भण्डारा भरते हैं ।
घर पहले में तेल मिट्टी का, आग चौथे से लाते है ।
घर 7 वां 10 खाली होवें, मच्छ रेखा बन जाते है।
वरना वही चूल्हे पड़ी लक्ष्मी, भट्टी में भगवान ।

कामयाब डाकटर होगा (सामान शनि में) । ग़रीबी सब काम अधूरा । तालीम तो खासकर अधूरी होगी । काग रेखा के असर में बद – झठ – फर्जी बे बुनियाद खयालात बाइस मौत होंगे । मच्छ रेखा व काग रेखा दोनों इकट्ठी ही होंगी । शनि की मिय्याद (36 साला उमर) तक सब कुछ उड़ता जाये और हर काम में रौ स्याही हो । जिसम पर ज्यादा बाल हों तो तंगहाल होवे । बुध की मच्छरेखा के वक्त (बुध नं० 7) बहन की जगह नर बच्चा बदलता जावे । शनि किसी दूसरे ग्रह के साथ हो तो

शनि से मुराद उसका बाप होगी । मगर वृहस्पति या सूरज के साथ शनि से मुराद उसका बाप न होगी ।

हर एक मन्दा ग्रह इस टेवे में ही होगा । जिसके खानदान में पहले उमदा ग्रह का पूरा सबूत हो चुका हो जिसे वह बुरा ग्रह बर्बाद कर सके । काग रेखा वहाँ ही होगी जहाँ मच्छ रेखा हो चुकी हो । अच्छे ग्रहों की यह शर्त नहीं ।

शनि ख़ाना नम्बर 2

माश सालम जो बैवकत शादी त्यौहार पकते हों ।

शनि होवे जब दूजे बैठा, गुरु का हो दरबार ।
वकत नसीबा अपना अच्छा, अज़/या वकत मुखतार ।
धर्म मन्दिर का साँप ही होगा, ज़ाहिरा बुद्धु पर आक़िल होगा ।
गर न होगा ज़ालिम न होगा, अदल–रहम–इन्साफ ही होगा ।
खुद कभी न दुखिया होगा, होगा जब तक सुखिया होगा ।
खुद मरे न किसी को मारे, गर मारे सुसराल ही मारे ।
दूध पिलावें सब को तारें, दुश्मन इनके सब ही मारे ।

वृहस्पति और शनि दोनों का असर बराबर होगा । गुरु उमदा शनि खराब । हर दो हालत का जवाब होगा । भगवान से डरने वाला होगा । साधारण गुजारा होती रहे । भूरी भैंस शुभ होगी मगर दो रंगी स्याह या अकेली स्याह शुभ न होगी ।

शनि ख़ाना नम्बर 3 (राशि फल का)

कीकर – बेरी – नकद रुपया की कमी के लिये राशि फल जिस के लिये केतु का उपाय मददगार । जायदाद के लिये ग्रह फल का ।

शनि कुण्डली घर तीसरे पाया, पर बैठे नहीं चैन कर ।
ज़हर छोड़ी फूँक छोड़ी, छोड़ता है मालोज़र ।

जो न वाकिफ इस के होंगे, उन से वह बचता रहे ।
खून उसका भाई बंदे, सब खराबी दें उसे ।
यदि न दौलत उस ने रखी, बदली जाये जायदाद ।
जितना – जितना वह उजाड़ें, होगा वह हरदम आबाद ।
शनि हो तीजे चन्द्र दसवें, गर हों बैठे वहां कभी ।
ऊर्ध रेखा डाकू होवे, कूयें हो मन्दे सभी ।
ज़हर जो साँपों में थी, अपने लिये ही ज़हर हो ।
भय जो लोगों के लिये था, अपनी ही वह कहर हो ।

आखों के बीमारियों का हकीम होगा । दक्षिण के दरवाज़ा का मकान या इस के आगे पत्थर का असर देने का सबूत होगा । नहीं तो नकद माया के इलावा बाकी हर तरह से शनि का उत्तम असर होगा। घर में केतु (कुत्ता) नकद दौलत के लिये शुभ होगा । लेकिन घर में पानी (चन्द्र) ये खुद अपनी मौत होवे । चोर डाकू भी बने तो भी दौलत के लिये निर्धन, बेहुनर और मनद हाल होवे । शनि नं. 9 को नं. 3 से दुश्मन ग्रह देखता हो और उधर मकान अंधेरे की पिछली दीवार तोड़ कर रोशनी हो जावे तो खुलने के पहले साल पिछली तरफ के मकान में से नये निकाले दरवाजे या ताकी की तरफ से तीसरा मकान बर्बाद और तबाह होगा । फिर तीसरे साल नये दरवाजे निकालने वाला घर बेआबाद होगा । **ऐसे व्यक्ति को बगैर तखतों के सिर्फ खाली चौकाठ घर में खास कर छत पर रखना स्त्री व लक्ष्मी के लिये मन्द भाग होगा।**

शनि खाना नं. 4

मकान – काले कीड़े – दूध का छींटा मददगार होगा ।

शनि हो चौथे घर माता के, नसल मामू नहीं छोड़ेगा ।
कुल अपनी को डूबोता जावे, खुद भी गोता खायेगा ।
चन्द्र दूजे या कि तीजे, शनि भी चौथे बैठा हो ।

पुत्री रेखा अब उत्तम होगी, सुख सागर सब लम्बा हो ।
चन्द्र शनि साथी होवें, दूध ज़हर मिल जावें दो ।
धन खजाना मन्दा होवे, शुक्र फल भी गन्दा हो ।
शनि 4 में गुरु हो ही तीजे, ऊध्र देखा कहलायेगी ।
सब को लूट खसूट इतना, जायदाद बन जायेगी ।

पानी का किनारा या कुयें आदि का साँप और खूनी मल्लाह होगा और खुद अपनी जायदाद जद्दी को कोयले ही कर के छोड़ेगा । **साँप को दूध पिलाना मुबारक होगा ।** जिस से चन्द्र का असर प्रबल हो जायेगा । **कुएं में दूध गिराने से चन्द्र का उत्तम होगा ।** औरत की कबूतर बाज़ी से शनि का असर मन्दा होगा। छाती पर कम बाल हों तो वे एतबारा ही होगा।

शनि खाना नम्बर 5

सुरमा स्याह – मूर्ख लड़का

शनि है पाँचवें लड़के खाता, या दुश्मन वह मकानों का ७
बाकी सब फल उतम होवे, शनि बृहस्पत दोनों का ।
केतु मालिक लड़कों का तो, राहु वली मकानों का ।
12 – 24 जो प्रगट हो, दूजा शुरु निनावन का ।

शादियाँ 7 तक होंगी । औलाद बहुत होगी । मगर आखिर में न होगी। भोला बादशाह। अकल का खाह अंधा मगर गाँठ का पूरा होगा । औलाद बर्बाद होगी । गर किसी तरह अपने ही अण्डे खाने वाली सपनल से कोई लड़का बचा भी रहे तो 48 साला उमर तक मकान या औलाद (वह भी सिर्फ एक लड़का) में से सिर्फ एक चीज़ कायम रहेगी । औलाद को तो सोने को लोहा कर देगी। अगर जिस्म पर बाल ज्यादा हों तो बेशक

चोर – फरेबी भी बने। फिर भी बद नसीब और मंदा हाल होगो। बुध का उपाय मददगार होगा।

शनि खाना नं. 6 (राशि का फल)

कौआ – राहु (काला कुत्ता) का उपाय मददगार होगा वास्ते ज़हमत बीमारी। बुध का उपाय वास्ते कारोबार मदद करे या मवेशियों की मदद के लिये बकरी शुभ होगी ।

शनि दूजे में नेक था, छठे हुआ बदनाम ।
शुक्र केतु भी मरे, सब मन्दे उस के काम ।
पापी मन्दे पाप तक, उमर 42 हो ।
कसम पावे वह पाप की, चाहे रवि भी 12 हो ।

24 साल लड़के पैदा हों जबकि शादी 28 के बाद हो। हुनरमन्द – अक्लमन्द। माँ पर घी ——थोड़ा थोड़ा । माड़ा पुत्त व खोटा पैसा फिर भी कभी न कभी काम आ ही जायेगा और ज़माने की सब स्याही धो देगा। जबकि वर्षफल में राहु ऊंच घर (3, 6) आ जावे । अगर शादी 28 से पहले ही हो तो शनि बुध की मय्याद तक माता व औलाद सब सफाचट कर दे। मगर लावलदी का हुकम नहीं लगा देगा। केतु (औलाद) की बरबादी को रोकने के लिए पूरा स्याह कुत्ता मददगार होगा । खाना नं. 2 में अगर शुक्र या चन्द्र हो तो शनि गाय, स्त्री, माता और धन पर भी बुरा हमला कर देगा।

शनि खाना नम्बर 7 (ऊंच)

स्याह गाय – सुरमा सफेद – बीनाई लाल या सफेद व लाल – गाय से शुक्र का असर मन्दा मगर स्याह या सफेद व स्याह दो रंगी गाय बुरा असर न देगी।

शनि हो सातवें 7 गुणा, धनी हो दौलतमन्द ।
ज़र पाये वह राज से, हो खर्चा लड़की 5 ।
परिवार बढ़े दौलत बढ़े, बढ़ेंगे शुक्र साथ ।
शुक्र (औरत) जिस दिन खतम हो, शनि होगा चुपचाप ।
शत्रु ग्रह 3–5वें आवें, सेहत मंदी पिता जला दें ।
साथी या मुशतरका होवें, शनि हो मन्दा शुद भी रोवें ।
सूर्य अगर हो चौथे बैठा, हिजड़ा बुजदिल होता है ।
नहोराता खाह आधा अंधा, टेवा ऐसा होता है।

जायदाद जद्दी (विरासत) तो बेशक इतनी न होगी मगर मासिक आय हज़ारों रुपयों की होगी। हुकमरान, दौलतमन्द, अक्लमन्द, (आँख की होश्यारी) दौलत 24 साल। हथियार का डर 27 साल उमर तक होगा। कतरे–कतरे से शरबत का कड़ाहा और अम्बार कर लेगा। परोपकारी तो धन कारामद वरना दुष्ट भाग्यवान होगा। मगर

धन का दूसरा दर्जा होगा। या आखिर बिन वर्ते ही चल जायेगा। न्यासरी माया होगी। जब शराबखोरी का दिलदादा हो। **मकान की दहलीज़ पुरानी लकड़ी की होवे और जन्म से पहले की जो लगी थी वही कायम रहे तो शनि नं. 7 का नेक फल कायम रहेगा । वरना शनि नं. 2 का फल देगा ।**

धनवान डाक्टर व हकीम होगा, बेशक पेशा हिकमत से बे बहरा हो। इन्जीनियर भी हो सकता है (बाकमाल)। अगर शनि सोया होवे और अपना तमाम ही दौरा सोया रहे तो पोते के जन्मदिन से सब कुछ ही काल माया या वीरान होवे। **जिस का उपाय बज़रिया मंगल या शहद शनि को जगाना होगा।**

शनि ख़ाना नम्बर 8 (पक्का हैड क्वार्टर)

बिच्छू - मौत का घर - कनपटी - पुड़पुडी

शनि है आठवें हैडक्वार्टर, घर तो मंगल का ही है।

जैसा मंगल हो शनि भी, असर मुसावी दो का है।
एक अकेला आठवें होवे, शुद कभी मन्दा न हो ।
मन्दा होगा मंगल से, या चन्द्र भी वहाँ बैठा हो ।

अकेले शनि का अब शनि की चीज़ों पर कभी मन्दा असर न होगा। **चन्द्र का उपाय करने से पता चलेगा कि शनि जो अपने हैड क्वार्टर में बैठा है** किस नीयत और तबीयत का है। कनपटी और पुड़पुड़ी भी बात का फैसला कर देगी। छाती पर ज्यादा बाल हों तो उमर भी गुलामी में रहे।

शनि ख़ाना नम्बर 9 (राशि फल का)

टाहली - फलाही - स्याह व पुरानी किस्म की लकड़ी वृहस्पति का उपाय मददगार होगा । बहैसियत त्यागी गुरु ।

9वें शनि सब से बली है, सिर्फ बुध से डरता है ।
बुरा यहाँ वह कभी न करता, तीन पुशत तक चलता है ।
60 साल तो उमदा होगा, बल्कि उमर हो सारी ही ।
शर्त वृहस्पति[1] इतनी करता, होवे पर उपकारी भी ।
मंगल यदि हो चौथे बैठा, शनि जलावे 9वें को ।
फूँक – फूँक कर दुनिया सारी, खुद प्लेगी चूहा हो ।

मकानों व मुसाफिरी के सामान की शिक्षा देने में कामयाब इन्सान होगा। हमदर्द व संबंधी होगा । घर में गढ़ा हुआ पत्थर अच्छा फल देगा। अब चन्द्र की खाना नंम्बर 3 की दृष्टि का कोई बुरा असर न होगा। मगर राज दरबार की पहाड़ पर कछवे की चाल चढ़ने वाला होगा । और पेशानी या पुश्ते पर ज्यादा बाल हों तो मन्द भाग होगा । अगर खुद बदला लेना नहीं तो औलाद को बदला लेने की नसीहत कर के मरने वाला हो तो मन की दलीलें होंगी । घूमता पत्थर (Rolling Stone) होगा।

जबकि शनि पापी ग्रह बैठा होवे जिसका सबूत राहु केतु का किसी न किसी तरह से आ मिलने का होगा । आमतौर पर भारी परिवार व जायदादों का मालिक होगा स्त्री भाग (शुक्र) में सब तरह से उत्तम मगर चन्द्र (माता) भाग में मन्दा होगा । जिसके लिये भी वृहस्पति का उपाय सहायक होगा । या माता पिता के बैठे (जो अमूमन लम्बी उमर के होते हैं) न कभी मन्दा हाल होगा । मगर बाद में पत्थर का सहारा ज़रुर काम का होगा । वरना साँप की तरह उसे हर एक लकड़ी से मार देने को होगा । नीज़ शनि ख़ाना नं० 3भी देखें ।

शनि ख़ाना नम्बर 1 (पक्का घर - घर का)

ग्रह फल का - किस्मत को जगाने वाला - मगर मच्छ - साँप - शनि के ज़ाति असर का घर ।

10 वें शनि हो जब आ बैठा, शेष नाग सिंहासन हो ।
नज़र ग्रह सबकी का मालिक, उमर बढ़ाता पिता की हो ।
वृहस्पति की करवाये सेवा, दुनिया गुरु को पूजेगी ।
राज सभा सब शादी अन्दर, पहले गणपति मानेगी ।
खुद शनि उत्तम होगा, धन दौलत शाहाना हों ।
हथियारों से हत्या करनी, वर्ष 27 मन्दे हों ।

जन्म कुण्डली में ख़ाना नम्बर 1 का शनि ज़ैल सालों में चारों तरफ मार करता है और शनि वृहस्पति मुशतरका - फकीर की झोली का असर देगा । जिसका फैसला ख़ाना नं० 1 के ग्रह करेंगें । और कुण्डली में विशेष ही होगी ।

3-9-15-21-27-33-39-45-51-57-63-69-75-81-87-93-99-105-111-117- एक जमा सिफर = 1 या दसता द्वार आखिरी मैदान। सब की किस्मत गणेश जी की तरह उत्तम फल देगा । पिता का कम

से कम 48-24 साला उमर तक साथ होगा - चारों तरफ को मुड़ जावे । सब ग्रहों की नज़र का मालिक होगा ।

शनि ख़ाना नम्बर 11 (घर का)

ग्रह फल का – लोहा – बहैसियत हलफ़ उठाये हुये सिर्फ राहु (सुसराल) केतु (औलाद) के कामों या किस्मत के नतीजा की किस्मत का मालिक ।

11 शनि है बैठता, वृहस्पति के दरबार ।
हलफ गुरु से पहले लेवे, फैसला हो दर बाद ।
खुद शनि अब याद करके, दूध अपनी माता का ।
खुद तरे सब को वह तारे, ज़हर है नहीं उगलता ।
राहु केतु जैसे होवें, फैसला इन पर करे ।
तारें चाहे वह मारें मरज़ी, नाग रक्षा ही करे ।
मिय्याद ऐसी इनकी होगी, साल 48 ही तक ।
खुद शनि फिर मदद देगा, साल 84 ही तक ।
ग्रह उत्तम को वह बढ़ा कर, जल्दी जल्दी खुद बढ़े ।
सिर्फ बुध से है वह डरता, ता न हो घर तीसरे ।
शनि 11 खुद घड़ा है, बुध मगर उलटा घड़ा ।
सिर्फ इतना ही नहीं बुध, घूमता कच्चा घड़ा ।
शनि वृहस्पति 11 राशि, बुध से दोनों चलते है ।
बुध दबाया हो या मन्दा, दोनों निष्फल जाते है ।

अगर मूँछ दाढ़ी के बाल कम हों तो खुद पैदा करता जायदाद न होगी – तो केतु (औलाद) की आमदन नष्ट होगी । दृष्टि ख़ाना नं० 3 अगर खाली हो तो शनि सोया हुआ होगा । भरा हुआ पानी का घड़ा तो किस्मत का बेशक होवे परन्तु बरतावा तो गुरु वृहस्पति ही होगा । यानि इसकी किस्मत का फैसला वृहस्पति के हाथ होगा । अगर वृहस्पति भी

निकम्मा हो या पिता, बुजुर्ग, गुरु या पिछला साल बूढ़ा कोई साथी न हो तो वृहस्पति का उपाय सहायक होगा । ख़ाना नं० 3 का ग्रह किस्मत को जगाने वाला होगा । जिसके द्वारा वह चालाक आँख और धोखे से धन कमावे । विभिन्न स्त्रीयों के सम्बंध से एवं शराब खोरी से शनि का नेक असर बुरा होगा । चन्द्र की सहायता या पूजा से (चाँदी की ईंट) धनवान होगा।

शनि ख़ाना नम्बर 12 (गृहस्थी – परिवार)

मसनूई ताँबा – मछली – तख्तपोश – बादाम – ज़मीन में लाल फूल दबाना (जब सूर्य नं० 6 हो) शुभ होगा ।

शनि बैठा जब आ घर 12, राहू केतू नहीं बोलते हैं ।
कागज़ उन्हों के हुये हैं फ़र्जी, मदद बुध की ढूँढते हैं ।
बुध खुद अब कहीं हो बैठा, बैठता चुप चुपाती है ।
शेष नाग प्रबल है बैठा, खेलता वह परिवार में है ।
खेल तमाशा अच्छा होवे, अँधेरा जब तक न घटे ।
सूर्य बैठे न आ जावे 6 वें, न पिछली दीवार फटे ।
मच्छ मुआवन दोनों रेखा, पदम छुपा भी पाया हो ।
झठ, शराबी खैर वह ही, असर शनि का पाया हो ।

गृहस्थी साथी कीड़ों के भवन की तरह बड़ा कबीला बन जायेंगे और अपनी अपनी खुराक साथ लायेंगें । सर पर बोदी हो तो वह दौलतमन्द जरुर होगा । जब तक सूर्य नं० 6 में न हो, कोई उपाय ज़रुरी न होगा । अगर अँधेरा हटा कर (पिछली अँधेरी कोठरी जो मकान में दाखिल होते वक्त दायें हाथ की स्याह पोरी होती है आखिर पर) रौशन हो चुकी हो, तो उस **मकान के दक्षिण, पूर्व कोने में (मकान कुण्डली ख़ाना नं० 12) बादाम तह ज़मीन में दबाना शनि को कायम रहने में**

सहायता देगा । सब से बेहतर तो है यही कि पिछली दाँई कोठरी को पूरी स्याह ही रखा जाये ।

राहू – रहनुमाये ग़रीबाँ (मुसाफिराँ)

राहू मालिक है लहर दिमागी, बिजली कड़क भी होता है ।
रंग शाम या नीला उसका, काम चमक के करता है ।
शनि मंगल का हाथी होवे, पदम, शरम भी मिलता है ।
चन्द्र को यह मध्यम करे तो, ग्रहण सूर्य का होता है ।
गुरु के साथ धूआँ हो सकता, बुध को उड़ता करता है ।
रहे शुक्र का शत्रु हरदम, सरदार केतु हो चलता है ।
भूंचाल आतशी जिसदम होवे, खून अचानक करता है ।
गरमी सूर्य से और भी बढ़ता, ठण्डा चन्द्र से होता है ।
हड्डियाँ पुश्त या सीना मर्द की, हाथ के नाखुन होता है ।

आँख चशम आवाज़ हो हाथी, *फैसला कुन राहू होता है ।*

शमशान[१०] बैठे आसमान (नं०12) है उड़ता, ऊँच पाताल (नं० 6) में होता है ।
मंगल कुण्डली बैठे 12, *समाप्त राहु हो जाता है ।*
असल बैठक गुरु – मंदिर (नं० 2) होवे, 11 गुरु को मारता है।
सूर्य को घर 5 वें तारे,
कस्म पाप चौथे करता है ।

****

राहू ख़ाना नम्बर 1 (राशि फल का)

ठोड़ी – नाना – नानी । सूर्य का उपाय सहायक होगा । ग्रहण दो साल । महादशा 18 साल

राहू पहले तख्त पर तो, *तख्त थर्राने लगा ।*
सूर्य बैठा जिस हो घर में, *ग्रहण वाँ आने लगा ।*
बिगड़ा ख्याल उसका धन करज़ा कर दिया,
राहू चढ़ा दिमाग पर चरखा चरखा उलट गया ।
साल मन्दे 20 – 18, *शर्त यह राहू की है ।*
दान रक्षा सबने माना, *सूर्य की चीज़ों से है ।*

सामने घर का हाल (राहु की चीज़ों में) मन्दा होगा । तबदीली होगी मगर तरक्की की शर्त नहीं । शुक्र, बुध या दोनों में से कोई एक भी उमदा होवे तो राहु के ग्रहण या तबाही के नुकसान से बचाव रहेगा । मगर फरज़ी अँधेरा फिर भी होगा । खुद अपने दिमाग़ की शरारत बाइसे खराबी हो । **बिल्ली की ज़ेर (झिल्ली) गन्दगी कपड़े में शुभ होगी ।**

राहू ख़ाना नम्बर 2 (ग्रह फल का)

हाथी के पाँव की मिट्टी – सरसों – सुसराल – कच्चा धूँआ । जब शुक्र के खिलाफ चले चाँदी की गोली मददगार होगी ।

राहु केतु दूजे 8 वें / 8 वें दूजे घूमती ग्रह चाल हो ।

सोना मिट्टी / मिट्टी सोना दोनों ढंग का हाल हो ।।

झुलता पंघूड़ा किस्मत, *ठहरता वह है नहीं ।*
रोके गर, तो चन्द्र रोके; *रुकता घर वह है नहीं ।*

राजा हुकमरान होवे पर न मन्दी गुज़रान होवे । बल्कि उमद लम्बी का ज़रुर साथ होवे । अगर धर्म मन्दिर भी हो तो हाथियों का स्थान और हाथियों की खुराक देने की किस्मत व हिम्मत का साथ होगा ।

राहू ख़ाना नम्बर 3 (ऊँच)

तेन्दुआ ज़बान–जौ – रिश्तेदार – स्याह रंग – हाथी दाँत शुभ न होगा।

राहू तीजे त्रैलोकी के, *शत्रु दुश्मन नाश करे ।*
धन दौलत हो औरत सुखिया, *रवि आयु प्रकाश करे ।*
तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं ।

अधिक जायदाद वाला होगा । दुश्मनों पर तलवार होगा । अगर कोई भी ग्रह साथ या साथी होवे तो (औलाद) केतु का हाल मन्दा होगा । जिसका बुरा असर 34 साला उमर तक होगा । अगर सूर्य बुध मुश्तरका भी राहू के साथ ही नं० 3 में हों तो राहू का सूर्य (राज दरबार खुद इसका जिसम) पर तो बुरा असर न होगा मगर इसकी बहन का सूर्य (राज दरबार बगैरा) मन्दा व बर्बाद होगा । **जिसके लिए चन्द्र का उपाय बहन को सहायक होगा ।** नीले आसमान व नीले समुन्द्र की दरमियानी जगह के सब दुश्मनों को कैंची की दो शाखी की तरह दबा कर एक ही दम में काट देगा । गहरी हथेली का मालिक या जायदाद रुपया जमा छोड़कर मरने वाला होगा । मगर बिना पुत्र के न होगा ।

राहू ख़ाना नम्बर 4

खवाब या खवाब का ज़माना – धनिया – सोया दिमाग

राहू केतु घर चौथे, *माता चन्द्र से डरते हैं ।*
तारे उसे न तारे मरज़ी, *कसम पाप की करते हैं ।*
ग्रहण हुआ जब माता घर में, *माता खुद शरमाती है ।*
निसफ उमर तक पानी डूबे, *धन दौलत भी डरती है ।*
पहली उमर गर मन्दे होवें, *दूजे चक्कर वह अच्छे हैं ।*
ग्रहण गुज़रते[१] दोनों भाई, *लेखा पूरा करते हैं ।*

इल्मो अकल का तो ज़रुर साथ होगा और फायदा लेगा मगर जद्दी जायदाद (चन्द्र का असर – ज़मीन खेती वगैरा) कम ही होगा । राहु का बुरा समय फिक्रो ग़म में बरबाद होगा जिसके दूर होते ही सब कुछ बहाल होगा । मन्दा

ज़माना मानिन्दे ख्वाब होगा।

राहू ख़ाना नम्बर 5

छत - औलाद का सुख व तादाद उमर

राहू गिना गर धूँआ है भट्टी, घर 5 वें हो दिया न बत्ती ।
21 साला जो लड़का होवे, बाबा रहे तो न पोता होवे ।
उमर 42 एको होवे, गर न होवे सुसराल न होवे ।
सूर्य अगर वाँ पहले होवे, फल राहु का उमदा होवे ।
चन्द्र ही गर साथी होवे, भूचाल राहु का ठण्डा हो ।
गर न होवे माता न होवे, गर होवे मच्छ रेखा[1] होवे ।

ब्रह्म जैसा व आबाद होगा । या लक्ष्मी पर हाथी का साया होगा । चन्द्र के इलावा अगर मंगल शनि का साथ हो जाये या सूर्य ही आपसी दीवार के साथ के घर होवे तो तादाद औलाद पर बुरा असर न होगा । बड़ा भाई मच्छ रेखा का मालिक । उससे छोटा मगर खुद से बड़ा औलाद में सिफर होगा । और खुद वह 5 लड़कों का बाप होगा । सबके सब बड़े भाई से लेकर नीचे औलाद तक शाहाना हालत और राज योग होंगे **बशर्ते कि राहु (दहलीज़) उमदा बल्कि चाँदी की (सारी दहलीज़ के नीचे चाँदी की पत्तरी जो किसी तरफ से भी गोलाई पर न हो) मौजूद हो ।** और दक्षिण के दरवाज़ा (बड़ा दरवाज़) का साथ न हो । नहीं तो राहु का वही कच्चा धूँआ होगा जो इसका जरुर धूँआ निकाल देगा । या ज़ेरबार करके तबाही का धक्का लगाता जायेगा ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 91

वर्षफल में राहु नं० 5 का मन्दा असर अगर उसकी औलाद पर न हो तो पोते पर ज़रुर मन्दा होगा ।
अगर सूर्य या चन्द्र या मंगल .खाना नं० 4-6 या 12 में हो तो तादाद औलाद नर 5 से कम न होगी ।

राहू ख़ाना नम्बर 6 (ऊंच)

काला कुत्ता (पूरा काला व स्याह) किस्मत को जगाने वाली ।

राहू 6 वें ऊंच है, केतु ऊंच है 12 ।
फल दोनों का है वही, जो शनि घर 12 ।
पापी ग्रहों का मेल है, कुत्ता पूरा काला ।
पाताल नीचे से वह परबत होवे, 9 ग्रह राशि 12
तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं ।

खुद अपनी व सुसराल की किस्मत मानिन्द कौसो क़ज़ाअ होगी । दुश्मनों के मुकाबला में वह निहायत ही गहरी पाताल की तह को फौरन एक निहायत ऊंचा पहाड़ कर दिखावे । दिमागी संबंध में राहु का फल उमदा होवे । मगर इसके घर में चचा उठे भतीजा बैठे । दीवार खाना क़ायम रहे की तरह बीमारी का साया ज़रुर रहे । जब तक कि वह मंगल से दूर रहे । **स्याह शीशे या सिक्के की गोली (गोल चीज़) शुभ होगी।**

राहू ख़ाना नम्बर 7 (राशि फल का)

सट्टा का व्यापार - शनि का उपाय सहायक (नारियल) बुध - शुक्र का तराज़ू ।

राहू 7 वें तुला भी उलटे, औरत मन्द परिवार।
दौलत का वह राखा होवे, चाहे दोस्त व यारां ।
शनि देव ही रक्षा करेंगे , शत्रु मरे दरबारां ।
मच्छ रेखा फल उत्तम देवे, बुध शुक्र 2-11 ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 92

खुद अपना खून माता पिता व औरत बगैरा गृहस्थी साथियों (जानदारों) का मन्दा असर होगा । जिसके ज़ेर साया रहे वही वृक्ष बर्बाद हो । या लावल्द होवे । केतु कुत्ते का तअल्लुक बाइसे तबाही होगा । वरना गिनती का मालदार होगा । लेकिन अगर पेशा भी राहु का होवे तो दर जहाँ ही न होगा । (36 साला उमर तक)

राहू ख़ाना नम्बर 8 (पापी हैड कव्वाटर में)

मरज़ झूला – मालीखौलिया – दीवार की अंगीठी का धूँआ
राहू घर 8 वें में होवे, घोड़ा चढ़े घर छता ।
किस्मत की दो पलटी होवे, दीवारें खड़ी बिन छताँ ।
28 साला गर मंगल आवे, या शनि खु फेरा पावे ।
सोया नसीबा पकड़ जगा दे, घर उजड़े आबाद करा दे ।

खुद ज़ाती खयाल के मन्दे नतीजे व खोटे काम हों । मौतें 5 साल साथ रहें । घूमती ग्रह चाल हो । **चाँदी के चौकोर टुकड़े ¤ के उपाय से** हाथी (राहू) अपने तवेला (हैडक्वार्टर) से बाहर आकर अपनी नेकोबद तबीयत व नीयत का सबूत देगा दक्षिण का दरवाज़ा या दक्षिण की दीवार में चूल्हा (धूँआ) मन्दा साबित होगा । (सबूत देगा) लेकिन इसमें सबसे बड़ा या स्याह रंग होवे तो नेक फल देगा ।

राहू ख़ाना नम्बर 9 (नीच)

दहलीज़ - नीला रंग - सूर्य ग्रहण (राज दरवार) पूरा और मन्दा और चन्द्र के लिये बिलकुल ग्रहण होगा । चण्डी से ऊपर की बीमारियाँ ।

राहू 9 वें जब हुआ, चुप वृहस्पति हो ।
धर्म छोड़ खर्चा करे, औलाद में देरी हो ।
उमर 21 लड़का मिले, हो बाद 42 दो ।

पोता जब 21 करे, वृहस्पति वहाँ न हो ।
भाई बहन से गर लड़े, मन्द नसीबा हो ।
चूल्हे अग्नि उस बुझे, कच्चा धूँआ हो ।

पागलों को दम में सलाह देगा । मरते को फूँक से ही हटा देगा । हक़ीकी भाई बहनों से इत्तेफाक पर बरकत होगी । वरना बिना सन्तान का पूरा सबूत होगा । कर्म धर्म से दूर हो तो औलाद निकम्मी, नालायक या न ही हो मगर शनि के संबंधित कारोबार से बुरा असर न हो ।

राहू खाना नम्बर 1 (शक़्की)

गन्दी नाली – गरकी – गन्दे पानी का गढ़ा (तालाब)

घर 10 वें में तीन ग्रह ही, चलते शनि से हैं ।
राहू केतू और बुध तीसरा, तीनों शक़्की हैं ।
घर 10वें में राहू बैठा, चन्द्र होवे चार ।
सर उसका फट जायेगा, मन्दी सोच विचार ।
गर टेवा कोई अन्धा होवे, हाथी अन्धा हो ।
गैरों से वह डर कर भागे, मारता कुल खुद अपनी हो ।
शनि अगर वाँ उत्तम होवे, हाथी शेर शिकारां ।
दुश्मन उससे कोसों भागें, उमदा हो गुलज़ारां ।

कम नज़र या कम उमर होगा अगर मंगल का साथ न हो । नंगा सर स्याह लिये फिरना राहु की मन्दी हालत का पूरा सबूत होगा। मन्दे वक्त मंगल का उपाय सहायक होगा ।

राहु खाना नं० 11

नीलम

हलफ से जो बात करते, है यकीन होता नहीं ।

राहू 11 आ जो बैठे, वृहस्पति वाँ होता नहीं ।
वृहस्पति भागे पापी मांगे, भागता संसार है ।
शनि गर हो तीने पाँचवें, योगी आलंकार है ।
एक से ग्यारह हुये तो, पापी होंगे आप से ।
धन न चाहें माँ से अपनी,न ही लेंगे बाप से ।
६ ग्रह ही मुर्दा होवें, पापी यहाँ मरते नहीं ।
जिस को तारे पूरा तारें, धोका वह करते नहीं ।

वृहस्पति कायम रखना ज़रुर होगा । जो अमूमन होता ही नहीं वरना कर्ज़ा खड़ा और धन दौलत खराब होंगे । और केतू (औलाद भी) मन्दे दरवेश की तरह मन्दा और कम कीमत होगा । या 36 साला उमर तक वह सिफर होगा ।

राहू खाना नम्बर 12 (नीच)

पक्का घर व ग्रह फल का (मन्दा) कोयले –
हाथी – समुद्र का तेन्दुआ – खोपरी

6 में राहु कौसो कज़ाह या, 12 में वह धूँआ है ।
लकड़ी (शनि) मीठी पवन (वृहस्पति) भी मीठी, असर मगर अब बुरा ही है ।
राहू बैठा बारहवें जब, शुक्र हो घर ग्यारां ।
कन्या उस घर बहुत हों, और धन भी उसी रफ़तारां ।
मंगल भी घर 12 होवे, राहू ख्तम हो जाता है ।
हाथी महावत दोनों मिलते, सामान शाही हो जाता है ।

कच्चा धूँआ मगर किस्मत के असर में कोई काम की आग न होगी । गर होगी तो न सिर्फ खर्चा हाथी होगा बल्कि गृहस्थी सुख में हाथी की मन्दी लीद पड़ती होगी । मुकद्दमाये फौजदारी व चोरी, झगड़े आम होंगे। लड़कियों की ज्यादती और बाइसे खर्चा ज़रुर होंगी ।

केतू – दरवेश (आक़िबत अन्देश)

केतू छलावा है चलो चलीका, पापी बुरा ही होता है ।
मरे न खुद वह मरने देवे, चारपाई नहीं छोड़ता है ।
ग्रह जब तक कोई एक हो चलता, केतू चला ही चलता है।

रवि को गर वह मध्यम करे तो, ग्रहण चन्द्र को करता है ।
केतू मिला जब शनि मंगल से, ऐसा बुरा नहीं होता है ।
साथी मगर जब तीसरा होवे, फल तीनों का ही मन्दा है।
गुरु मिले तो सबसे उत्तम, माता मिले खुद मंदा है।
बुध मिले खुद दुष्ट कहावे, मदद शुक्र की करता है ।
पाताल पक्का घर 6 वां होवे, नीच वहां यहु होता है ।
घर 12 आसमान पे चढ़ के, दुनिया से ऊँचा होता है ।
पहले घरों में जो केतु होवे, गुरु मंदा हो जाता है ।
उलट अगर हों टेवे बैठे, भला चन्द्र नहीं होता है ।
चन्द्र अगर बद – मंगल रोके, केतु बद मंगल करता है ।
बुध केतू दो आपस लड़ते, बद मंगल भी डरता है।
कुत्ता बने केतू दुनिया के कुत्ते, लड़का – आसन गुरु होता है ।
शत्रु ग्रह घर जब यह झगड़े, नष्ट सभी का होता है।
राहू पाप गर ख़ुफ़िया होवे, केतू ज़ाहिरा ही चलता है ।
शारअ – आम में दोनों मिलते, मार दो तरफी करता है ।
मकान गली का आखिरी होवे, औरत ज़ात पे पड़ता है।
हवा चलेगी भूत – प्रेती, बच्चों पे हमले करता है ।
शनि की माता बच्चे खावे, कुतिया कोई बच्चे खाती है ।
बच्चा अगर कभी एक ही होवे, नसल क़ायम हो जाती है ।
चाल राहू की टेढ़ी गिनते, सीधी केतू नहीं होती है ।
बुध ने पकड़ा पाप है दुनिया, मदद चन्द्र से होती है।

कान पीठ गरदन या पाँव, नाखुन भी उनके होता है ।
रफतार गोलार्द या बल गरदन पर,फैसला कुल केतू होता है ।

केतू ख़ाना नं० 1

टाँग – नानका घर – हवाये बद –
धुन्नी से नीचे के हिस्से में बीमारियाँ ।

केतू जब घर पहले आवे, जन्म मुसाफिर – ख़ाने[1]पावे ।
जिधर जिधर वह कदम रखेगा, मिट्टी उड़ती साथ ।
बाऊ – बगोला तूफानी बने वह, मारेगा घर छह सात ।
पापी ग्रह तीनों गिने, केतु भी बदनाम ।
जो मारे न जान से, मिट्टी गरदो आम ।
न इधर मारा, न उधर मारा ।
हो अगर मारा, जन्म स्थान ही मारा ।

जिस घर में जन्म लिया वह मकान न होगा । जिस रिशतेदार के वहां पैदा हुआ वह ख़ानदान न रहा । फिर भी रहा ता मामूँ खानदान बाक़ी न रहा । अगर रहा तो स्त्री सुख व औलाद संबंध भी हल्का रहा । मगर सूर्य बैठा होने वाले घर का असर और खुद सूर्य का संबंध हर तरह से नेक रहा । बेशक सूर्य किसी भी घर और किसी भी हालत में हो बैठ रहा, जब बाप की किस्मत मँदी हो, तो ऐसा लड़का किस्मत में ज़रुर मदद देगा । और बाप को ज़रुर तार देगा । हालांकि सूर्य केतू आपस में दुश्मन हैं – केतू कुत्ता अगर हड़काया भी होवे, तो भी अपने मालिक, बाप, बली या सर – परस्त को ज़रुर ही छोड़ देगा ।

केतू ख़ाना नम्बर 2 (ग्रह फल का)

इमली – तिल

केतू अदूजे गोबर गाय, ब्रह्म गुरु अस्थान हो ।
माता को बेशक न तारे, औरत का अभिमान हो ।
घूमती किस्मत सही, पर नेक और बहबूदा हो
सफर इसको बहुत लिखा, हुकमरान आसूदा हो ।

हर नया सफर तरफ की तबदीली पर होगा । यानि पहिले अगर दक्षिण को जावे – तो फिर वापिस मगर पश्चिम में ठहिरे फिर पूर्व में आवे । आमतौर पर तबदीली की शर्त ज़रुर होगी मगर तरक्की की शर्त नहीं।

सख़ी – सरवर – सफर और तबदीली मुक़ाम का मालिक होगा। (नेक मायनों और नेक असर में) । वृहस्पति गुरु या सोने की नक़ल करेगा – या नकली सोने की तरह की किस्मत होगी । (उमदा हालत में)

केतू ख़ाना नम्बर 3 (नीच)

रीढ़ की हड्डी - केला (फल) - फोड़े फुन्सी । चलते पानी में चन्द्र सूर्य की संबंधित चीज़े डालना शुभ होगा । जबकि सफर में धकेले - या वृहस्पति की चीज़ें जब फोड़े गुमटे पैदा करे ।

केतू घर जब तीजे आवे, भाइयों से वह तंग करावे ।
औरत घर सुसराल हों मंदे, सालियां बेवा पड़ेगी पल्ले ।
केतू तीजे मंगल 12, मच्छ मुआवन दोनों तारां ।
24 साल में उत्तम होवे, या जब लड़का पहिला होवे ।

कानों में सोना (नन्तियां) शुभ होगा । नेकी को याद रखने और बदी को भुला देने वाला खुद व खुद बिन बुलाये सहायता के लिये

आ हाज़िर होने वाला व्यक्ति होगा । बुध (लड़की ज़ात) का बुरा फल होगा । उलझन में जकड़ा हुआ फकीर होगा। या बिना - कारण औरत से जुदाई का वक्त भी होगा । भाईयों से दूर परदेस की ज़िंदगी या भाई उससे दूर परदेस में होगे ।

केतू ख़ाना नम्बर 4 (राशि फल का)

सुनना (कानों का तअल्लुक) वृहस्पति का उपाये सहायक होगा । चन्द्र ग्रहण होगा (एक साल अवधि)

केतू चौथे जब हुआ, कुत्ता कूऐं में हो ।
न चन्द्र खुद अच्छा रहा, न केतू उमदा हो ।
गुरु उपाये गर करे, दोनों दुख हों दूर ।
कुल उसकी चलती रहे, माया मिले ज़रुर ।

लड़कियां ज्यादा मगर कमाल का आदमी होगा । नर औलाद का मंदा ही हाल होगा । पर खुद न कभी वह तंग हाल होगा । यह सब केतु की उमर का हाल होगा ।

केतू ख़ाना नम्बर 5

पेशाब गाह

केतू घर है पाँचवें, रवि गुरु के घर ।
जैसा हाल बृहस्पति होवे, वैसा ही केतू घर ।
गर शर्तें न पूरी होवें, 24 बाद ज़रुर ।
दुख दलिदर सब कुछ बदले, बदले हाल ज़रुर ।
वजह फरक़ घर 9 में होगी, नज़र न भूले जो ।
फल (औलाद) कड़ता तब ही हुआ, जड़ में आँक (शनि)जो हो ।

अगर वृहस्पति मंदा हो तो 45 साला उमर तक घर में नर औलाद की जगह कुत्ते के रोने की आवाज़ आयेगी या औलाद को दम (दमा) की तकलीफ होगी । अगर शनि का भी संबंध हो जाये तो जड़ (3 नर औलाद) नष्ट होगी । जो शनि की अमर (36 साला में) बहाल होगी । वृहस्पति उच्च क़ायम या उम्दा हो तो केतु का फल उम्दा मगर खुद वृहस्पति का मंदा होगा । वृहस्पति, सूर्य या चन्द्र 4, 6, 12 में हो तो नर औलाद 5 से कम न होगी ।

केतू ख़ाना नम्बर 6 (पक्का घर - नीच)

ग्रह फल का - घर का - पूरा चन्द्र ग्रहण - ख़रगोश - चिड़ा (चिड़िया का नर) - परदेस - पूजा स्थान

केतू 6 वें नीच है, दुश्मन पराजित ही हों ।
माता मामूँ हो मन्दे, पर खुद न मंदा हो ।
गर मन्दे ग्रह हों सभी, केतू (लड़का) मदद करे ।
बुध (लड़की, बहन) से न झगड़े कभी,
न शुक्र (औरत) मदद करे ।
केतू की चीज़ों पे केतु (लड़का) मंदा, पर मंदा न दूसरों पर ।
गर दूजा कोई साथ ही होवे, खुद मंदा बुरा दूसरों पर ।
सोने की अँगूठी बाऐं हाथ में शुभ होगी ।

बुरे समय में शेर के जाल काटकर छुड़ाने वाला मारा मूसा होगा । अगर वृहस्पति उत्तम हो तो नर औलाद व धन दौलत की आमद पर आमद होवे । वरना काट खाने वाला कुत्ता होगा । इस घर में यह शुक्र की भी मदद नहीं करता और न ही मामूँ खानदान पर मेहरबान होगा । मगर बुध बहन से कोई झगड़ा नहीं करता ।

केतू खाना नम्बर 7

दूसरा लड़का – सूअर – गधा

केतू जब घर 7 वें आवे,दुश्मन वह सब मार हटा दे ।
कुत्ता राज बैठा लिया, मुड़ चक्की चट्टन जा ।
24 साल ही गुजरते, धन 40 साला आ ।

सामने घर का हाल मंदा होगा (केतू की चीज़ों में) लड़के की उमर / 48 वर्ष केतू ज़रब 8 कुल उमर केतू = साल की आमदन/के बराबर धन होगा ।

अगर बुध (क़लम) का साथ होवे तो 24 साला उमर तक दुश्मन ज़रुर गले लगे रहें । लेकिन बाद में वह सब को ही कुत्ते की तरह मार भगा दे । धन जब आने 4 बरकत व गुज़ारा साथ ही ले आवेगा ।

केतू ख़ाना नम्बर 8

कान (सुनने की ताक़त) – छलावा – धोका बाज़

केतू जब 8 वें हुआ, पत्थर हों पिस्तान ।
कुत्ता सोया छत पर, लड़का हो कब्रस्तान ।
पानी बरसे औलाद का, जब चन्द्र दूजे हो ।
जब चन्द्र भी हो बुरा, चन्द्र पालन हो ।

खुद अपनी उमर लम्बी होगी । मगर केतु की उमर (48 साला) तक औलाद से दुखिया या महरुम ही रहे । अक्सर केतू का असर मंदा होगा । या शेर की नींद वाला सोया हुआ कुत्ता होगा । **दो रंगे कम्बल (स्याह सफेद) का टुकड़ा शमशान भूमि में दबा देना शुभ (वास्ते औलाद) होगा । अगर कोई और ग्रह भी नं० 8में साझां हो तो उस ग्रह की संबंधित चीज़ को भी कम्बल में बाँध कर साथ ही दबाना होगा ।**

केतू ख़ाना नम्बर 9 (उच्च)

दो रंगा कुत्ता – घर में सोई हुई कुतिया
और उसके बच्चे शुभ होंगे ।

केतू 9 वें पिता को तारे, तारता नहीं वह मामों को ।
औलाद तो होगी गिनती की ही, पर सुखिया व उम्दा हो ।
मात पिता घर दोनों तारे, चन्द्र जब गुरु उम्दा हो ।
जो ग्रह दोनों से रवि होवे, तरफ वही ही मंदा हो ।
घर तीजे जब दुश्मन होवे, लड़का भी हो मंदा ।
साल[1] गुजरे ग्रह 7 वें के, होगा फिर वह उम्दा ।

तरक्की की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं । सूअर की बहादुरी और कुत्ते की वफादारी दोनों सिफतों का मालिक होगा । औलाद नर ज्यादा से ज्यादा 3 कायम होगी । मगर हर तहर से मुकम्मल और बा आराम जिदंगी वाली होगी । गुज़ारा परदेस में ज्यादा होगी । मगर नेक हालत में । दौलतमंद होगा मगर खुद दस्ती काम व अपनी ही हिम्मत से रौनक लेगा ।

बिना संतान वालों को सन्तान और नामर्दों को मर्द करने में इसकी आर्शीवाद हुकम विधाता होगी । **घर में सोने की चौकोर ईंट कायम रखना बिलकुल ही शुभ होगा । वरना कानों में सोना भी सहायक होगा ।**

केतू ख़ाना नम्बर 1

चूहा – फैसला शनि से होगा – मंगल का उपाय मदद देगा ।
केतु घर 10 वें का शक्की, कुत्ता लड़का मंदे ।
मंगल चाहे घर 10 वें होवे, फिर भी दोनों मंदे ।
शनि अगर घर अच्छे होवे, मिट्टी सोना होवे ।
बुरी जगह जब नाग जा बैठे, सोना मिट्टी होवे ।
अब उपाउ केतु होगा, या चन्द्र का पानी ।
महल मकानां नीचे देवे, दूध शहद वह प्राणी ।
अकेला हो केतू जब घर 10 वें, मदद मंगल से होगी ।
पर जब हो दो इकट्ठे बैठे, दया चन्द्र की होगी ।

दौलतमंद तो ज़रुर होगा मगर अय्याश व बद फेल भी होवे । शनि का फैसला बता देगा कि पग 12 (मिट्टी से सोना बनता) और 3 काने (सोने को हाथ डाला तो मिट्टी हो गई) कब और कहाँ होंगे । 45 साला उमर में केतु का संभालना एक क़ीमती चीज़ होगी । यानि **खालिस चाँदी का बरतन शहद से भर कर पहले ही रख लेवे । 48 के बाद केतु का साथ (कुत्ता) सहायक होगा** । केतु नं० 1 और शनि नं० 4 में हो तो 3 नर औलाद बे माइने होगी । जिसका इलाज वही है जो केतु नं० 8 का है।

केतू ख़ाना नंम्बर 11

क़ीमती दो रंगा (स्याह व सफेद) पत्थर – स्याह कुत्ते का तअल्लुक सबसे नेक होगा – केतु कायम

रखना मुबारिक ।

केतु 11[२] –ग्यारह गुण हो, धन दौलत हो उम्दा ।
पर खुद केतु[३] शनि दोनों का, फल होगा ही मंदा ।
जायदाद न उतनी होगी, जितनी खुद बनावे ।
बुध अगर न तीजे बैठे, केतु राज करावे ।
गर बुध उसके तीजे आवे, केतु मारे चीखाँ ।
किस्मत की दौरंगी होवे, रोवे अपने लेखाँ ।

ऐसे टेवे में चन्द्रमा मंदा होगा या माता न होगी । जद्दी जायदाद की अपेक्षा स्वयं पैदा की जायदाद ज्यादा होगी । खूब आमदन का मालिक होगा । मगर शनि (मकान) व खुद केतु (लड़का) का अपना अपना फल मंदा होगा । जिसके संबंध में दलिदर और परेशानी होगी । मगर औरत के टेवें में यह सब उलट या हर हाल नेक व शुभ होगा ।

केतू ख़ाना नम्बर 12

छिपकली – मुतबन्ना – किस्मत को जगाने वाला

केतु बैठा जब घर आ 12, सुख गृहस्थी होता है ।
शुक्र केतु शनि बृहस्पति, फल चारों का उमदा है ।
खुद बढ़े साथी बढ़ें, बढ़ेगा कुल परिवार ।
मर्द माया की कमी न होवे, बढ़ेंगे रिश्तेदार ।
मंगल राहु हसद करेंगें, लड़के तरफ़ों चार ।
हर तरह से रक्षा होगी, फले फूले गुलज़ार ।
तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं ।

औलाद के वक्त से (या जब लड़का 24 साला हो जावे) दौलतमंद होगा । इज्जत का सरोवर (चश्मा) होगा । नर औलाद कम अज़ कम 6 तादाद में होगी । अँगठू दूध में डाल कर चूसना या अँगूठे का मुँह में रखना तमाम गृहस्थी संबंध में शुभ होगा । **घर में कुत्ता दो – रंगा (स्याह सफेद) शुभ होगा ।**

****

वृहस्पति सूर्य

अकेला गुरु जगत बाबा जो होवे,
बाप रवि से वह कहलाता है ।
रवि गुरु जब इकट्ठे हों बैठे,
बाप बेटा हर दो मिल जाता है।
किस्मत हर दो एक ही होवे,
मिले दोनों चन्द्र ही बन जाता है ।
घर 6 वें 7 वें वह हैं राशि फल के,
इकट्ठों से ऋण पितृ हो जाता है ।
दुनिया की रुह का रवि होये मालिक,
तो मालिक गुरु जगत हो जाता है ।
दोनों इकट्ठे हों सांस रुहानी,
जहाँ दोनों त्रैलोकी हो जाता है ।
गुरु बाप बनता तो सूर्य हो लड़का,
भाग दोनों का मुश्तरका हो जाता है।
बने एक राशि तो दूजा ग्रह फल,
लिखत वाँ विधाता बदल जाता है ।
तरफ पहली बैठा या बालिग[१] जो होवे,
असर उसका प्रबल ही हो जाता है ।
अकेले अकेले हों बेशक वह मन्दे,
असर नेक दोनों का हो जाता है ।
दुश्मन ग्रहों या घर मन्दे मारे,
या टकराते बाहम टेवे में हों ।

फल दोनों का कभी हो न मन्दा,

बैठे ख़ाह बेशक वह कहीं ही हों ।
ज्ञान अकल या हवा रोशनी तो,
राजा योगी भी होते है ।
फल दोनों का हो उत्तम अपना,
दुखिया मामूँ को करते हैं ।
रवि गुरु होते है विष्णु ब्रह्मा,
तो भाग उदय उसका कहलाता है।
दोनों अगर हों कहीं कभी न मिलते,
जन्म मन्दा उसका ही हो जाता है।
इन्साफ बज़ुर्गी उमर के मालिक,
दुश्मन से घबराते है ।
सात साल की महा दशा में,
वह केतु को मरवाते है ।
चन्द्र को जब दोनों देखें,
खुश्क कूँऐ भर आते हैं ।
माता हो इनकी बेशक अन्धी२ ,
पिस्तान हरे हो जाते हैं ।
शनि अगर दोनों को देखे,
इक दम ही सो जाते है।
शेर गरजता – सोना दमकता,
दोनों ही जल जाते है।
बिल्मुकाबिल हों कभी बैठे,
वज़ीर मातहती होते हैं ।
राजा इनका हो मालिक राशि,

जिसमें कि वह बैठते है ।
हाथ की रेखा जन्म हो कुण्डली, या मिलते कभी दो न हों ।
मिटे सूर्य रेखा व किस्मत, फल मन्दे दोनों के हों ।

ख़ाना नम्बर 1

रवि गुरु धर पहले बैठे, तख्त सुनहरी का हाकम हो ।
उमर लम्बी और सुख गृहस्थी, मिट्टी का चाहे माधो हो ।

ख़ाना नम्बर 2

दोनों मिल कर घर दूजे में, उपदेश गुरु का सुनाते हैं ।
महल मकान सब आला उसके, शेर गरजते होते हैं ।

ख़ाना नम्बर 3

घर तीजा त्रैलोकी गिनते, सोना माया कुल बढ़ती है ।
माया लालच का पुतला जो होवे, कुल ग़ारत ही होती है।

ख़ाना नम्बर 4

घर चौथे माता के होवें, दूध पहाड़ से बहता हो ।
शनि अगर घर 10 वें बैठे, भस्म दोनों को करता है ।

ख़ाना नम्बर 5

दोनों मिले जब 5 वें बैठें, सोना घर औलाद के है।
रवि राजा घर अपने बैठा, गुरु महमान वज़ीर भी है ।
माया आवेगी पर स्वारथ से, शत्रु भागते बल से है ।
नाव जहाज़ हवा से चलते, पंखे साँस औलाद के हैं ।
रुके कभी न हवा रोशनी, बैठे वहाँ ऐसे पापी हों ।

बुध अगर आ निकले इस घर, रवि गुरु भी कैदी हों ।
घर इसका गौ – घाट ही होगा, बाकी पाँच ही बचते हों ।
धर्म दौलत की कमी न कोई, बाल बच्चे सब बढ़ते हों ।
बाकी घर 6, सात या 10हो 11, रवि गुरु नहीं मिलते है ।
फल दोनों का अपनों अपना, तरफ बुढ़ापा गिनते है ।
घर 9–12 शुरु आखिरी, कुल उन्नति भी लेते है ।
घर 8 वें वह मौत हटा दें, जागती किस्मत करते है ।

बाप बेटे का एक ही बिस्तरे पर सोना हर दो की किस्मत के लिये शुभ होगा । अगर अलग-अलग ज़िन्दगी बसर करने का मौका या ज़रुरत होवे, तो बाप के बिस्तरे से पीठ तले बिछाया जाने वाला कपड़ा (दरी वगैरा) बेटे को अपने पास रखना और खास कर रात को अपनी पीठ तले बिछाना निहायत शुभ होगा । **बाप की मौजूदगी या किसी भी और नामुमकिन हालत में ऐसे कपड़े की बजाय वृहस्पति की चीज़े रात को पीठ तले रखना शुभ होंगी ।**

वृहस्पति चन्द्र

तालीम 24 साल - तीर्थ 2 साल - चन्द्र का असर 1/2 होगा - चाँदी की थाली - अच्छे घरों मौनसून - मन्दे में कसीफ (गन्दी) हवा - दोनों का मुश्तरका उत्तम फल होगा । पिता - माता - बड़ का दरखत ।

ठण्डी हवा (खुशी की) पुराना चावल - बुढ़ापा - अकल घटे पर धन बढ़े । सफर भी उम्दा हो । विरासत, काशत सब फलें । गैबी मदद भी हो ।

पहले घरों 1 ता 6 में बैठे अपना नेक फल मगर बाद के घरों 7 ता 12 अपने से पहले बैठे हुये दोस्तों को पूरी मदद देंगे । ऐसी दृष्टि का

संबंध हो या न हो । उत्तम लक्ष्मी होगी । दोनों आपस को अगर देखें।
शुक्र - मंगल या शनि - शुक्र या शनि - मंगल दोनों को देखे
असर उम्दा और फल नेक हो । ख़ाह दोनों टोले बिल्मुकाबिल ही क्यों न हों ।

सूर्य - ताजर - अहले क़लम - ठोस माल हाज़िर से दूसरों को भी तारता जाये ।
शुक्र - शादी के दिन से ज़बान शुरु कर देगा ।
मंगल - धन, परिवार और ज्ञान सब ही उम्दा हों ।
बुध - दुश्मन की बजाये अब मदद देगा । अगर सनीचर उम्दा हो तो नेक असर वरना फोकी उम्मीद और नास्तिक होगा ।

ख़ास फ़रक

नम्बर 2 का बुध पिता पर भारी और 4 का बुध माता पर मन्दा मगर धन दौलत के लिये उम्दा होगा । बाकी सब घरों में बृहस्पत की हालत पिघले हुये सोने की तरह होगी या बुध और पापी ग्रहों के संबंध में वृहस्पति हर शक्ल में बदला जा सकेगा ।

शनि - सब के लिये लोहे को पारस का काम देगा ।

जब दोनों जुदा जुदा और एक दूसरे के सामने या अपने से 7 वें हों तो जब कभी भी सनीचर या दुश्मन ग्रह की संबंधित चीज़ मकान - शनि - शादी, शुक्र वगैरा का वक्त आवे चन्द्र वृहस्पति माता पिता खत्म होंगे । जो पहले घर का हो वह बाद में, जों बाद के घरों का हो वह पहले खत्म होगा। **दोनों घरों को चलता रखने की ख़ातिर केतू (आसन) ज़मीन में स्थापन करें या केतू की चीज़ें तह मकान में या इसके गले में डालें।**

ख़ाना नम्बर 1

28 साला उमर से पहले शादी - मकान (नया बनाना) या पैदाइश नर औलाद से मन्दा असर - माता-पिता की उमर अमूमन कम होगी जबकि

नम्बर 7 खाली हो । **मिट्टी में मंगल की चीज़ें दबाने से मदद होगी ।**

खाना नम्बर 2

बड़ के वृक्ष का साया - बालाई आमदन - माता का सुख सागर व जद्दी जायदाद की वृद्धि होगी । अब राहू बुध का संबंध मन्दा होगा । यानि बड़ पर तिलयर का संबंध कम होगा । अगर होगा तो दूध बोतल में बन्द होगा । जिस का ज़ायका न होगा । फिर भी होगा तो बिच्छू या भिड़ की ज़हर होगा जिसके लिये **साली का संबंध नेक न होगा ।**

ख़ाना नम्बर 3

खुद तेरे भाईयों को धन से तारे मगर तोते की आवाज़ या संबंध हर तरह से मन्दा होगा ।

ख़ाना नम्बर 4

बड़ के तने ही स्तून की तरह अपना क़बीला सहायक बना लेवे । नाब जहाज़ का काम देवे । जन्म से ही धन का चश्मा निकल पड़े और पूरी शान्ति होवे ।

ख़ाना नम्बर 5

अब दोनों की जगह सूरज नम्बर 5 का उत्तम फल होवे । ताजर और अहले क़लम हो, तो दूसरों को भी फ़ायदा देवे।

ख़ाना नम्बर 6

बुध व केतु का जैसा भी फल होवे इन दोनों के उत्तम फल में शामिल होगा । रफा - ए - आम या काश्त की ज़मीन का कूआँ सब उमदा असर को पाताल में ले जावे ।

ख़ाना नम्बर 7

बचपन मन्दा – 24 साला उमर से माता-पिता दुखिया ।
शादी और लड़की की पैदाइश के दिन से धन दौलत का भण्डार मगर दलाली लाभदायक व्यापार हो ।

ख़ाना नम्बर 8

यद्यपि उमर लम्बी मगर धन के लिये भाईयों को मारे या मरवाये । धन उम्दा वही होगा जिसमें श्रेष्ठपन हो माता घर से शनि या मंगल की चीज़ें बाइसे तबाही होंगी ।

ख़ाना नम्बर 9

दूध से पले हुये वृक्ष की तरह नेक किस्मत माता-पिता का पूरा और लम्बा सुख सागर बशर्ते कि **लड़की का पैसा या धन न खावे ।**

ख़ाना नम्बर 10

माता पिता की सोने चाँदी की ईंटे भी जंगल के पत्थर होंगे । पिता की शानदार दाढ़ी और माता की सच्ची मुहब्बत और घोड़ी की लम्बी दुम की शान बेटे को झाग के बुलबुले का भी काम न देगी । दूसरों के अधिन होगा या खुद सिखाता मर्द होगा ।

ख़ाना नम्बर 11

दूसरों को तारे मगर खुद अपनी किस्मत के लिये ख़ाना नं० 3 के ग्रह होंगे । अगर 3 ख़ाली हो तो 11 सोया हुआ । अब 5 नं० का कोई असर न होगा ।

ख़ाना नम्बर 12

राजा मगर त्यागी (राजा जनक) । लड़की की पैदाइश या शादी के दिन से अमीर होवे । मकानों में मकड़ी के जाले । **सोने चाँदी के थालों में खुराक की जगह गन्दे फूल और चाँदी धन की जगह सफेद कलई होगी । अब चाँदी का ख़ाली बर्तन तह मकान में दबाना शुभ होगा ।**

वृहस्पति चन्द्र

सोने चाँदी के तख़्त के मालिक वाले पिता के टेवे में ख़ाना नम्बर 1 में होंगे । काल माया वाले बाप वाले के टेवे में ख़ाना नं० 1 में नहीं होंगे ।

वृहस्पति शुक्र

सुख 4 साल – दौलत 2 साल, आमदन 6 साल, मुहब्बत 2 साल – आलू ।
वृहस्पति का मध्यम और शुक्र का अच्छा व इश्क में कामयाब ।
मसनूई शनि (केतु स्वभाव) बीमारी दुख से बचाव मगर बंजर जैसी ज़मीन का हाल । शुक्र का फल उम्दा होगा । वक्त जन्म दुख होवे । शुक्र फल उम्दा होगा । वक्त जन्म दुख होवे । शुक्र पोशीदा और वृहस्पति का ज़ाहिरा होगा । काम देव की ज़्यादा इच्छा दोनों का फल रद्दी कर देगी ।

ख़ाना नम्बर 1

काग रेखा के हाल वाले साधु की तरह किस्मत होगी । गृहस्थ बर्बाद। जंगल में इज़्जत होगी । **बाप और औरत दोनों में से एक रह जाने पर नेक असर होगा ।**

ख़ाना नम्बर 2

औलाद का तक़ाज़ा । सोने की जगह मिट्टी मगर कीमती होगी । या सोने (वृहस्पति) के कामों से मध्यम लाभ मगर मिट्टी (शुक्र) के काम से सोना मिले ।

ख़ाना नम्बर 3 :

खुशहाल भगवान् होवे । औरत मर्द का काम देगी। ऐसा धन भाईयों को तारे ।

ख़ाना नम्बर 4 :

हर औरत के एक बच्चा तो होवे परन्तु चल बसे । घर घर के टुकड़े की तरह औलाद का हाल हो ।

ख़ाना नम्बर 5 :

इल्म और औलाद की बरकत पावे ।

ख़ाना नम्बर 6 :

नर औलाद न हो या न रहे । अगर रहे तो मन्दी किस्मत कर दें ।

ख़ाना नम्बर 7 :

वृहस्पति नं० 7 का हाल । धन की कमी की वजह से पेट के लिये औलाद का बलिदान तक हो सके । या स्वयं सोने से मिट्टी तक ले आवे । अगर बुध (या लड़की) का साथ नेक संबंध रहे तो धन दौलत गुम होने पर भी तंग न होने देगा । **गोद लिया भी सुख पावे** । मगर खुद बे आराम ही रहे । इश्क में शमा का परवाना होने की आदत वजह होवे ।

ख़ाना नम्बर 8 :

धन दौलत उम्दा (असर वृहस्पति नं० 2) मगर शुक्र का वही फल जो नं० 8 का है ।

ख़ाना नम्बर 9 :

शुक्र नं० 9 वृहस्पति नं० 9 का असर अलग –अलग परन्तु फिर भी उत्तम होगा ।

ख़ाना नम्बर 1 :

आता है याद मुझ को गुज़रा हुआ ज़माना । दूसरों की मौत से खुद मरे।

ख़ाना नम्बर 11 :

सोने की जगह ज़रद पाण्डु होगा ।

ख़ाना नम्बर 12 :

व्यापार सट्टा मन्दा । बाकी गृहस्थी व रुहानी उम्दा असर होगा ।

वृहस्पति मंगल

बीमारी 31 साल (बद) – औलाद 8 साल – नुकसान 5 साल (बद)।

दोनों का आपसी उत्तम फल होगा । सोना – नेक अगर बद तो आलसी निर्धन – गदा गुर्ज़ (हथियार) 1 = सरदार हुकमरान 2 से 5 तक वालिये तख्त वरना खुदा परस्त। 5 से ज़्यादा ब्रह्मज्ञानी । हर दम ''मर्दे मर्द मर्दे खुदा'' । दोनों को जब देखे ।

शनि : पिछली उमर और धन दौलत उम्दा ।
मंगल बद : सब कुछ मन्दा । रिश्तेदार बरबाद तथा मौतें ।

ख़ाना नं० 1 :

दोनों का अलग – अलग नं० 1 का असर ।
ख़ाना नं० 2 : गृहस्थी सम्बन्धी इसकी आवाज़ पर सर कटा दें । और पसीना की जगह अपना खून बहा दें । दिमाग़ी लियाकत से अमीर हो ।
ख़ाना नं० 3 : पूजा पाठ में आसानी । बजुर्गों के धन की पूरी हिफ़ाज़त करेगा और कायम रखेगा । मगर अपना और धन मिलाने की शर्त न होगी ।
ख़ाना नं० 4 : मर्दों की तादाद में कमी न होगी । मगर उनके लिये धन की शर्त न होगी ।
ख़ाना नं० 5 : औलाद की पैदाइश के साथ ही धन का ठंडा चश्मा बह निकलेगा । खूब रौनक होगी । 28 साला उमर तक बढ़ता जायेगा । दान से हर दम बढ़ेगा । मगर दान लेने से सोने को कोढ़ हो जायेगा ।
ख़ाना नं० 6 : खुद ही बड़ा भाई होगा । बाप पर कोई मन्दा असर न होगा । मगर केतु बुध दोनों का फल दबा हुआ होगा । बुध का धन दौलत के लिये बुध नं० 2 का फल होगा । और बुध वृहस्पति की दुश्मनी न होगी ।
ख़ाना नं० 7 : अच्छी आमदनी फिर भी ऋण से लिपत होगा। । गृहस्थ रेखा सीधी ।
ख़ाना नं० 8 : दोनों का अलग–अलग नं० 8 का असर । मगर कुण्डली वाले के अपने ही खून वालों से संबंधित होगा।
ख़ाना नं० 9 : गृहस्थ, परिवार और धन दौलत सब उम्दा ।
ख़ाना नं० 1 : खाना नं० 4 के ग्रहों से फैसला होगा । अगर नं० 4 खाली हो तो सोने की जगह मध्यम होगा । **साधु होगा या दुनिया की चोरी से अमीर होगा ।**

ख़ाना नं० 11 : बाप और भाई की उमर तक अच्छी हालत, **बाद में शहद के खाली बर्तनों पर बेशुमार मक्खियाँ बैठी हुई की तरह किस्मत का हाल होगा ।**
ख़ाना नं० 12 : हर तरह से उत्तम बढ़े परिवार होगा । जिसे आर्शीवाद देगा तार देगा ।

वृहस्पति– बुध

दौलत खराब 17 साल – दुश्मन 4 साल – सुख 4 साल , माता पिता दुखी 29 साल ।

आपसी दुश्मनी । बुध का खराब फल होगा ।

फ़कीर की गुदड़ी । 'दोनों में से कौन प्रबल होगा' का फैसला आवाज़ से होगा ।

वृहस्पति के बगैर ग्रह आपस में मिलाव या दोस्ती नहीं कर सकते । और बुध के बगैर उन में झुकने झुकाने की शक्ति न होगी । दोनों ही रद्दी होने पर सब ग्रहों में यह दोनों ताकतें न होंगी ।

अगर शनि उत्तम तो धन दौलत की उमीद होगी । नहीं तो खाली भरोसा और तबाह - बद ख्याल होगा । कम यद्यपि माता पिता दोनों के संबंध में बेसहारा होगा । दूसरों का निगरान होगा । दोनों ग्रह बिन - मुकाबल होने पर अपना ही बेड़ी डूबाने वाला नाविक होगा । दर्जा दृष्टि अगर :-

1 फीसदी हो - बिल्कुल खराबी
5 फीसदी हो - खराब असर
25 फीसदी हो - थोड़ा खराब असर

अगर वृहस्पति कुण्डली के पहले घरों में हो तो वृहस्पति का 34 साला उमर तक उत्तम फल होगा । 35 से बुध का बुरा प्रभाव शुरु होगा । और 51 तक रहेगा । लेकिन अगर बुध पहले घरों में हो तो 34

साल तक बुध का अच्छा और वृहस्पति का मन्दा होगा। **35 से बुध का बुरा असर और वृहस्पति का अच्छा होगा । जो 5 तक रहेगा । वृहस्पति क़ायम और बुध ऊँच धर का**

राज योग - कागज़ी कारोबार छापा खाना या आम जनता में नेक असर । ईमानदारी का धन साथ देगा ।

दोनों को चन्द्र देखे

सफर का बुरा नतीजा रहा करे । मन मन्दिर दरवेश क़लन्दर का हाल होगा ।

वृहस्पति के साथ या वृहस्पति की दृष्टि में बुध हो तो वृहस्पति का नाश होगा । 34 साला उमर से खराब होगा । अपना ही बेड़ी - डूबोने वाला नाविक होगा। मगर सब्ज़ रंग अशिया का संबंध मन्दा । दस्ती हुनर बर्बाद और बिना कारण के होंगे । लेकिन जब बुध की दृष्टि में वृहस्पति हो तो बुध का नाश होगा। **मगर व्यापार व सब्ज़ रंग दस्ती हुनर फायदा मंद होंगे । अपनी ही अकल से कामयाब होगा ।**

मुश्तरका हालत में बुध उसी समय ही वृहस्पति को अपने दायरा में बाँध लेगा। अब वृहस्पति या तो शनि का साँप शुक्र या सूर्य की किरनें होकर उससे रिहा होगा यानि वृहस्पति अपनी चाल के हिसाब से (वर्षफल) शनि या सूर्य बैठा होने वाले घरों में आ जावे या शनि या सूर्य में से कोई भी वृहस्पति बैठा होने वाले घर में आ निकले या शनि ख़ाना नं० 5 में आ जावे या सूर्य ख़ाना नं० 2-9-12 में आ जावे ऐसी हालत में सूर्य या चन्द्र या शनि किस्मत का फैसला करने वाले होंगे (जो भी नेक होवे) लेकिन ख़ाना नं० 2-4 में बुध दुश्मनी की बजाये मदद करेगा । अकेले चन्द्र या वृहस्पति को बुध दबा लेगा मगर दोनों मुश्तरका से खुद दब जायेगा। दोनों को इकट्ठा चलाने के लिये बुध की सब्ज़ रंग अशिया (सोना व सब्ज़ काग़ज) **वृहस्पति पीपल का पौदा लगाना शुभ होगा।**

वृहस्पति सोने में रेत - शेख चिल्ली की कहानियाँ । **अधिक माल का नुकसान - नंगों के महमान** —— बिना खाये सोये । औलाद और औरत के विघ्न । **ऐसी हालत में राहू - केतू का उपाय सहायक होगा।**

दोनों की शनि और सूर्य को मदद

(1) वृहस्पति हो ख़ाना नं० 1 से 5 में ..... मदद देगा शनि को भी और सूर्य को भी ।
(2) वृहस्पति हो ख़ाना नं० 6 से 11 में ...मदद देगा सिर्फ शनि को ।
(3) वृहस्पति हो 12 में .... मदद देगा शनि सूर्य दोनों को ।
(4) बुध हो 1 या 2 में ... मदद देगा शनि को ।
बुध हो 3 या 8 में .... मदद देगा सूर्य को ।
बुध हो 9 या 12 में ... मदद देगा शनि को ।
पोरियों पर चक्कर के निशान फैसला करेंगें ।
बुध का ज़ाती असर नाक से फैसला होगा ।

ख़ाना नम्बर 1 : राजा या हाकम नहीं तो ग़रीबी का मारा हुआ पागल साधु होवे । एक चक्कर का असर होवे ।
खाना नम्बर 2 : 3 चक्कर, ब्रह्मज्ञानी होवे । धन उपदेश उमदा होगा ।
खाना नम्बर 3 : 7 चक्कर । साबर, शाकर, दिलावर बहादुर मगर शुक्र रद्दी होगा ।
ख़ाना नम्बर 4 : 2 चक्कर । हुनरमन्द । राजयोग । कायराना काम बाइसे तबाही । पाप भरी कारखाइयाँ बाइसे खुदकुशी होंगी ।
खाना नम्बर 5 : 5 चक्कर । खुशहाल, भगवान बशर्ते कि कोई लड़का वीरवार का हो और लड़की बुधवार की न हो तो धन दौलत (वृहस्पति सोना) के लिये **सोने की तार कान में और मृत्यु से बचाव से (बुध नं० 8) चाँदी को नाक में डालने से मदद होगी ।**
खाना नम्बर 6 : 6 चक्कर । पूजा-पाठ करने वाला नहीं तो अय्याश ।

ख़ाना नम्बर 7 : 3 चक्कर । ब्रह्म ज्ञानी । दूसरों की मुसीबत पर मुसीबत देखे मगर अकल की कोई पेश न जावे । कभी शाह कभी मलंग । कभी खुशहाल कभी तँग । ''उक्खल पुत न जमदा'' '' कुड़ी अन्धी अच्छी'' । खुद बुध लड़की का बुध नं० 7 शुभ होगा । मगर लड़के का मन्दा होगा । **खुद औलाद से तरसता होगा । बच्चे को गोद में ले। और वह**

भी बेमाइनी ।
ख़ाना नम्बर 8 : आठ चक्कर । हमेशा बीमारी ।
ख़ाना नम्बर 9 : 11 चक्कर । मनहूस और कम उमर हो ।
ख़ाना नम्बर 1 : 1 चक्कर । खुश हाल भागवान होवे ।
ख़ाना नम्बर 11 : दौलतमन्द हो ।
ख़ाना नम्बर 12 : 12 चक्कर खुद अपने लिये नेक । लम्बी उमर । खुशी से समय बिताने वाला । मगर मामूली व्यापारी होवे ।

वृहस्पति-शनि

गम 14 साल - हानि 15 साल - दौलत 12 साल । ऐसे टेवे की कुण्डली जुदा ही होती है ।

दोनों का अलग-अलग फल होगा । शनि का खराब फल होगा । **फक़ीर की झोली श्री गणेशाय नमः ।** सब के पूजने की जगह । वह धन जो शादी के दिन से आगे बढ़े । (ऊँच नीच - जन्म कुण्डली के हिसाब से लेंगे)।

जब दोनों हर तरह से अकेले हों और उनमें किसी भी और का असर शमिल न रहा हो :-

(अलिफ) दोनों में से कोई एक तखत का मालिक (ख़ाना नं० 1 में) और दूसरा राशि फल (वृहस्पति 6-7 और शनि 3-6-9 में) का हो तो धन रेखा होगी । बशर्ते कि दो में से कोई नीच घर का न हो (शनि नं० 1 में नीच होगा, वृहस्पति नं० 1 में नीच होगा) और विरोध होने पर पर

भी सोना ही सोना पैदा होगा । शर्त सिर्फ अपनी ही किस्मत पर निर्भर रहने की होगी ।

(बे) ऐसी हालत में कोई भी नीच घर का हो तो मुश्तरका बरकत ही होगी । **'एक अन्धा एक कोढ़ी' जैसी हालत होगी।**

(जीम) अगर वृहस्पति खराब हो और शनि उम्दा तो लोहे की तलवार तमाम मन्दी हवा को दुरुस्त कर लेगी । लेकिन अगर वृहस्पति उमदा और शनि खराब हो तो वह व्यक्ति दूसरों के लिये लोहे का पारस का काम देगा । परन्तु स्वयं अपने लिये मन्दा ही होगा ।

(दाल) जब दोनों ही साथी हों और सूर्य राजा (खाना नं० 1) हो जावे

(1) जब दोनों उत्तम हो तो कोई बुरा फल न होगा । उत्तम नतीजा होगा ।

(2) जब दोनों साथी मगर नीच या खराब घरों के तो सूर्य शनि का झगड़ा होगा जिस पर राज दरबार का कमाया और पाया हुआ धन और शरीर का कोई न कोई अंग खराब हो कर शांति होंगी । लेकिन जब

(3) **शनि उत्तम और वृहस्पति खराब** और सूर्य नं० 1 का राजा हो तो कष्ट, बीमारी से राज दरबार का धन खराब मगर कोई अंग खराब न होगा ।

(4) **शनि खराब और वृहस्पति अच्छा** - अंग ख़राब होगा । मगर धन दौलत की बर्बादी की शर्त न होगी ।

उपाय ऊपर की हालत में (सबमें) ख़ाना नं० 7 वाले ग्रह की मदद लेंगे ।

शनि वृहस्पति के घर और 2, 9, 12 राशि में कभी बुरा फल न देगा। मगर वृहस्पति, शनि की राशि और घर नं० 1-11 में नीच या नाकारा होगा ।

2. शनि के बुरे दौरा के समय वृहस्पति फैसला करेगा और वृहस्पति के बुरे समय में शनि किस्मत का फैसला करेगा ।

3. दोनों एक जैसे और समुद्र होंगे । यानि अगर शनि पहले घरों में होवे तो पर्वत पहले और हवा इससे निकलकर चलेगी । लेकिन अगर वृहस्पति पहले घरों में और शनि बाद के घरों में - तो वृहस्पति की हवा शनि के पहाड़ से टकराकर कीमती वर्षा देगी ।

4. दोनों मुश्तरका पर बुढ़ापे में तकलीफ होवे । किस्मत के शुरु होने का वक्त उस ग्रह की उमर का साल होगा जो ग्रह कि उन को देखता या जगाता होवे । बुध 34 साल में, सूर्य 22 साल में वगैरा । अगर कोई न जगावे तो स्वयं वृहस्पति यानि सौलह साला उमर में किस्मत जागे ।

दोनों मुश्तरका की हालत में किस्मत का फैसला खाना नं० 11के ग्रह करेंगें । अगर नं० 11 खाली हो तो शनि का ज़ाती फैसला प्रबल होगा । शनि के खास खास सालों में चारों तरफ चलने के सालों का भी ख़्याल रहे ।

दोनों बिल्मुकाबिल और दृष्टि हो :

1 फीसदी - मुश्तरका होने की हालत गिनी जायेगी ।
5 फीसदी - जादूगरी प्रबल होगी ।
25 फीसदी - योगाभ्यास का मालिक होगा ।

शनि देखे वृहस्पति को तो सेहत हल्की - धन दौलत भी हल्का । शनि के समय 18, 36 साला उमर में पिता समाप्त जिसका सबूत उसके मकान में लोहे का ताला मंद भागी किस्मत का अलार्म होगा ।

शुक्र दोनों को देखे - धन, शादी से बढ़े । मिट्टी का पहाड़, दिखलावा बहुत मगर फायदे कम । अपने खानदान और औरत के काम आवे (बाप बाबे की तरफ के रिशतेदारों के)

केतु देखे दोनों को - औलाद पर हवाए बद के हमले होंगे । आम की हवा मंदी साबित होगी ।

ख़ाना नम्बर 1 : काग रेखा । मन्दा घूमने वाला साधु । एक तरह का असर होगा ।

ख़ाना नम्बर 2 : दो सिपी - आलम - सेहत खुश गवार सरसब्ज पहाड़ की तरफ चन्द्र का उमदा और उत्तम फल देंगें । बदनाम इश्क न होगा । अगर चन्द्र भी साथ हो या नं० 8 में से आ देखे तो चन्द्र नष्ट नहीं लेंगे । दुनियावी तोहफा होगा

।
ख़ाना नम्बर 3 : तीन सिपी – दौलतमंद – औसत –दर्जा जिन्दगी । शनि खुद निर्धन मगर बुढ़ापे में आराम पावे । 18 साला उमर में पिता मंदा होवे ।
ख़ाना नम्बर 4 : 4 सदफ या असर होवे ।
ख़ाना नम्बर 5 : साधारण किस्मत जैसी कि बाक़ी ग्रहों से फैसला होवे। 5 सदफ का असर । बड़ी इज़्ज़त व आबरु होगी ।
ख़ाना नम्बर 6 : 6 या ज्यादा सिपी का असर जैसा कि आम हालत का असर होवे :

(1) अब अगर वृहस्पति क़ायम और शनि नं० 2 रद्दी या मंदा होवे तो औरत से दुश्मनी होवे ।

(2) शनि क़ायम मगर वृहस्पति दृष्टि नं० 2 चुप हो (यानि पापी राहु केतु हों) तो औरत का सुख पूरा होवे ।

(3) शनि कायम और वृहस्पति नष्ट – तो औरत का सुख हल्का होवे ।

ख़ाना नम्बर 7 : धन बर्बाद । जायदाद उमदा । लड़की की पैदांइश पर धन होवे । शनि के काम – नया मकान वगैरा बरकत देवें । खर्चा करने पर धन और भी बढ़े । और बरकत देवे । भला लोग – भले काम । मगर बचपन में ही तकलीफ रहे ।
दोनों नं० 7 और चन्द्र या शुक्र या मंगल कायम : बरकत बढ़ने वाली मच्छ रेखा होगी ।
दोनों नं० 7 और चन्द्र या शुक्र या मंगल नीच या नष्ट : बरकत घटने वाली नीचे को मुंह किये हुये वाली मच्छ रेखा होगी । जिसका बुरा असर

चन्द्र या शुक्र या मंगल (रद्दी हालत वाले) के दौरा से शुरु होगी । यानि जब वह भी नं० 1 में आ जावें ।
दोनों नं० 7 और सूर्य नं० 1 : तो 9 साला उमर में मिट्टी के तवे होंगे । जो 17 साला उमर में चन्द्र नेक होगा ।

मच्छ रेखा : ग़रीब को धन और धनवान को वालिये तख़्त बनावे । 9 भाई 2 बहन जन्म कुण्डली नं० 7 और चन्द्र कुण्डली नं० 7 में – तो 9 भाई 3 बहन । तीन पुश्त और तीनों ज़मानों का नेक असर देने वाली मच्छ रेखा होगी । शुक्र (औरत) चन्द्र (माता) मंगल (भाई) का संबंध लेंगे ।
मच्छ रेखा का असर :– परिवार, आदमी कीड़ों की तरह खुद अपने अपने लिये मुँह दाना लेकर आ जावें । शुक्र कायम से औरत ज़ात से बढ़े । और मंगल से ऊर्ध रेखा का साथ होगा ।
मंगल अच्छा तो ऊँच क़ायम – नं० 6 ता नं० 12 का होगा वरना उलटे अर्थो का होगा । मुशकिल के वक़त चन्द्र या शुक्र का कोई बुरा असर न होगा ।
ख़ाना नम्बर 8 :मध्यम धन । उमर लम्बी । अब ख़ाना नं० 8 मारक स्थान न होगा ।

ख़ाना नम्बर 9 :मच्छ रेखा और ऊर्ध रेखा का पूरा अलग अलग और उत्तम फल होगा । खुद बढ़े औरों को तारे । जायदादें और धन दौलत के लम्बे पैमाना का होगा । अब खुद कमाई का हिस्सा कम होगा । दुष्ट भगवान होगा । अमीरों में अमीर होगा ।
ख़ाना नम्बर 10 : बाहर से बाईं पश्चिम दीवार – लोहे की तवी । खुद अपने लिए निहायत उत्तम और श्री गणेश जी की इज़्ज़त का मालिक होगा। मगर इसका धन न आसुरी माया होगी जो दूसरों को तबाह करके छोड़ेगी । शहवत परस्ती से तंग हाल होगा । शनि का असर मंदा फल पैदा करेगा और वृहस्पति का संबंध धन व जायदाद बढ़ाता जायेगा ।

ख़ाना नम्बर 11 : मुशतरका या किसी भी तरह इकट्ठे नं० 11 – दूसरों के लिये इच्छाधारी साँप की तरह साया करे । लोहे को सोने की तरह पारस का काम देवे । खुद अपनी किस्मत का फैसला नं० 3 के ग्रहों से होगा । और नं० 5 का कोई असर न होगा ।
ख़ाना नम्बर 12 : मछली नहावे जल में । चिराग खानदान नेक भागवान। राहु केतु भी नेक असर के । शनि और वृहस्पति दोनों का अलग- अलग नं० 12 का उत्तम असर होगा । माया पर पेशाब की धार मारे । ऊर्ध रेखा और मंगल के साल – बार असर पर किस्मत की कमी बेशक होगी ।

****

सूर्य – चन्द्र

मंगल बद 15 साल – फ़िजूल सफर 9 साल – अलीची (फल) सिरफ सूर्य का और उत्तम फल होगा ।

चन्द्र सूर्य का भिखारी होगा और सूर्य चन्द्र के साथ (मगर दुशमन का घर न हो) या चन्द्र के घर नं० 4 में हो तो मोती दान करने की हिम्मत का मालिक होगा ।

दिन के वक्त (सूर्य) के संबंधित काम और रात को चन्द्र के संबंधित काम नेक असर देंगे । मामूली काम चन्द्र या बांए सांस के वक्त और ज़रुरी और देर या काम सूर्य या दांए सांस चलते वक्त मुबारक होंगे ।

चन्द्र को सूर्य देखे मगर सूर्य नं० 1 का न हो । – खुश्क कूएं खूद – व खुद पानी देने लग जायेंगे । खालिस दूध होगा। और शाँति देगी । **मुशतरका हालत में** सूर्य का असर प्रबल होगा । औरतों से झगड़ा मगर बुढ़ापा सुखी होगा ।

दोनों आमने-सामने : दिल की ताक़त में सूर्य का नेक और उत्तम असर होगा ।
दोनों मुशतरका को मंगल बद या पापी
ग्रह का संबंध हो जाये : हर तरह से दिन और रात मन्दा असर होवे । लाखों पति फिर भी दुखिया ।
ख़ाना नम्बर 1 : मिसल राजा हो । दूसरों से रिश्वत लेवे । मगर मौत अचानक होवे ।
ख़ाना नम्बर 2 : औरतों से झगड़ा । हार और हानि होवे ।
ख़ाना नम्बर 3 : मतलब परस्त मगर खुद उत्तम – असर और किस्मत का ।
ख़ाना नम्बर 4 : राजा महाराजा । दुनिया का पूरा आराम । सीप में मोती और मोती दान करने का सामर्थ होगा । सबारी का सुख बशर्ते कि नं० 1 ख़ाली हो । **मौत अचानक । अगर नं० 1 में शनि हो तो मौत दिन के समय दरिया, नदी नाले या ज़मीन के नीचे से पानी या चलते पानी से होवे ।**
ख़ाना नम्बर 5 : ज़िन्दगी भर आराम रहे ।
ख़ाना नम्बर 6 : दोनों का नं० 6 का अलग – अलग असर । अगर दोनों मुशतरका के साथ **राहु और केतु हों तो माता-पिता की मौत के साथ खुद भी मौत पावे ।** बशर्ते कि ख़ाना नं० 2 खाली हो । **अब मंगल का उपाय सहायक होगा ।**
ख़ाना नम्बर 7 व ख़ाना नम्बर 8 : अलग-अलग असर इन घरों में दोनों का लेंगे ।
ख़ाना नम्बर 9 : मातृ हिस्सा (चन्द्र की मदद) अति शुभ । तीर्थ यात्रा 2 साल और उत्तम फल देने वाली ।
ख़ाना नम्बर 10 : अपना – अपना और अलग असर होगा (नं० 1 का)
ख़ाना नम्बर 11 : उमर सिर्फ 9 साल होगी ।

ख़ाना नम्बर 12 : दोनों का नं० 12 का अलग-अलग प्रभाव परन्तु सूर्य क । प्रबल प्रभाव होगा ।

सूर्य – शुक्र

नुक्सान 17 साल – दौलत 5 साल – शुक्र मंदा 25 साल । शुक्र का मंदा परन्तु सूर्य का अपने लिये उत्तम फल होगा । **पिता मगर छोटी उम्र में चल बसे ।**

लाल मिट्टी – गाजनी – काँसी का कटोरा – मसनूई हवाई वृहस्पति । पैदाइश औलाद के मालिक ।

दोनों में से एक ही काम देगा । आत्मा ज़बरदस्त शरीर हल्का । वृहस्पति की ठोस चीज़ें – **सोना वगैरा से संबंध न होगा । औरत का मंदा हाल और मंदी सेहत । तपैदिक या लम्बी बीमारियाँ ।**
दोनों बिनमुकाबिल : माता-पिता बचपन में गुज़र जावें । जिस घर में शुक्र हो उस घर की शुक्र से संबंधित चीज़ों का मन्दा हाल । मगर सूर्य पर बुरा असर न होगा । सूर्य के दौरे के समय में (सूर्य जब नं० 1 में आवे) शुक्र का मन्दा हाल मगर खुद अपने लिये कामयाब होगा ।
ख़ाना नम्बर 1 : औरत मरीज़ काग रेखा वाली । सूर्य की भी मिट्टी खराब करे । पराई आग से जले, खाना वगैरा । हमराहियों पर शुक्र के पतंग का बुरा असर होगा । **औरत को दिमाग़ी बीमारियाँ तक होगीं ।**
ख़ाना नम्बर 2, 3, 4, 5, 6, 8, 9, 11, 12 : दोनों का अलग-अलग हर एक खाने का दिया हुआ असर होगा ।
ख़ाना नम्बर 7 : औरत झगड़ालू । दोनों का खाली नं० 7 बुध का असर होगा । बजुर्गों पर काग रेखा मगर खुद अपने लिये सूर्य नं० 9 का असर । तीर्थ यात्रा 2 साल और उत्तम फल देने वाली । औरत की उमर तक तह **मकान में (बज़ुर्गी जद्दी) सुर्ख रंग (सूर्य या मंगल का) दोनों ग्रहों की दुश्मनी का बुरा असर देगा ।**
ख़ाना नम्बर 10 : राज दरबार से ''ठाठे पड़ा ख़ैर'' की तरह की

किस्मत टेवा अंधे ग्रहों का होगा । शनि हमेशा बुरा फल देगा । साँप को दूध पिलाना शुभ होगा । ख़ाना नं० 4 के ग्रह सहायक होंगे । नीच वृहस्पति का असर (ख़ाना नं० 1 वृहस्पति) होगा । सन्तान के लिए तथा सन्तान पैदा होने के लिए होगा।

सूर्य – मंगल

तलवार – लाल – बचपन की उमर – अपनी औलाद और अपने खून के रिशतेदार – संबंधियों से संबंध – दोनों का उत्तम फल होगा। सूर्य का उत्तम प्रभाव होगा । सूर्य रोशनी है तो मंगल इसकी किरणें होगी । या वह और या उस का भाई दोनों बुलन्द होंगे । मंगल बद का संबंध बिल्कुल मंदा । मौतें होंगी।

चार कोना मकान शुभ, 13 कोना मंगल बद का असर देगा ।

किसी भी घर में हों, सूर्य हमेशा ऊँच फल का होगा । निकलते सूर्य की तरह **बचपन से या जन्म वक्त से अच्छा उमदा और उत्तम और उत्तम किस्मत का मालिक ।** दुश्मन पर हमेशा गालिब । उमर पूरी बल्कि सौ साला होवे । दिली साफ ताकत । धर्म में खोट न होगा ।
ख़ाना नम्बर 9 : अच्छे दर्जे का व्यक्ति होगा ।

ख़ाना नम्बर 1 : अपने से छोटों के साथ समान पर झगड़ा ।
दोनों ख़ाना न० 1 शनि 11 और चन्द्र ख़ाना न० 6 : भाग्यवान। **बाकी घर :** दोनों का अपना - अपना और अलग-अलग परन्तु सूर्य का प्रबल - उत्तम । चन्द्र (माता, धन का खज़ाना, वगैरा) ऐसे टेवे में रद्दी। मन्दा या हल्का ही होगा । मगर कुष्टी न होगा ।

सूर्य - बुध

सर सब्ज़ पहाड़ - लाल फिटकरी - शीशा सफेद - मसनूई नेक मंगल - औलाद की ज़िन्दगी का मालिक - नेक केतू - दोनों का और उत्तम फल - **सूर्य का उत्तम प्रबल होगा** । राज संबंध और सरकारी

काम करने वाले वगैरा ज़रुर होगी और लाभदायक ।

सूर्य की आत्मा इन्सानी तो बुध विधाता की कलम होगा । **सूर्य बन्दर तो बुध लंगूर** की दुम की तरह सहायक। उमर लम्बी और पूरी मगर मौत अचानक । दुश्मन (सूर्य के) ग्रहों के घरों में झगड़ा पैदा होगा । मगर फैसला हक में (अज़ राज दरबार) । स्वयं सूर्य की औसत आमदन अच्छी होगी बशर्ते कि सूर्य नीच न हो । नहीं तो फोकी ताक़त होगी । विद्या व क़लम हमेशा मददगार । लैम्प व तहरीर उत्तम फल देंगे । बुध की केवल उमर 17 साल तक बुध का अलग फल न होगा । 17 साल उमर लड़की की । 17 साल उमर के बाद बुध सूर्य को सहायता देगा । शुक्र रद्दी 25 साल तक।

सूर्य देखे बुध को :
1 फीसदी पर : बुध का जुदा असर ज़ाहिर न होगा । स्त्री घर - ससुराल - अमीर होंगे और स्त्री की ताक़त उत्तम होगी ।
5 फीसदी पर : स्त्री की किस्मत शीशे की तरह और भी चमके । मिट्टी दूर होगी ।
25 फीसदी पर : ज्योतिष ज्ञान अच्छा होगा ।
(2) बुध देखे सूर्य को :
सेहत अच्छी । दस्ती दिमागी कामकाज बहुत अच्छा । स्त्री पर नेक असर होगा । लेकिन अगर चन्द्र नष्ट हो तो दिमाग़ी बिमारियाँ होंगी ।
(3) दोनों मुश्तरका :
बचपन में तकलीफ होगी। औरत की ज़ुबान का अक्षर पत्थर पर लकीर होगा । खुद - अच्छा अमीर होगा । सेहत उत्तम होगी मगर व्यापार मंदा होगा । **बुध का असर 45 साल की उमर तक जुदा के लिये व्यापार कोई काम न देगा ।** सूर्य बुध मुश्तरका में सूर्य कभी नीच फल का न होगा । बुध खुद बेशक मारा जाये यानि जिन घरों में सूर्य नीच

होगा वहाँ **बुध का असर मन्दा होगा । जहाँ बुध का मन्दा है वहाँ सूर्य पर दाग लगेगा ।** मगर बुध की चीज़ें हमेशा सूर्य को मदद देंगी ।
(4) दोनों को देखें:
(अ) चन्द्र या वृहस्पति : मन्दे फल हों ।
(आ) शनि: नेक फल । अब सूर्य शनि का झगड़ा न होगा ।
(इ) सूर्य कायम और बुध 3-6 : बज़रिया खुद अपनी कलम राज दरबार से बरकत पावे । ईमानदारी का धन बरकत देवें ।
(5) दोनों शनि को देखें : झगड़े का फैसला अनुकूल न होगा ।
ख़ाना नम्बर 1 : चक्की जो जगह वही जगह हिलती फिरे । मानिन्द बज़ीर साहबे तदबीरा सरसब्ज़ पहाड़ की शान । योग अभ्यास का नेक फल । झगड़ा राज दरबार में अपने से बड़े के साथ मगर फैसला हक में होगा ।
ख़ाना नम्बर 2 : शारीरिक, मानसिक उत्तम, माली हल्का चाहे सूर्य नं० 8 और बुध नं० 2 ही हों । मगर ख़ाना नं० 1 का प्रभाव शामिल ही होगा ।
ख़ाना नम्बर 3 : बहुत ही उत्तम । राहू का अब कुण्डली में बुरा असर न होगा । **आशिक तो होगा मगर बदनाम न होगा ।**
ख़ाना नम्बर 4, 5 : अपना अपना और अलग-अलग असर लेंगे ।
ख़ाना नम्बर 5 और शनि नं० 9 में : औलाद पर कोई बुरा असर न होगा। और न ही बजुर्गों पर मन्दा असर होगा।
ख़ाना नम्बर 6 :
बुध क़ायम और सूर्य मन्दा अज़ दृष्टि नं० 2 : नेक नसीब हो ।
बुध क़ायम और सूर्य बरबाद : मनहूस, मन्द भाग ।
सूर्य कायम, बुध मन्दा : नेक असर होगा ।
दोनों क़ायम या नं० 2 ख़ाली : औलाद का सुख,अपनी उमर कम होगा।

ख़ाना नम्बर 7 : अगर शुक्र कायम और नेक तो औरत अमीर खानदान से वरना सुसराल में मन्दी हालत । खुद वह

आदमी सुर्य की तरह उत्तम और मुकम्मल । केतु औलाद मन्दा । खुद आमदन की नाली हज़ारों जंगल पहाड़ सैर सब करे । चलते रहट की तरह आमदन जारी । फ़व्वारे का ताज़ा उठता पानी । **राज दरबार से कोई विशेष लाभ न हो । ज्योतिषज्ञान सहायक रहे ।** चाहे स्वयं लाभ न पावे । बुध का फल 34 साला उमर के बाद नेक होगा । अब केतु भी उत्तम होगा । इधर डण्डे उधर डण्डे चले होंगें ।

ख़ाना नम्बर 8 : बुध अब बहन की हालत मन्दी और ख़ाना नं० 2 के ग्रहों को बरबाद करेगा । **शीशे के बर्तन को गुड़ से भर कर शमशान में दबाना सहायक होगा ।** दोनों का अलग -अलग फल होगा ।

ख़ाना नम्बर 9 : लसूड़े की गिटक के जैसा हाल होगा । 17-17 साला उमर मन्दा असर होगा । वास्ते राज दरबार का संबंध 24 **साला उमर से दोनों का फल शुभ होगा ।** और जो 34 से तरक़्क़ी पर होगा । नर औलाद 34 साला उमर से पहले क़ायम न होगी । न ही लड़की के नर औलाद 22 साला उमर तक होगी । विशेष कर इसकी तीसरे नम्बर की लड़की 6 साला उमर तक (सिवाय पहले व तीसरे साल) बिलकुल शुभ होगी । या इसकी हर (एक) नम्बर की लड़की ऐसी लड़की की उमर का हर नम्बर का साल वही फल देगा जो बुध हर ख़ाने में देता है । **मन्दी हालत में सूर्य का या मंगल का उपाय सहायक होगा ।** जो लड़की का जन्मदिन रविवार या मंगल भी हो सकता है ।

ख़ाना नम्बर 1 : ख़ाना नं० 1, 2 का ऊपर लिखा फल शामिल होगा । दौलतमन्द मगर बदनाम । अधिक बदनामी मिलती रहे ।

ख़ाना नम्बर 11 : जद्दी मकानों या ज़ाती मकान की ज़मीन ।

ख़ाना नम्बर 12 : अपना अपना फल ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 13

सूर्य — शनि

ख़ाली बुध । दोनों का और खराब फल होगा । बिना समय ग्रहण सूर्य शनि की चीज़े (नारियल) चलते पानी में बहाना शुभ होगा ।

कव्वा – दो मुहँ का साँप – मसनूई मंगल बद और नीच राहू का असर होगा । झगड़े फ़साद बाइ से तबाही – असर का समय बुढ़ापे से संबंधित होगा ।

मन्दी ऊर्ध रेखा होगी । दोनों के झगड़े में शुक्र बरबाद होगा । **कीकर का पेड़ बाइ से तबाह होगा ।** साँप बन्दर का तमाशा होगा । खाली बुध बेमाइनी – का असर होगा । जिसमें राहू की शरारत **शामिल होगी । ज़वानी में तकलीफ हो । सेहत की खराबियाँ और राज दर**बार की कमाई बरबाद हो । लेकिन जब दोनों मंगल के घर या मंगल भी दृष्टि से मिले तो सेहत उत्तम ।

सूर्य देखे शनि को : शुक्र उजड़े । औरत पर औरत मरती जावे मगर खुद मज़बूत । उमदा ताकत । स्कूलों के आम ज्ञान के अतिरिक्त कार्यालय ज्ञान । जादूगरी । मकानों का ज्ञान होगा ।

शनि देखे सूर्य को : शुक्र आबाद होगा । उत्तम फल का ।

25 फीसदी पर : अनुभव का ज्ञान सहायक होगा ।

5 फीसदी पर : मकानों का ज्ञान – शनि की चीज़ें ।

1 फीसदी पर : **(1) शनि होवे पहले घरों में** -सूर्य का असर खराब करता जावे । मगर जाती कमाई में चन्द्र – मंगल – बुध – वृहस्पति की संबंधित चीज़ों का कोई बुरा फल न होगा ।

शनि जब पहले घरों में हो तो सूर्य पर स्याही डालेगा । **ऐसी हालत में मकान रिहाइशी की नीव में पानी का बर्तन मिट्टी का कटोरा लेकर दबाना जिसमें चावल और मीठा डाला जाये । (अगर हो सके 4 – 43 दिन तक पानी क़ायम रखें । यानि बर्तन को सूखने न देवें) शुभ होगा ।**

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 131

(2) सूर्य होवे पहले घरों में : कोई बुरा असर न होगा । दोनों का अपना अपना और दिया हुआ असर होगा ।

ख़ाना नम्बर 1 : काग रेखा व मच्छ रेखा (शनि नं० 1 देखें) मुश्तरका – ऊँट (मंगलबद) 4 बोता (शनि) 45 (मन्दे) होगा । मगर वह ब्रह्मज्ञानी होगा । मसनूई बुध मन्दा ।

ख़ाना नम्बर 5 : मज़बूत तिबा । अगर शनि का ज़ाती स्वभाव मन्दा हो तो 9 साल ख़ाना नं० 5 में आने के दिन से मन्दे खौफ़ अक्सर होगें ।

ख़ाना नम्बर 6 : सोने की जगह मिट्टी के तवे । अगर बुध और चन्द्र कायम तो औलाद की 18 साला उमर से सब कुछ बहाल होवे । अगर नं० 2 की दृष्टि से सूर्य मन्दा और शनि कायम तो औरत का सुख हल्का । अगर सूर्य कायम और शनि मन्दा तो औरत का सुख पूरा । तकिया मुसाफिर – बाकी 6 वाले मकान जैसा हाल – **चोर रास्ते में नीले फूल या नीले रंग काँच के मोती दबाना सहायक होंगे ।** समय कच्ची शाम ।

ख़ाना नम्बर 9 : दौलतमन्द मगर मतलब परस्त ।

दोनों नं० 9 और मंगल बद या बुध नं० 3 का संबंध : ख़ाना नं० 3 और 9 दोनों ही बरबाद और मन्दे होंगे ।

ख़ाना नम्बर 1 : दूसरों की मौत में खुद वैसे ही आ मरे ।

खाना नम्बर 11 : ख़ाना नं० 9 का ऊपर का असर – सिर्फ बूरा हिस्सा ।

बाकी घर : अपना अपना असर देंगे ।

चन्द्र-मंगल

सुख 3 साल – औलाद 27 साल – मुसीबत 2 साल (बद) – दोनों का उत्तम फल होगा ।

मधुपान (दूध में शहद) श्रेष्ठ धन रेखा – दोनों आपसी चन्द्र या मंगल दोनों में से किसी एक के पक्के घर (4-3-8) में हों तो मंगल बद का नुकसान भी बाकी न होगा ।

दोनों मुश्तरका को देखे या वह देखें :–

सूर्य : राज योग – हकूमत करने वाला साहब ।

वृहस्पति : सबसे उत्तम लक्ष्मी – सारी उमर का पूरा नेक फल होगा ।

शुक्र : औलाद के विघ्न । अपना धन प्रयोग करने से पहले ही चल बसे ।

बुध : व्यापारी – अक्ल का धनी – मगर धन की शर्त नहीं है ।

शनि : ज़हरीले जानवरों और दरिंदों से खतरा – मौत होवे । डरपोक ज़िद्दी, मन्द भाग लेकिन जब शनि नं० 1 – 11 का न हो, भतीजे, भानजे खा जावें । मदद कोई न देवें ।

ख़ाना नम्बर 1 : अपना अपना फल ।

ख़ाना नम्बर 2 : श्रेष्ठ धन रेखा ।

ख़ाना नम्बर 3 : अकलमन्द, साहिबे तदबीर – इज़्ज़त तरक्की और दौलत का मालिक, साहिबे इक़बाल और आराम पावे ।

ख़ाना नम्बर 4 : धन रेखा का निकास । नेक असर बशर्ते कि बुध और शनि का संबंध (4–1) से न हो जावे ।

ख़ाना नम्बर 7 : धन, दौलत, परिवार का अमीर, मगर मौत दुर्घटना से होगी ।

ख़ाना नम्बर 9 : खुद दुष्ट भाग्यवान, मगर औलाद उत्तम , अमीर ।

ख़ाना नम्बर 1 : धन की शर्त नहीं मगर मौत बुरी मौत हो ।

ख़ाना नम्बर 11 : बहमी, लालची । शनि से धन का फैसला होगा । जिसका संबंध लालची बनाता है ।

बाक़ी घर : बाकी अपना अपना असर होगा ।

चन्द्र - बुध

लड़कियाँ 6 साल – बीमारी 15 साल – दौलत 22 साल ।

दुनियावी ख़राब – रुहानी चन्द्र का उत्तम और प्रबल ।

माँ, धी, दरिया के पानी में रेत । दुनिया तोता –

हंस परिंदा – कूआँ व पौड़ियाँ शुभ ।

अगर बुध नेक होवे तो चन्द्र भी नेक होगा । लेकिन जब बुध मंदा होवे तो न सिर्फ चन्द्र मंदा होगा । लेकिन जब बुध मंदा होवे तो न सिर्फ चन्द्र मंदा होगा । बल्कि शनि भी औलाद के संबंध में अपने ही बच्चे तक खा जाने वाला बुरा साँप होगा ।

चन्द्र पहले घरों में हो तो चन्द्र का असर प्रबल होगा । ग़ैबी हाल अच्छा । दुनियावी हालत में दोनों का ही मंदा होगा।

दोनों अलग–अलग होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला होवे तो पूरा नेक और उत्तम फल देगा । लेकिन जब दोनों संबंधित हो कर दोनो में से किसी के घर इकट्ठे हों तो नेकी की शर्त ज़रुरी न होगी । सिवाये ख़ाना नं० 4 जहाँ कि गैबी अच्छा, दुनियावी हाल दोनों का मंदा ।

दोनों मुशतरका या दो में से किसी के साथ पापी ग्रह या दुश्मन ग्रह (जैसे एक का दुश्मन – चाहे दोनों का दुश्मन हो) या मंगल बद का संबंध हो जावे तो दोनों ही ग्रहों का ग़ैबी और दुनियावी फल मंदा होवे। **दोनों के साथ वृहस्पति भी आ मिले तो बुध मारा जायेगा ।**

अगर बुध पहले घरों में हो तो बुध का असर प्रबल होगा । या दोनों बुध के घरों में इकट्ठे हो जावें तो मन्दे नतीजे होंगे ।

दोनों ही ऊपर की मिलावटों से अगर मंदे हो जावें तो चन्द्र (माता), बुध (बेटी) जुदा रहें । या बुध के हाथ के काम आदि के काम बंद करें । दोनों मुशतरका मन्दे शनि का काम देंगे । बल्कि चन्द्र नष्ट लेंगे । इश्क बाइसे तबाही होगा ।

जब दोनों दो में से किसी के घर इकट्ठे हों मगर जब दोनों आपसी, मगर दोनों के घरों से बाहर, किसी और जगह इकट्ठे हों और दृष्टि खाली – गोया माँ बेटी अकेली ही जोड़ी – तो दोनों उत्तम होंगे । धन दौलत उत्तम मगर दिल की कमज़ोरी होगी ।

दोनों को देखे :

मंगल बद : मामों तरफ मंदा हाल मगर अपनी उमर लम्बी और उत्तम ।

वृहस्पति, सूर्य या शनि : नेक असर होगा ।

दोनों आमने सामने हों और दृष्टि हो :

1 फीसदी : निहायत खराब असर

5 फीसदी : खराब पौड़ियों के सामन कूँआ ।

25 फीसदी : मामूली खराब

मगर धन बर्बाद न होगा, जब तक चन्द्र प्रबल रहे या कूँआ खुला व आबाद रहे । दिल बकरी का होगा जो खुद कशी तक का नतीजा हो सकता है ।

ख़ाना नम्बर 4 : नकली बहम और दूसरों की मुसीबत खुद अपने पर लेकर आत्म हत्या तक का दिल होवे । मगर

ग़रीबी के कारण मौत न होगी ।
ख़ाना नम्बर 6 : बज़ाज़ी के कामों से राजा होगा । अकल क़ायम – हमदर्द । मातृ हिस्सा का असर नेक । खुद अपनी नज़र कम असर नेक । खुद अपनी नज़र कम । खूनी होगा । एक तरफा तबीयत वाला । मगर दूसरों की मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे, अकल की कोई पेश न जायेगी चाहे लाखोंपति हो । 6 बाकी रहने वाले मकान की किस्मत (तुकिया मुसाफर) होगी । मगर माता पिता का सुख सागर लम्बा व नेक होगा । बुध नं० 12 का हाल ख्याल में रहे । **चाँदी का गिलास – कौल – कटोरा ।**
ख़ाना नम्बर 7 : वही असर जो ऊपर नं० 6 का है । मगर अब माता न होगी । तबीयत बदलने वाला होगा । खुद दिमाग़ी होंगे मगर दिमाग आन्तरिक का साथ होगा । और तकनीकी व्यवसाय बरबाद होगा ।
ख़ाना नम्बर 1 : निहायत बुरी और मनहूस ज़िन्दगी । ख़तरा मौत होगा।

ख़ाना नम्बर 11 : समुन्द्र में, सीप में मोती बनाने वाली वर्षा हर रोज़ नहीं होती । लेकिन जब होगी, मोती बना कर ही जायेगी । गुलगुले की बारिश हर रोज़ न होगी । लेकिन जब होगी, शादी के दिन से शुभ – दर – शुभ फल पैदा होंगे ।
बाक़ी घर : अपना अपना दिया हुआ हाल और असर लेंगे ।

चन्द्र – शनि

काली स्याही – राज दरबार 12 साल – दौलत–सनीचर 42 साल– पानी की बाऊली । दोनों का और खराब फल होगा । चन्द्र ग्रहण के वक्त शनि की चीज़ें चलते पानी में बहाना शुभ होगा ।

उल्टा कुल्हाड़ा – मसनूई नीच असर का केतू होगा । विसर्ग – कछुआ । दो रंगी शनि की चीज़ें । पाँच कल्याणी स्याह भैंस (या सारी स्याह माया सफेद) । 5 कल्याणी लाल रंग भूरी भैंस । औलाद केतू की बजाय बाप दादा भाई बन्दों पर हमला करेगी । मंदे असर होंगे, जब तक वहाँ सूर्य प्रबल वाला मौजूद न होवे ।

दूध में ज़हर होगी । चन्द्र धन शनि खुज़ानची होगा । मंदी मोटर लारी या सामान सवारी (हादसे करने वाला) आँखों की बीमारियाँ या टेढ़ापन होगा । स्याह मुँह माया । (बदनामी का सबक पैदा करने वाला धन) । आँख (डेले चन्द्र नज़र शनि) से फैसला होगा कि दोनों में प्रबल कौन है।

चाँदी का पैसा स्याह व खोटा लोहे का टुकड़ा होगा । खूनी कूआँ या मीठे पानी में ज़हर मिली होगी । शनि के काम दुख का सबक होंगे । खुद अपनी कमाई अपने काम न आवे । किसी दूसरे के साथ से, जो हम–उमर हो या दूसरी उमर का साथी (बहिसाब उमर) हो, धन पैदा होगा जो स्त्री, भाई बन्दों के हाथ लगता हुआ फिर भी स्याह मुँह माया साबित होवे । जब कभी चन्द्र के दुशमन ग्रहों का दौरा हो (चन्द्र के दुशमन नं० 1 में हो जावें) चोरी और धन हानि होगी । ऐसा धन स्त्री

ख़ानदान, सुसराल या दूसरे यार – दोस्तों के काम बहूत आवे ।
शनि चन्द्र को देखे : चन्द्र का असर बर्बाद हो ।
चन्द्र देखे शनि को : शनि का मंदा मगर चन्द्र उमदा ।

जब दोनों ग्रह आपसी दीवार वाले घरों में हों और कूँए की दीवार फाड़ कर मकान या तहखाना वगैरा बना कर दोनों को मिला लिया जाये तो दूध में ज़हर मिला ली होगी । **चन्द्र नष्ट, औलाद बर्बाद । खुद अधरंग । दौलत समाप्त । सब मंदे नतीजे हों ।**
ख़ाना नम्बर 2: उत्तम असर होवे । स्याह घोड़ा । **कूँआ लगाना शुभ होगा ।** आम का पेड़ भी शुभ ।
खाना नम्बर 3 : चोरी का घर है । संदूकची होगी मगर धन से खाली। नक़द माल अधिक । जायदाद बेशुमार । शनि का उपाए । राशि फल का होगा । (केतू का उपाए) । लेकिन **अगर केतु रद्दी हो तो लाल फिटकरी ज़मीन में दबाना मुबारक होगा ।**
खाना नम्बर 4 : पहाड़ पानी में बह निकलेगा । मौत पानी से रात को होगी । अगर सूर्य का साथ (बमूजब नं० 1, 1 वगैरा) न हो । अगर सूर्य की मदद मिलती हो तो शुभ होगा । मगर मौत दिन के वक्त होगी पानी से। दबा हुआ धन होगा । जो लाबल्द होने या इसकी मौत के बाद दूसरों के काम आयेगा । औरत की कबूतर बाज़ी बाइसे तबाही। **साँप को दूध पिलाना मुबारक होगा ।** पितृ रेखा का उत्तम असर होगा । शनि सहायक साया करने वाला साँप होगा । ख़ुद उसके लिये । मगर दूसरों के लिये खूनी साँप होगा । अपनी बेवकूफ़ी से मोतिया नज़र बर्बाद करावे । चोट से ख़राब नज़र न होगी । मौत परदेस में होगी । बाक़ी 4 वाला मकान का हाल । मानिन्द गधा ।
खाना नम्बर 5 : औलाद पर खराबी (सिर्फ धन दौलत) होगी । मुसीबत में दुख का यम । शनि के आतिश ख़ेज़ पहाड़ का धूआँधार ज़माना खड़ा करेगा । जो चन्द्र के समन्द्र में ग़रक होकर ग़ोता देने का सबब होगा।

खाना नम्बर 6 : दुनिया के 3 कुत्ते बाइसे खराबी होंगे । बहन के घर भाई – नानके घर दोहता – **सुसराल के घर जबाई कुत्ता होगा । चन्द्र शनि दोनों की मिट्टी बर्बाद और ख़राब होगी** । माता व जायदाद जद्दी तोमतबदी हालत व बर्बाद । मगर खुद आमदन व मकान आबाद होंगे।
खाना नम्बर 7 : आँखों की बीमारियाँ अँधापन तक हो सकता है। स्त्रियों के झगड़े ज़िन्दगी तबाह करें । 42 साला उमर में माता पिता में से सिर्फ एक होगा । मौत हथियार से होगी मगर गृहस्थ और मातृभूमि में ।
खाना नम्बर 8 : बुढ़ापे में नज़र का तकाज़ा होगा ।
खाना नम्बर 9 : धन दौलत निहासत उत्तम मगर चन्द्र का बुरा असर मिला हुआ होगा ।

खाना नम्बर ो-11 : पानी व माया के कूँए भी खुश्क हो जावें । ज़हर बढती जावे । तारे वाला टट्टू घोड़ा ।
खाना नम्बर 12 : माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा । औरत का सुख हल्का ।
बाकी घर : अपना अपना असर होगा ।

शुक्र - चन्द्र

आराम 4 साल - बीमारी 15 साल - दौलत 12 वरना 27 साल। दुनियावी दोनों का ख़राब । बातिनी चन्द्र का उत्तम व प्रबल होगा ।

खसरा गाय (न बैल न गाय) शुक्र के घर (मर्द का सुसराल) माता के घर (मामों) दोनों बर्बाद करे । नूँह सास का झगड़ा । माता न होगी । अगर होगी इसकी नज़र न होगी । शादी के दिन से दोनों ग्रहों का मंदा असर शुरु होगा।
शुक्र देखे चन्द्र को : औरतों का विरोधी ।
चन्द्र देखे शुक्र को : फ़कीर साहबे कमाल होगा ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक - 138

दोनों मुशतरका : मामूली ज़िन्दगी बसर करने वाला हो ।
दोनों मुशतरका को मंगल बद देखे : स्त्रियाँ (शुक्र चन्द्र) तबाह होंगी ।

बुध की मदद या उपाऊ दोनों का नेक असर पैदा करेगा । दही से पानी राख ही निकालेगी । दोनों अपने अपने पक्के घरों में अलग-अलग हों तो काम देव से दूर होगा ।
खाना नम्बर 1 : शुक्र औरत की सेहत मंदी । कमज़ोरी दीवानगी वगैरा ।
खाना नम्बर 2 : दवाईयों के काम से फायदा । हकीम होने की शर्त न होगी । वृहस्पति का नेक फल अब शमिल नहीं होगा । इश्म दुनयाबी (औरत की बद फेली - इश्क वगैरा) बाइसे तबाही ।
खाना नम्बर 4 : शरीफ़ होंगे-माँ बाप दोनों की तरफ से, ख़ालिस साहिबे कमाल वरना नशा बाज़ों का सरदार - जब दृष्टि खाली - कामदेव से दूर होगा ।
(1) दोनों नं० 4 और शनि नं० ो : माँ का नेक असर शामिल होगा ।
(2) दोनों नं० 4 और सूर्य नं० ो : बाप का नेक असर शामिल होगा ।
(3) दोनों नं० 4 और सूरज नं० 5 : शर्मीला लड़कियों जैसा मगर बुद्धू न होगा ।
खाना नम्बर 7 : धन का बढ़ना बंद होगा । सख़ी परहेज़गार होगा । अगर धन का पूरा और नेक फ़ायदा लेवे तो उमदा असर वरना वही धन पाँचों ऐब करके करवाकर बरबादी करे । बाकी 7 वाँ हाथी का मकान।
खाना नम्बर 8 : बद चलती की बीमारियाँ । ख़ुद सिखाता बेवकूफियां वजह होंगी । **बूढ़ी माताओं और गऊ सेवा या गौदान शुभ होंगे । वास्ते सेहत और धन दौलत ।**
बाक़ी घर : अपना अपना असर लेंगे ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक - 139

शुक्र - मंगल

आग का डर 17 साल - तीर्थ 2 साल - सुख 7 साल - बीमारी 9 साल - दोनों का और उत्तम फल होगा ।

कलाई रेखा - मिट्टी का तदूंर - मीठा अनार गेरु । धन दौलत जिसके साथ परिवार भी हो ।

शुक्र मंगल - साथी इकट्ठे - या बदले घर बाहम हों । दो की जगह अब चन्द्र होगा । ज़ाहिरा बेशक दोनों हों ।
दोनों को वृहस्पति देखे : निहायत उत्तम लक्ष्मी होगी ।
दोनों को पापी या मंगल बद देखे : हर तरह मंदा । मौत बुरी तक असर हो ।
खाना नम्बर 2 : सुसराल ख़ानदान से मीठी खाँड की तरह का उमदा असर व दौलत का फायदा हो । सुसराल भी खुद अमीर होंगे । मगर लाबल्द न होंगे ।
खाना नम्बर 3 : ऐसा धन भाई बहनों को तारे मगर ख़ुद ज़िनाकार अय्याश होगा ।
खाना नम्बर 4 : माता के भाई बंद (नर आदमी) ख़ुद तबाह और इसे तबाह करें । ज़ाहरा पानी में डूबते जायें । मंगल बद अड़ता होगा ।
खाना नम्बर 7 : हरदम बढ़े परिवार । और दौलत का भारी भंडार होगा । औलाद दर औलाद साहिबे औलाद । पड़ोते पड़पोते बुहत होंगे । इसका धन अपने खून से ही पैदाशुदो को तारे । **द्वारा अपनी औरत या भाई बंद के । (बुआ, बहन, फूफी नहीं)**
खाना नम्बर 8 : ऐसे जम्मे चन्द्र भान, चुल्हे आग न मंजे बाण ।

खुद ऐसा हाल मगर हर एक का निन्दक और बद ख़ोई करने वाला । हमला रोकने की हिम्मत का भी साथ होगा ।
खाना नम्बर ो : मामूली सी मिट्टी की डली पर लम्बा झगड़ा कर लेने वाला होगा । या मिट्टी के लिये खाँड भी बर्बाद कर लेगा । औरत

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक - 14

के लिये भाईयों को मरवा देगा ।
खाना नं० 2 का अब खास (असर) संबंध होगा ।

बाकी घर : अपना अपना प्रभाव होगा ।

शुक्र - बुध

राज संबंध 22 साल – औरत का सुख 37 साल – दौलत 36 साल – दुश्मन 4 साल । दोनों का और उत्तम फल होगा ।

तराज़ू – रेतीली मिट्टी – सूर्य का असर होगा । जो सिर्फ सेहत का मालिक होगा । हकूमत के साथ की शर्त न होगी । बिना कारण भी हो सकता है । शुक्र अगर केतू का जिस्म है तो बुध उसकी टेढ़ी दुम होगी । जब कभी मंगल का संबंध (किसी तरह भी) हो जावे तो बुध शेर को भी दाँत दिखायेगा । और शेर की तरह गाय पर हमला कर देगा । दोनों का आपसी संबंध (शुक्र–बुध) औरत पर नेक होगा । चाहे किसी भी घर हों (सिवाये ख़ाना नं० 4, जहांकि दोनों का ही फल रद्दी होगा) व्यापार में फायदा और सूर्य ग्रहण में मदद होगी ।

शुक्र बुध जब दो हों इकट्ठे , शनि भी उत्तम होता है ।
धन दौलत की कमी न कोई, घी मिट्टी से निकलता है ।

चन्द्र ग्रहण के वक्त भी चन्द्र की सब चीज़ों का नेक फल साथ होगा। सिवाय सौतेली माता के जो साथ न देगी । दोनों संबंधित होने पर जब तक सूर्य का साथ का संबंध न होवे, बुध का केवल उत्तम और ऊँच फल साथ होगा। लेकिन जब सूर्य का संबंध हो जावे, शुक्र का नेक असर होगा । वह अमीर खानदान से होगी और सूर्य की तरह उत्तम ।

दोनों को शनि का साथ भी शुभ होगा । जायदाद उत्तम होगी । सब हालतों में ईमानदारी का धन साथ देगा ।

दोनों जुदा जुदा होवें तो :-

(1) जब दृष्टि वाले घरों में हों **(1 फीसदी-5-खवाह 25) और**

बुध कुण्डली के पहले घरों में हो :

तो दोनों के मुशतरका असर में कुत्ते की नेक नीयत (ऊँच –केतु) का फल शामिल होगा ।

जब शुक्र कुण्डली के पहले घरों में हो :

तो दोनों के आपसी असर में मिश्रत प्रभाव होगा जैसे कि सौ चूहें खाकर बिल्ली हज़ को चली (ऊँच राहु) की नीयत भरी होगी ।

दृष्टि वाले घरों में आपसी संबंध होने पर शुक्र का असर प्रबल होगा।

(2) **जब दोनों ग्रह अपने से सातवें घरों में हो:**

तो आम असूल से कुछ फर्क होगा । और दोनों का फल खराब होगा । सफेद रंग गाय मंदी हालत का सबूत होगा ।

शुक्र ख़ाना नं० में बुध हो ख़ाना नं० में

3 9 6 12 8 2 9 3

12 6 2 8

दोनों घरों व दोनों ग्रहों : का फल मंदा होगा ।

दोनों ग्रहों का फल बर्बाद होगा । दोनों का ऊंच होगा । केतू का उत्तम प्रकट होगा ।

दोनों का रद्दी । नं० 8 का मुर्दा बुध अब शुक्र को, जो वृहस्पति के घर है, भी क्षमा न करेगा ।

ऊपर के घरों में अगर दोनों मुशतरका हों तो नेकी और सूर्य का फल होगा।

(3) **दोनों दृष्टि के घरों से बाहर हों**

तो बुध अपना फल और अपने बैठा होने वाले घर का सारे प्रभाव शुक्र वाले घर और शुक्र में मिला देगा । बशर्ते बुध के साथ शुक्र के दुशमन ग्रह न बैठे हों । जब यह दोनों ग्रह किसी तरह भी न मिल सकते हों तो दोनों बर्बाद । न फूल उमदा न फल अच्छा । बाद के घरों में बुध के मंदे फल को शुक्र रोक देगा मगर कुण्डली के पहले घरों के मंदे बुध का फल शुक्र रोक नहीं सकता ।

खाना नम्बर 1 : किस्मत में सूर्य का नेक असर शामिल होगा । मगर अल्प आयु हो ।

खाना नम्बर 2 : ज्ञानी, वरना हर दो का उत्तम अपना अपना फल ।

खाना नम्बर 3 : सर की श्रेष्ठ रेखा का उत्तम फल । जो चन्द्र के बुरे प्रभाव से बचायेगा । यानि जब चन्द्र भी रद्दी हो । यद्यपि सौतेली माता का कोई .लाभ न होगा मगर चन्द्र की सब चीज़ों का फल नेक होगा । चाहे चन्द्र ग्रहण हो ।

खाना नम्बर 4 : मामा खानदान और सुसराल का मंदा हाल होगा । खुद भी चाल चलन का शक्की होगा । लेकिन अगर चन्द्र क़ायम हो तो कोई बुरा असर न होगा ।

माता के भाई बंधु और बहन आदि कारण में ख़राबी का प्रभाव देगें । मगर लड़की वाला मामा शुभ होगा ।

खाना नम्बर 5 : इश्क, जबानी । अपने साथियों को बर्बाद करावे । शुक्र का पतंग होगा । मगर औलाद पर कोई बुरा असर न होगा ।

खाना नम्बर 6 : सर की श्रेष्ठ रेखा ऊपर ख़ाना नं० 3 वाला असर होगा । मगर औलाद के विघ्न। राज योग जब सूर्य का संबंध भी हो जावे। यानि नं० 2 में सूर्य शामिल हो तो किताबों का काम, छापाख़ाना, दिमागी काम, राज दरबार और अच्छी इज्जत मान तथा अधिक लाभ हो, । औरतों से नराजगी हो । अगर शनि नं० 2 में हो तो जायदाद बढ़ती जाये ।

हर दो हालत में ईमानदारी का धन साथ देगा ।

खाना नम्बर 7 : उत्तम फल । फूल फल दोनों उमदा की शानदार गुलज़ार सुख सब शानदार हो । अगर राहू या केतू का संबंध हो जावे तो मंदा फल होगा । औलाद के विघ्न वगैरा । शादी और औलाद दोनों मंदे होंगे । **काँसे का कटोरा सहायक होगा ।**

खाना नम्बर 8 : रब बनाई जोड़ी, एक अँधा दूसरा कोढ़ी । शुक्र ख़ुद अकल के विरुद्ध कार्यवाही । और बुध रद्दी से मामा व बहन बरबाद।

खाना नम्बर 9 : बुध के वक्त से (लड़की की पैदाइश या खुद उमर 17 साला) बाप दादा की सब उमीदों पर पानी फेर देगा । दोनों ग्रह अलग-अलग । मंगल बद का पूरा असर देंगे ।

खाना नम्बर 1 : साहिबे अकल । सेहत उमदा ।

खाना नम्बर 11 : अपनो से जुदाई । अपना अपना फल ।

खाना नम्बर 12 : दोनों रद्दी । पागल बकरी और कुत्ता अब औरत गाय का पेट फाड़ डालेंगे । गृहस्थ रद्दी । खाँड में रेता होगा । या शीशा पिसकर धोका देगा कि खाँड पड़ी है । मगर मुँह उसे खाकर तंग होगा । सेहत के मालिक होंगे । लड़की की पैदाइश से गृहस्थ मंदा होगा । औरत की सेहत भी खराब ही होगी । मगर खुद अपनी उमर पूरी परन्तु सौ साला तक होवे ।

शुक्र - शनि

दौलत 12 साल । दोनों का और बहुत उत्तम फल होगा । जब यह संबंधित होंगे, मंगल केतू भी आपस में साझें होंगे । **काली मिर्च व घी जो मंगल बद को हटा दे ।**

स्याह काला पूरे तौर पर । घर में ठाकुर मौजूद । मसनूई केतु (ऊँच हालत) जो ऐश का मालिक होगा । शनि के साथ या शनि की राशि नं० 1-11 में शुक्र काली कपिला गाय होगी । जो शनि के सारे बुरे असर से

बचा लेगी । दोनों आपस में बुध का नेक फल स्वयं शामिल हो जायेगा । इसकी कमाई नज़दीकी रिश्तेदार और मकान खा जायेंगे । मकान के ऊपर बिजली के बुरे असर से बचाने वाली लोहे की सिलाई होगी । यदि यह चीज़ें न हों तो धन की जगह जली राख होगी ।

दोनों मुशतरका देखें वृहस्पति को :किस्मत के दूसरे साथी आ मिलने पर किस्मत जागेगी ।

दोनों को बुध देखे : ज़ुबान का चस्का बर्बाद करे ।

दोनों को सूर्य देखे : शनि का पुरा ज़ोर बुरा असर । मौत पुर दर्द होगी ।

शुक्र शनि आपस में शनि से पायें इसका बाप होगा । अब बुध न ही बोलेगा । न ही मंदा फल देगा । चाहे नं० 6 में हों ।

खाना नम्बर 1 : काग रेखा - और खुद ज़ानी, भोग-विलास में रत्त ।

दोनों नं० 1, मंगल नं० 4 सूर्य नं० 2 चन्द्र नं० 12 : दलिद्री, आलसी, निर्धन, दुखिया ।

दोनों नं० 1 में राहु या केतु, सूर्य नं० 7 : हर तरह से मंदा हाल । जिसम में जलती आग की तरह का दुख खड़ा रहे । तपैदिक वगैरा । मिट्टी खराब और सेहत बर्बाद । दुखों का पुतला होवे ।

खाना नम्बर 3 : ज़िन्दगी और कमाई दूसरों के लिये होगी ।

खाना नम्बर 4 : अपना अपना

दोनों नं० 4 और सूरज नं० 1 : निहायत पुर दर्द मौत होवे ।

खाना नम्बर 7 : निहायत क़रीबी रिशतेदार कारोबार में शामिल होकर या वैसे ही इसका धन खा जायेंगे ।

दोनों नं० 7 चन्द्र नं० 1 सूर्य नं० 4 : नामर्द वरना डरपोक होगा ।

खाना नम्बर 9 : नेक फल । अब शुक्र मंगल बद का असर न देगा । वैश्या , गृहस्थी घर में आबाद हो गई होगी ।

दोनों नं० 9 वृहस्पति नं० 5 या नं० 6 या मुशतरका या

बिलमुकाबल: जायदाद की जायदादों वाला । स्त्री सुख पूरा होगा ।

खाना नम्बर 1 :

दोनों नं० 1 और सूर्य नं० 4 : शनि का बुरा प्रभाव न होगा । बल्कि जायदाद बनेगी। मौत भी डरेगी। बल्कि लम्बी उमर होगी । नकद रुपया बेशक कम ही होवे ।

खाना नम्बर 11 : दोनों का अपना अपना, उत्तम । अधिक अच्छी गृहस्थी साथी और इसकी लड़की लड़कों के रिशतेदार इसकी कमाई से गुजारा पायेंगे । धन दौलत सबके लिये बहुत होगा । और बढ़ेगा । मकान इत्यादि बहुत बनेगें या बना देगा ।

खाना नम्बर 12 : उत्तम फल । गृहस्थी सुख और ज़्यादा संख्या में खानदान .होगें , खेती (शुक्र के काम) से पूरा फायदा होगा।

दोनों नं० 12 बुध नं० 6 : ज़ानी होगा ।

मंगल - बुध

आग का डर 17 साल - फोकी इज़्ज़त 11 साल - वालिद 12 साल - लड़के 24 साल । मंगल का अच्छा बुध का खराब फल होगा।

अनार का फूल - कंठी वाला रोये तोता - मसनूई शनि (राहु स्वभाव) मौत बीमारी का मालिका और हर लानत

का मंगल बद । आतिशी शीशा (शीशा बुध में आग मंगल) । लड़की के लाल चमकीले कपड़े । (लाल मगर चमकीले न हो तो मंगल नेक होगा । चमकीला जो शादी के वक्त होता है मंगल नेक है) बुध की लम्बी उमर (17 साला तक) बुध का अलग असर न होगा । मगर अन्दर का बुरा असर होता रहेगा।

जैसा वृहस्पति टेवे में होवे वैसा ही दोनों मुशतरका का होगा । मगर शुक्र स्त्री की दिमाग़ी ताक़त उत्तम होगी । सर सब्ज़ पहाड़ का उत्तम

फल देगी । औरत की ज़बान का हरफ हरफ पत्थर की लकीर होगी । या गुरु से सुनकर आने के बाद बोलती मालूम होगी ।

ख़ाना नम्बर 1 : मज़बूत शरीर । औरत ख़ानदान को तारे ।
ख़ाना नम्बर 2: सुसराल धन दौलत पावें । अमीर हो जावें और धन दौलत देवें ।
ख़ाना नम्बर 3 : धन दौलत के बहुत रंग और ग़म देखे । धन चला जावे । हर खेल में तीन काने दिखलावे । अगर बड़ा भाई साथ हो और मदद पर, तो खुशी से गुजारा करता हो । माता पिता का सुख सागर लम्बा हो और उमदा । प्राकृतिक तौर से मदद मिले ।
ख़ाना नम्बर 4 : अपनी ज़ात पर बुरा असर न होगा । दूसरों के लिये वह खुद नहीं ।
ख़ाना नम्बर 6 : अब मंगल बुध की दुश्मनी न होगी । अपना अपना फल और नेक अर्थो का मिला हुआ ।
ख़ाना नम्बर 7 : मंगल सातवें सब कुछ उत्तम । धन दौलत परिवारी सबका सब ही रद्दी होगा, बुध मिले मंगल से जब । मंगल का शेर शुक्र की गाय पर भी हमला कर देगा । गृहस्थ बर्बाद । ज़हर तक की हालत हो सकती है।
ख़ाना नम्बर 8 : बुध के तीर को मंगल बद का मुँह । मामा खानदान और आगे औलाद इनकी भी तबाह करे । उमर 7, 14, 21, 28 तक माता खानदान को ले मरे । मामा वही बचे जो घर से बाहिर और वह भी जो साधु सर पर राख डाले । अगर घर में रहता हो तो मुदें से बूरी हालत होवे। बिना किसी कारण झगड़े आदि होंगे । जो कहो, सच ।
ख़ाना नम्बर 11 : शराब का इस्तेमाल आँख का टेढ़ापन देगा। या **शनि मकान और वृहस्पति गुरु पिता धन दौलत सोना मंदे हाल देंगे । जिस का उपाए गंगा जल सुबह सबेरे प्रयोग करना शुभ होगा ।** या **चन्द्र या वृहस्पति की चीज़ों का साथ शुभ होगा** । अब चन्द्र या वृहस्पति का

इलाज सहायक होगा ।
बाकी घर : अपना अपना असर ।

मंगल - शनि

बीमारी 5–15 साल – दौलत 24 साल – तकलीफ 1 साल – दोनों ग्रहों की बुनियाद अच्छी व मंदी राहु पर होगी । या दोनों का उत्तम फल होगा । जब राहु उत्तम हो ।

मसनूई राहू (ऊँच) झगड़े फसाद में सबसे आगे का मालिक । **नारियल, छोआरा बुढ़ापे में किस्मत की शान** । दयालु शिवजी व विष्णु जी होंगे । बुध का संबंध होवे तो राहू बुरी नियत का होगा । या काग रेखा पूरी होगी जो धन और परिवार दोनों ही उजाड़े ।
मुशतरका बैठे : कमान होगी । दिलावर , बहादुर । **सेहत उत्तम मगर बीमारी जब कभी हो, मौत का ही डर देवे।** मगर उमर लम्बी होगी । शनि का फल भी अधिक होगा । या दूसरे भाइयों की किस्मत भी उसे ही मिलेगी । साँप और शेर की मुशतरका तबीयत । आजिज , दूसरा तलवार के घाट। घर दौलत – मंदी की वजह से डाका के काबिल या डाका के वाक्यात हों । औसत आमदन 18 रुपये माहवार होगी ।
दोनों को देखे वृहस्पति जब वृहस्पति नं० 2 का न हो । :

अच्छी आमदन फिर भी ऋणि होगा । जबकि बाप कि तमाम जद्दी चीज़ों के खत्म हो जाने तक इन दोनों ग्रहों का फल सहायता न देगा । लोगों को बूरा प्रभाव देने वाला वृहस्पति होगा मगर खुद अपने लिये शुभ उमर । हरदम मददे मर्दां ।
दोनों को देखे वृहस्पति मगर जब वृहस्पति नं० 2 का हो । :-
अब गुरु भी चारों का सरदार होगा । धन दौलत अब अधिक होगी ।
दोनों दृष्टि में मगर चूल्हा :

दोनों अलग-अलग । अगर मंगल देखे शनि को तो मंगल खुद सिफर, बल्कि औलाद से तरसता तक होगा । मगर शनि (बलवान) दुगना।

अगर शनि देखे मंगल को तो दोनों प्रबल । दो डाकू बलवान ।

दोनों अलग-अलग मगर दृष्टि का संबंध न होवे :

तो दोनों का अपना अपना असर क़ायम, जो भी होवे । साथ व साथी ग्रह होने से दोनों मुशतरका होते है ।
ख़ाना नम्बर 1 :

काग रेखा । जिस दिन ऐसा व्यक्ति राज दरबार में काम शुरु करे दोनों ग्रहों का नेक फल होगा । (द्वारा मंगल) । मंदे समय तक काग रेखा (जब बुध मंदा होवे कुण्डली में) सब कुछ उड़ा दे । मगर उमर हार न देवे । औरत की दशक बाज़ी से ख़राबी रहे । स्याह आँख औरत मर्द का सब धन दौलत खुद अपने (औरत के) खानदान को पहूँचाती जावे । मगर भूरी आँख वाली मर्द खानदान को पालती जावे । हर दो हालत में सुसराल खानदान माला माल हो जावे ।

ख़ाना नम्बर 2 :
सुसराल से दौलत मिले । खुद अमीर होंगे मगर सन्तान हीन न होंगे । इनके धन के दरिया की लहर शुभ होगी । (द्वारा शुक्र) । जिस दिन शादी हो या सुसराल का संबंध पैदा हो जाये । वृहस्पति भी उत्तम फल का होगा।
ख़ाना नम्बर 3 :
अपने ही भाई बन्दु विरोध करें । ज़हर के उदाहरण हो । गृहस्थ मंदा। धन कम, जायदाद ज्यादा । खुद बहादुर दिल वाला होगा । लड़की की शादी होवे या लड़की ऋतुवान होवे । (द्वारा बुध) दोनों ग्रहों का नेक प्रभाव होगा ।
ख़ाना नम्बर 4 :
खेती की ज़मीन आवे । या घोड़ी बछेरी देवे । (द्वारा चन्द) दोनों का अलग-अलग खाना नं० 1 का फल होगा जोकि चन्द्र मंगल नं० 1 में लिखा है ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 149

ख़ाना नम्बर 5 :
जब ऐसे व्यक्ति के यदि औलाद पैदा होवे तो किस्मत जागे (द्वारा सूर्य)
ख़ाना नम्बर 6 :
जब छिपकली जिस्म पर चढ़ जावे पाँव की तरफ से या कुत्ती घर में या घर के सामने के घर में या मैदान में बच्चे देवे (द्वारा केतू), किस्मत जागेगी । नेकी मानने वाला न होगा ।
ख़ाना नम्बर 7 :
अपने रिशतेदारों और अपनी औलाद को तारने वाला धन होगा । दौलतमंद । औलाद, स्त्री और दुनिया का सुख पूरा (द्वारा शुक्र) । स्त्री से स्त्री संबंध या भोग हो। किस्मत जागेगी ।
ख़ाना नम्बर 8 :
अब दोनों ग्रह मारक स्थान के होगे । 3 कोना वाला हाल । मौते, मातम। **अब सिर्फ शमशान के कुँए का पानी शुभ होगा ।** वरना सब मंदा । बाक़ी सिफर वाला मकान । मुर्दा घाट ।
ख़ाना नम्बर 9 :
अगर बुध का संबंध होवे, सब से मंदी काग रेखा । वरना जन्म से ही सबसे उत्तम हालत । शाही जंगी धन व शाही परवरिश व हकूमत का साथ होगा । जो 6 साल उमदा रहे और आगे बढ़े। असल किस्मत का दिन वह होगा जब इसके गृहस्थ में बजुर्गों से संबंधित बतौर दान यज्ञ एक लम्बा चौड़ा आडम्बर होवे । (द्वारा वृहस्पति)
ख़ाना नम्बर 1 :
इसके मकान में दिन के वक्त (रात को नहीं) साँप ज़ाहिर हो । और वह मारा न जावे क्योंकि यह सिर्फ किस्मत के जागने की खबर देने आता है । डंक नहीं मारा करता । (द्वारा शनि) । इसके गृहस्थी साथी झगड़ा करें तो बेशक मगर प्रकृतिक की तरफ से कोई मौत की दुर्घटना हो सकती

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 15

है वह दुख का कारण न होगी। जंगली चीते का हाल होगा । अगर कोई दुश्मन ग्रह ख़ाना नं० 3 या 4 से आ छेड़े तो ख़ाना नं० 3 या 4 वाला ग्रह खुद ही मारा जायेगा । जिस पर यह दोनों ग्रह मंगल और शनि और भी खूँखार हो जायेंगे । चार कोना मकान का शुभ फल होगा ।
दोनों नं० 1 और चन्द्र नं० 4 :
पानी की बजाये दूध से पले हुये दरख़्त की तरह उत्तम किस्मत का मालिक होगा । राज दरबार से विशेष लाभ पावे । और अवश्य सरकारी नौकरी आदि का संबंध होवे ।
दोनों नं० 1 और पापी अच्छे घरों के या जब पापी रद्दी न हों :
मालदार, पोते पड़पोते वाला । लेकिन जब पापी रद्दी हों, मंगल और बुध दोनों ग्रह कुण्डली में राहू की उमर के बाद (42 साल के बाद) नेक प्रभाव देंगें ।
ख़ाना नम्बर 11 :
किस्मत का असल दिन, जब बाप की सारी चीज़ों के बारे में अपनी खुद तमाम चीज़ें बना लेवे, होगा (द्वारा वृहस्पति) अच्छी आमदन, फिर भी ऋणि । चोरों को फंसाने वाला । धर्मात्मा साधु की तरह वृहस्पति दोनों ग्रहों के फल को खराब करता जायेगा।
ख़ाना नम्बर 12 : अपना अपना फल होगा ।

बुध - शनि

दौलत 45 साल - तकलीफ 1 साल - लड़के 24 साल - दुशमन 42 साल - उत्तम फल होगा ।

गाँव । एक साँप दूसरे उड़ना या उड़ने वाला । परिन्दों में बाज़ की शक्ति और चील की नज़र का मालिक । और साँपों में परों वाला ज़हरीला नाग होगा । मगर कुण्डली वाले के लिए शुभ । माता-पिता का सुख सागर लम्बा और नेक । खुद वह व्यक्ति हमदर्द होगा ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 151

ख़ाना नम्बर 2 :
हमदर्द । अच्छी किस्मत । माता-पिता नेक । और उनकी आम हालत अच्छी होगी और सुखी । सागर लम्बा होगा ।
ख़ाना नम्बर 4 :
दोनों ग्रह दूसरों के लिये खूनी साँप होंगे । और चन्द्र का फल रद्दी होगा । बुध का फल मंदा न होगा । चाहे

स्वयं चन्द्र भी किसी तरह शामिल हो जावे ।

ख़ाना नम्बर 7 :

शराबी, कबाबी, नेकी फ़रामोश, मगर अमीर और सुखिया हो ।

ख़ाना नम्बर 9 : बुध के वक्त तक काग रेखा । बाद अज़ाँ सनीचर का ख़ाना नं० 9 का असर नेक और उत्तम होगा।

ख़ाना नम्बर 11 :

गाँव का अमीर और आराम पाने वाला होवे । अगर शान का स्वभाव (राहु केतु के आगे पीछे होने के हिसाब से) नेक होवे या दृष्टि नं० 3 का कोई मंदा असर शनि के लिए न रहा हो । 45 साला दौलत होगी । नहीं तो शनि का फैसला किस्मत का फैसला करेगा ।

बाकी घर : अपना अपना असर लेंगे ।

दो से ज्यादा मुशतरका ग्रह एक घर में

(अलिफ़) किसी घर में दो से ज़्यादा ग्रह इक्ट्ठे बैठे हो तो जिस घर को वह देख रहे हों, अगर वह घर खाली ही होवे, तो इनका असर इनके बैठ होने वाले घर तक ही होगा । लेकिन अगर इनकी नज़र के सामने के घर में कोई ग्रह (एक से ज्यादा) बैठा होवे और वह (1) होवे उनका दोस्त तो वह देखा जाने वाला ग्रह कभी बर्बाद न होगा। बल्कि देखने वाले ग्रहों का असर अपने बैठा होने वाले घर की चीज़ों पर डाल देगा ।

(2) लेकिन अगर वह उनका दुश्मन हो तो स्वयं ही बर्बाद होगा । मगर अपने बैठा होने वाले घर की चीज़ों को बर्बाद न होने देगा ।

(बे) तीसरे घर का असर कभी पहले घर में नहीं दे सकता । सिवाय बुध की खास नाली के वक्त । अगर बुध तीसरे घर का असर पहले घर में ले आवे तो पहले घर और पहले घर के ग्रहों का असर गला सड़ा ही लेंगे । चाहे सब वह मिलने मिलाने वाले ग्रह बाहम या बुध और शुक्र के दोस्त हों या दुशमन ।

इसी बुध की नाली से पहले घर के ग्रहों का असर तीसरे घर में भी आ सकता है । (1, 3, 5, 7 वगैरा) लेकिन अब तीसरे घर में इकट्ठा होने वाले ग्रहों का असर मंदा ही न लेंगे । सब की मिलावट से जैसा हो, लेंगे । (तीसरा रलिया ते घर गलिया) यानि तीसरे से आने वाले पहले को बर्बाद किया मगर पहला रलिया तो तीसरा गलिया न होगा ।

पापी ग्रह

शनि और राहु व केतु पाप । तीनों को एक ही नाम से पापी ग्रह याद किया जाता है । राहू केतू भी शनि का स्वभाव रखते है । मगर शनि की ताकत नहीं रखते । शरारत होते है । मालूम (नतीजा शरारत) नहीं होते ।

हल्क के कौए में दाईं तरफ राहू , बाई तरफ केतू और दरम्यान में शनि गिनते है । तालू खाना नं० 8 बगैर ग्रहों के खाली जगह होगी ।

पापी घरों का स्वभाव

(1) मुकाबला पर अगर अकेला ग्रह हो (दुशमन) तो वह उस दुशमन ग्रह ही की ताक़त को खराब करते है ।

(2) मुकाबला पर जिस कदर या जितने दुशमन ग्रह बढ़ते जावेंगे, इसी क़दर और इतनी ही पाप करवाने या करने की हिम्मत पापी ग्रहों में बढ़ती जायेगी ।

(3) जब मुकाबला पर दुशमन ग्रह किसी अकेले पापी ग्रह के सामने इसका दोस्त साथ लेकर आ बैठे तो पापी ग्रह की ताक़त न सिर्फ दुगनी या ज्यादा होगी बल्कि वह आम हालत की बजाय खूब ज़ोर का पाप करेगा और करवायेगा । साथ ही अपने दोस्त को तो खूब और बुरी तरह से मार देगा ।

(4) दो केतु मुशतरका (एक असल केतु, दूसरा केतू चाहे ऊंच मसनूई चाहे नीच मसनूई) दूगना मंगल (नेक) की ताकत को भी बर्बाद कर देंगे ।

(5) उमर के दूसरे दौरा में मंदरजा ज़ैल सालों पर शुरु होते हुये खाना नं. 9 खास – खास असर रखते हैं ।
शनि – 6; राहु – 42; केतु – 48 साला उमर पर शुरु ।

(6) पापी ग्रहों में से कोई भी एक जब अपने दूसरे पापी भाइयों से मिलेगाा तो नेक फल देगा ।

(7) राहु, केतु दोनों से जो पहले घरों में हो वह अपना फल बाद वाले में डाल कर उसे नेक कर देगा ।
खाना नं. 4–11–2 में राहु या केतु में से जो भी केतु में से जो भी कोई होगा, इस का मंदा फल होगा और दूसरे पर कोई असर न होगा ।

(8) जब पापी मंदे असर के हों तो वृहस्पति भी मंदी हैसियत का गुरु होगा और इन के संबंध की बजह से इस के असर के सामने दीवारें खड़ी गिनी जायें गी ।

(9) खाना नं. 8 पापी ग्रहों की मुशतरका बैठक है। मगर राहु– केतु के मुशतरका बैठक खाना नं. 2 है जो मसनूई शुक्र है और शुक्र की राशि भी है।

(1) शान जब राहू केतू के संबंध से नेक असर का हो और राहू या केतू के साथ ही बैठा हो, मकानात बनेंगे। अगर

उलट हो तो बने बनाये

बिकवा देगा या गिरवा देगा ।

राहू – केतू मुशतरका

राहु होवे तो केतु होवे

खाना नं. ताल्लुक केतू से सूर्य से सूर्य से खाना नं. ताल्लुक राहू से सूर्य से चन्द्र से

1 2 3 4 5 6 7 8 9 1 11 12 दोस्त बराबर का ऊँच दोस्त बराबर का ऊँच दोस्त बराबर का नीच दोस्त बराबर का नीच नेक निसफ नेक नेक नेक नेक निसफ नेक ग्रहण मद्धम नेक ग्रहण नेक नेक नेक निसफ नेक नेक प्रबल नेक उमर सुखनिसफ़ ग्रहण निसफ निसफ निसफ **7 8 9 1 11 12 1 2 3 4 5 6** दोस्त बराबर का ऊँच दोस्त बराबर का ऊँच दोस्त बराबर का नीच दोस्त बराबर का नीच मध्यम निसफ नेक मद्धम निसफ नेक नेक निसफ निसफ नेक नेक निसफ प्रबल नेका उमर सुख तक नेक निसफ निसफ मद्धम नेक नेक निसफ निसफ नेक ग्रहण

राहू के ग्रहण की मय्याद दो दौरे (दो साल), केतु की एक दौरा (एक साल); मुशतरका दोनों की तीन साल (45 साला उमर तक) होगी।

(1) यह ग्रह दीवार बनकर दूसरे का असर गुम करते है । मगर चलने वाली दीवारें है। अगर हलक़ के कौए में शनि के दायें बायें रहे तो गऊं ग्रास में भी कौए के साथ गाँऊं और कुत्ता हिस्सेदार होगे ।

(2) यह दोनों ग्रह हमेशा ही बुध के खाली ढांचे में पकड़े रहते हैं । यानि जैसा बुध हो और जहाँ भी हो यह भी वैसे ही और वहाँ भी ज़रुर होंगे । और सूर्य या चन्द्र की रोशनी या गर्मी सरदी से खुद-व-खुद ज़ाहिर हो जाएंगे । या अगर पता लेना हो कि राहु कैसा **है तो चन्द्र का उपाय करें ।** और केतु के लिये सूर्य का उपाय करें । खुद-व-खुद ही इनका दिली पाप पकड़ा जायेगा ।

(3) सूर्य को राहू ग्रहण लगाता है और चन्द्र को केतू । यानि जब सूर्य राहू इकट्ठे हों नं० 9-12 तो सूर्य ग्रहण यानि जब चन्द्र केतू इकट्ठे हों नं० 6 तो चन्द्र ग्रहण ।

राहू या सूर्य ग्रहण का मंदा ज़माना -2 साल
केतू या चन्द्र ग्रहण का मंदा ज़माना -1 साल
कुल मंदा ज़माना 3 साल होगा ।

ऐसे वक्त में शुक्र, बुध मुशतरका या अकेले अकेले की चीज़ों से दान, कल्याण माना है ।

(4) केतू व राहू को शनि के साँप की दुम और सर भी माना है । इल्म ज्योतिष में यह एक दूसरे से सातवें होंगे । मगर अरुण संहिता (लाल किताब) में यह शर्त नहीं है । यह एक ही घर में इकट्ठे भी हो जाते है । हाथ का अंगूठा जिसमानी हिस्सा राहू केतू मुशतरका है ।

(5) रंग बिरंग चीज़ हो और लाल रंग का साथ हो तो बुध होगा । और तमाम बातें असर मय्याद असर बगैरा सब बुध की लेंगे ।

सूर्य शनि मुशतरका – नीच राहू मसनूई शुक्र दुनियावी
मंगल शनि मुशतरका – ऊँच राहू जिसमें राहू के सुख
सूर्य बुध मुशतरका – नेक केतू झगड़े-फसाद शान्ति
शुक्र शनि मुशतरका – ऊँच केतू और केतू औलाद

चन्द्र शनि मुशतरका – नीच केतू ऐश इशतरत शमिल है ।

(6) अपनी अपनी राशि या पक्के घर से बाहिर जब दोनों मुशतरका – तो दोनों का फल रद्दी होगा ।

(7) राहू चाबी – केतू कुत्ता या सब ग्रहों को चलाने वाले हैं । लेकिन राहू केतू को वृहस्पति चलायेगा । जो बुध के दायरा में पकड़े हुये है ।

राहू – वृहस्पति

नुकसान 5 1 ½ साल – औलाद 21 साल – उमर 9 साल – सालम चने स्याह – दोनों का दुशमनाना और खराब फल होगा ।

वृहस्पति गिना पवन तो, राहू धूँआ हुआ ।
दोनों के चलने फिरने को, आकाश बन गया ।
वृहस्पति का प्रण है यह, टेढ़ा कभी न होगा ।
हैं गज ने कसम हाई, सीधा न वह चलेगा ।
घर से चले थे एक से, अब 12 बारह हो गया ।
तकिया फकीर साधु का, धूँआधार हो गया ।
चलते सुबह से दोनों ये, तब शाम हो गया ।
गुरु लगा समाधि में, सुनसान हो गया ।
धूँआ हटे न साधु जागे, दोनों अपनी लै में है ।
दुनिया के सब बन्दे साथी, इन दोनों की शरण में है ।

झगड़ा बढ़ा तबील, तो सूर्य भी आ गया ।
चन्द्र बना है घोड़े तो, बुध पहिये हो गया ।
शुक्र बना जो मिट्टी था, अब लक्ष्मी हुआ ।
मंगल ने शेरी छोड़ी थी, अब चीता हो गया ।
लेटा पड़ा जो साँप था, अब भैरों हो गया ।
केतू के आते बाते ही, सब खवाब हो गया ।

हाथी ने सर टटोला तो, लो टुकड़े हैं पाये दो ।
केतु जो गुर के नीचे था, इसके भी रंग दो ।
वृहस्पति ने आँख खोली तो, देखे जहान दो ।
राजा फकीर होते भी, किस्मत दो रंगी हो ।

केतू के उपाय से राहू का मंदा असर दुर होगा । अगर केतृ लड़का भी मंदा और नालायक हो तो माता की के द्वारा चन्द्र का उपाय सहायक देगा ।

जौ (अवाज) के दाने दूध में धोकर पास रखने के बाद हर रोज़ दरिया में बहाते जाना । 41-43 दिन तक शुभ फल होगा ।

समाधि खुलते ही मंगल की चीज़ों का दान भी ज़रुरी होगा । वरना वही धुँध होगी ।

ख़ाना नं० 1 : उंगली पर सीधे ख़त गिनती में एक हो – व सख़ी।

ख़ाना नं० 2 : अब राहु चुप होगा । गुरु का उपदेश सुनेगा । ग़रीबों का मददगार । नेकी के काम बहुत करेगा । दायें अंगूठे पर यही ख़त यानि खाना नं० 2 में मरद की तरफ से औलाद और बाँए अंगूठे पर यानि ख़ाना नं० 8 में औरत की तरफ की औलाद होगी ।

अब बुध जितने घर दूर होगा उतनी लड़कियाँ होंगी । बाकी लड़के।

ख़ाना नं० 3 : राहु की पूरी उमर के बाद नेक असर होगा । सात खड़े ख़त – आँख की होशयारी ज़्यादा हो । बहादुर होगा ।

ख़ाना नं० 4 : चार खड़े ख़त – उत्तम चन्द्र का फायदा हो ।

ख़ाना नं० 5 : पाँच खड़े ख़त – हाकम या सरदार हो ।

ख़ाना नं० 7 : पिता और सुसराल दोनों में से एक होगा । अगर दोनों ही ज़िन्दा हो तो एक को दमा ज़रुर होगा । छह खड़े ख़त – जबानी में खूब आराम पावे ।

ख़ाना नं० 8 : आठ खड़े ख़त – जिंदगी ख़ानापुरी का नाम हो ।

ख़ाना नं० 12 : तीन ख़त । अकल मंद । हुनर और पेशा दस्तकारी से ऐसा नफा न हो ।

बाकी घर : अपना अपना असर ।

(अलिफ) अगर कुण्डली में राहू पहले घरों में या पहले हो, तो वृहस्पति दुनियावी असर का होगा । अगर वृहस्पति पहले घरों में या पहले हो तो वृहस्पति गैबी ताकत का मालिक भी होगा ।

दोनों ही मुशतरका या दोनों ही अलग-अलग, मगर दोनों ही रद्दी हों (दुशमनों से दबाये) तो बुध होगा । और बुध का ज़ाति स्वभाव फैसला करेगा ।

(बे) जब तक सूर्य, चन्द्र, मंगल क़ायम और राहू ऊँच घर का हो, तो वृहस्पति दोनों जहाँ का मालिक होगा ।

राहू - सूर्य

औलाद रद्दी – 21 साल – ऐसे टेवे में मंगल खुद राहू को दबाता होगा । नहीं तो इसकी उमर का हर घड़ी ख़तरा होगा । **सूर्य ग्रहण होगा । व वक्त सूर्य ग्रहण राहू की चीज़ों (सूर्य के दुशमन ग्रहों) को दरिया (चलते पानी) में बहाना शुभ होगा ।**

सूर्य जब राहू को देखे तो राहू के आतिशी मादा की लहर और भी गर्म होकर अगले घरों पर भी बुरा असर करेंगी । उदाहरणतय: सूर्य होवे 2 में और राहू नं० 6 में । अब राहू 6 से 12 पर भी असर देगा । और 6 से साथ लगते ख़ाने नं० 7 पर भी असर देगा । (नं० 7 से आगे क्योंकि दृष्टि चलती नहीं, इस लिए वहाँ तक ही रह गया) ।

मन्दे असर का उपाय :- **ताँबे का पैसा आग में जला दें । जले हुये पैसे को घर से बाहर ले जाते हुये (वक्त) बाल बच्चों को सामने आने से बचा दें वरना उन पर बुरा असर गिना है ।** जब राहु देखे सूर्य को या साथ ही होवे तो सूर्य ग्रहण होगा । दान कल्याण माना है ।

राहू आग चोरी बुखार का भी मालिक है । इसलिए चोरी जौ

को किसी जगह बोझ के नीचे बन्द कर दें और **यदि समय-समय पर बुखार हो तो साथ गुड़ मिलाकर दान करें । या जौ और मीठा दान करें । अगर कामयाबी न हो जौ को दूध में धोकर या गँऊ पेशाब में धोकर (जब केतू भी मंदा हो) दरिया में बहा दें ।**

अगर दोनों के साथ चन्द्र भी शामिल होता होवे तो जिस घर में राहु चन्द्र से मिल रहा है, राहू का असर वहाँ तक ही हमेशा रहेगा । और उसी घर को ही बर्बाद करेगा ।

ख़ाना नं० 5 : राहू के वक्त तक ख़ाना औलाद बर्बाद और 21 साला उमर तक की औलाद तबाह ।

दोनों नं० 5 और चन्द्र नं० 4 राहू के वक्त तक निर्धन । सिर्फ आई चलाई होवे । सुसराल भी मंदे और मामा घर भी वीराना ।
ख़ाना नं० 9 : सूर्य ग्रहण होगा ।
ख़ाना नं० 1-11 उमर सिर्फ 22 साल तक होगी - जब खाना नं० 8 में उमर को रद्दी करने वाले ग्रह हों । और साथ ही सूर्य राहू मुशतरका बैठे हों ।
(1) खाना नं० 1 में और शनि - मैं स्त्री ग्रह बैठे हों ख़ाना नं० 2 में या (2) ख़ाना नं० 11 में सूरज राहु हों और सनीचर खुद उमर को रद्दी, मंदा या नष्ट बर्बाद करने वाले घरों में हो या वह खुद ही मन्दा हो रहा हो मगर नर ग्रह की मदद साथ/साथी न हो - वरना उमर लम्बी होगी ।

ख़ाना नं० 12 : सूरज ग्रहण होगा ।

बाकी घर : अपना-अपना फल होगा ।

राहू - चन्द्र

पानी का ड़र बिलकूल उमर - बैवक्त चन्द्र ग्रहण राहू की चीज़ों **(चन्द्र के दुशमन ग्रहों की चीज़ें) को चलते पानी में बहाना शुभ होगा।**

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक - 16

मुशतरका होने पर चन्द्र का असर मध्यम और भूचाँल (राहु का) चन्द्र बैठा होने वाले घर तक ही जरुर होगा । खुद राहू भी तेंदुए से पकड़ा हुआ होगा । यानि सुसराल भी बर्बाद होंगे । (सिर्फ माली हालत में) । दरिया का पानी भी दो टुकड़ों में होगा । फ़रजी वहम चिन्ता लगी रहे । या नकली वहम से दीवाना होवे ।
(अलिफ) दोनों मुशतरका कुण्डली के पहले घरों में (1 से 6 तक) जिस खाना नं० में होंवे, इतने साला उमर तक माता पर बोझ बल्कि उसकी उमर तक बर्बाद करे । और राहू की मौत (अचानक गोली लगने की तरह - प्लेग - हादसा - बच्चा पैदा होने पर छिले में ही) फौरन जान बहक हो । **चन्द्र की जानदार चीज़ों पर मन्दा असर होगा ।**
(बे) अगर बाद के घरों (7 से 12) मुशतरका हों तो माता व चन्द्र की जानदार चीज़ों की उमर पर कोई बुरा असर न होगा । अगर कभी बुरा असर होवे तो माता व बच्चे (बच्चा खुद कुण्डली वाला) दोनों पर ही इकट्ठा होगा । वह भी चन्द्र की उमर (24 साला तक) जिस घर में इकट्ठे हों, वहाँ तो उस घर की चीज़ों का राहू व चन्द्र दोनों का ही बुरा असर होगा । राहू के मंदे असर को केतू ही हटा सकता है । अगर वह भी मन्दा होवे तो बुध क़ायम करें । अगर वह भी मंदा होवे तो मंगल की मदद लेवें। असर वह भी न होवे तो वृहस्पति की मदद व उपायकार आमद होगा । वरना खुद चन्द्र का उपाय या आखिर पर शनि काम देगा ।
ख़ाना नं० 9 : केवल चाँद ग्रहण होगा ।
बाकी घर : अपना-अपना फल होगा ।

राहु - शुक्र

खाली बुध मन्दा - दुशमनाना और खराब फल होगा । पागल शुक्र होगा कि जिसमें कि बुध की मदद न होगी । या शुक्र की **जगह सिर्फ बुध खाली फूल ही होगा** । और मन्दा । औरत और लक्ष्मी दोनों बर्बाद मगर

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक - 161

फोकी इज़्ज़त बरक़रार रहे । अगर खुद शुक्र के घर ही राहु आ जावे तो खाना शुक्र व बुध दोनों ही बर्बाद होंगे । बल्कि खुद उमर भी 24 तक खत्म लेंगे । क्योंकि अब नं० 1 में केतु भी मन्दा होगा । जो माता व माता घर बर्बाद कर रहा होगा । और चन्द्र नष्ट हो रहा होगा । दोनों का मुशतरका असर गुदा के इर्द गिर्द हिस्सा में ज़ाहिर होगा । **अब चन्द्र शुक्र दोनों का मुशतरका उपाय यानि दूध में मक्खन का उपाय या नारियल का दान शुभ होगा ।**
ख़ाना नं० 1 : औरत की दिमाग़ी बीमारियाँ होंगी । सेहत मन्दी ।
ख़ाना नं० 12 : यदि अब शुक्र ऊँच फिर भी इसकी सेहत मन्दी मगर लक्ष्मी खुद मर्द की तो ज़रुर बर्बाद होगी । जिसके लिए **राहू का नीला फूल मिट्टी में शाम को दबाते जाने से मदद होगी ।**
बाकी घर : अपना-अपना फल होगा ।
जब शुक्र अपने किसी दुशमन के घर बैठा हो और राहु भी मुशतरका दीवार या किसी ढंग पर उसे देख सके या जनूबी दरवाज़ा वाले मकान का साथ होवे - शुक्र का फल हर तरह से रद्दी होगा । उस घर का जिसमें कि वह बैठा हो - सेहत भी मन्दी । दाँए हिस्सा जिसम औरत पर चाँदी (छल्ला वगैरा) क़ायम करें ।

राहु - बुध

दोनों का उत्तम - खुद अपनी लिए राहू हाथी का जिस्म और बुध इसका सूँड है । जब मुशतरका हों और कुण्डली के पहले घरों में हों (1 ता 6) मुबारक और उत्तम फल देंगे । लेकिन अगर जुदा जुदा हों या दोनों मुशतरका कुण्डली के बाद के घरों में (6 ता 12) (सिवाय खाना नं० 11 जिस पर खाना नं० 5 के केतु का कोई असर न होगा) में हों तो दोनों का फल मंदा होगा । **मौत गूँजती होगी क्योंकि अब केतू भी पीछे से अपना असर दे रहा होगा ।**

दोनों में प्रबल कौन है का जवाब – गुमनाम के फैसला पर होगा। दोनों मुशतरका टटीहरी (परिन्दा) होंगे । अब परिन्दों खासकर टटीहरी के मारने से दोनों ही इलाज न रहेंगे – बैशक शिकार ।

राहू – बुध

दोनों मुशतरका या दृष्टि से मिलें : बुध के मददगार । उच्च घर की राशि या उसके दोस्त ग्रह की राशि में हों तो बाज़ होंगे ।

राहू के दोस्त – शनि ख़ाना नं० 1–11 बुध के दोस्त–सूर्य ख़ाना नं० 5 केतु 6 शुक्र 2–6

बाकी घरों में टटीहरी की हैसियत के होंगे ।

मगर बाज़ से शिकार खेल कर परिन्दों का मारक खासकर छोटे छोटे परिन्दों को मरवाने से दोनों की ताकत खत्म होगी । जब दोनों किसी ऐसे घर या ऐसी हालत में बैठे हों जहाँ कि दोनों में से किसी एक का फल कुण्डली वाले के लिए किसी पहलू में भी मंदा होवे तो अब दोनों का फल उसकी बुध या राहू की जानदार चीज़ों का मंदा असर करेंगे। यानि लड़की बहन बगैरा बेवा व सुसराल तबाह या मन्दे हाल होंगे ।

राहू – ज़ुबान का तेन्दवा – या आँखों का टेढ़ापन या एक छोटी दूसरी क़ायम भी हो जाता है । जब कि राहू खुद या दोनों राहू बुध मुशतरका वृहस्पति की राशि 9, 12 या 11 में हों । या टकराब बगैरा आ जावें ।

ख़ाना नं० 1 : औलाद के विघ्न होंगे ।

ख़ाना नं० 3 :बहन यदि अमीर दौलतमंद होगी मगर जल्द विधवा होगी ।

ख़ाना नं० 11 : .. .. 7 दिन – माह – साल के अन्दर

अन्दर विधवा होगी । जिसका उपाय मग़रबी दीवार से चूल्हा या बवक्त शादी आग का बन्द करना ।

बाकी घर : अपना–अपना फल ।

राहू – शनि

हानि 15 साल – हमेशा शक्की ।

शनि मौत का यम तो राहू इसकी सवारी का हाथी होगा । इच्छाधारी, ख़ज़ाना का मालिक मददगार साँप होगा ।

दोनों मुशतरका – शरीर पर पदम का निशान भी होगा । मामूली छोटा सा स्याह निशान खाला अकेला राहू – बड़ा मगर दरम्याना पदम और बहुत ही बड़ा स्याह निशान लसन या ग्रहण होगा ।

पदम जिस्म पर पोशीदा होवे । या कुण्डली में दोनों मुशतरका को कोई ग्रह न देखता होवे और हो भी जिस्म पर दाईं तरफ – यानि खाना नं० 1 ता 6 में दोनों मुशतरका हों तो निहायत मुबारिक होगा ।

पदम तादाद में 1 से 4 तक या दोनों खाना नं० 1 ता 4 में हों – तो राजा होगा । साहिबे इक़बाल

पदम हों 5 से 8 अदद तक – यानि दोनों 5 ता 8 ख़ाना नं० में – महाराजा ।

तादाद पदम 9 ता 12 या दोनों खाने नं० 9 ता 12 में हों – योगी होगा।

राहू देखे शनि को : लोहे से ताँबा होवे । सूरज का काम देवे ।

शनि देखे राहू को : हसद से तबाह होवे राहू बरफिलाफ़ चले

राहू – केतू – बुध

किसी तरह भी मिलते हों – मौत गूँजे । रेखा के एकाएक टूटने से निशानी हो जायेगी कि कोई अचानक मुसीबत आ रही है । जानवर – कुत्ता

केतू – बिल्ली राहू – बुलन्द आवाज रोयें या जानवर रोने या मंडलाने लगें और खासकर जब बुध नं० 12 का हो । और 6–12 के तअल्लुक से तीनों मिल रहे हों ।

ज़ुबान, तालु स्याह होवें । औलाद मरे । औरत दुखिया । खानदान को बदनाम करने वाला और खुद भी मौत – दर – मौत देखकर आखिर पर बुरी मौत मरे । 32 दाँत वाले से बुरी आवाज़ के पक्के असर में बढ़कर होवे । काली और स्याह गहरी आँख मार चश्मा भी मनहूस दरजा में उच्च होगा । जो ख़ुद भी बर्बाद और साथियों को भी बरबाद देखे या करे।

राहू – चन्द्र – वृहस्पति

वृहस्पति और चन्द्र दोनों में से किसी का भी फल रद्दी न होगा । मगर औरत का सुख हल्का होगा । खासकर खाना नं० 12 में ।

खाना नं० 12 में क्योंकि वृहस्पति चुप होता है – राहु के साथ और चन्द्र भी नं० 12 में हल्का होता है – इसलिए मर्दों व स्त्रियों (शुक्र व चन्द्र की संबंधित) का सुख तो ज़रुर हल्का होगा । मगर दोनों ग्रहों (चन्द्र व वृहस्पति) के दूसरों असरों पर कोई खराब असर न होगा । जानों पर बुरा असर न होगा । सिर्फ आपसी सुख हल्का गिनते है ।

राहू - चन्द्र - शनि

लक्ष्मी व स्त्रियों (औरत व माता) का सुख हल्का होगा । खासकर खाना नं० 12 में ।

राहू - सूर्य - शुक्र

औरत की सेहत रद्दी । दिमाग़ी कमज़ोरी, दीवानगी वगैरा - खासकर खाना नं० 1 में ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 165

राहू - सूर्य - चन्द्र

चन्द्र खराब । धन व माता दोनों मंदे । रात दिन दोनों वक्त दुखिया । अक़्ल मदद न देवे । धन दुख खड़े करता जावे ।

ख़ाना नं० 5 में :

अब सूर्य की खुद अपनी तो मदद होगी मगर चन्द्र की चीज़ें और खाना नं० 5 की संबंधित चीज़े औलाद वगैरा तबाह ज़रुर होंगी । मगर बीज नष्ट न होगा । चन्द्र फिर भी माफ करवा देगा । या नसल बढ़ा देगा। द्वारा **बुध का उपाय या दुर्गा पूजन सहायता देगा ।**

राहू - सूर्य - बुध

शादियाँ एक से ज्यादा । गृहस्थी सुख बर्बाद । (औलाद मंदी)। बुध या बहन खराब होवे । बशर्ते कि शुक्र किसी और ग्रह का साथी ग्रह न हो । वरना तादाद शादी दो न होगी । मगर बाक़ी वही मंदा हाल ।

राहू - शुक्र - केतू

कोने वाले मकानों में लड़की की शादी न होगी । शादी तक जब केतू पहले घरों में हो । लेकिन जब बाद के घरों में - लड़कें की शादी न होगी ।

राहू - बुध - शुक्र

शादी कई बार और औरतें कई एक । मगर फिर भी गृहस्थी सुख मंदा । खास कर खाना नं० 7 में । शादी और औलाद का खासकर मंदा हाल और गड़बड़ होवे ।

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 166

राहू - बुध - वृहस्पति

ख़ुद ज़ाति व्याय में कंजूस मगर निर्धन न होगा । खासकर खाना नं० 12 में तो सिर्फ माया का राख होगा । खेत में मसूल की तरह का हाल होगा ।

राहू - बुध - चन्द्र

अब माता-पिता डूब मरे । मगर चन्द्र पर बुरा असर न होगा ।

राहू - वृहस्पति - शनि

मर्दों का सुख हल्का होगा । खासकर ख़ाना नं० 12 में ।

राहू - मंगल - शुक्र - बुध

शादी में मर्दों औरतों की मुखालफत नाजायज़ और फालतू खर्च से धन का नुकसान बगैरा ।

राहू - वृहस्पति - बुध — चन्द्र

चारों ग्रहों का राहू की उमर 42 साला उमर तक रद्दी फल । उस घर की चीज़ों का जिसमें वह बैठे हों ।

राहू - मंगल - शनि - बुध

जिस घर में बैठे हों अब इसका मंदा हाल न होगा । लेकिन अगर मुशतरका दीवार वाले घर में सूर्य भी बैठा हो तो सभी सदस्यों परे कोई बुरा असर न होगा मगर राहू के बूरे असर – चोरी, धन हानि – जरुर होगी । कोई भाई तो सन्तान से, कोई पूरी मच्छ रेखा का मालिक साहिबे इक़बाल होगा । मगर लड़कियाँ दुखियां मरीज़ ही होंगी । **मदद देवे तो चाँदी की दहलीज़ और दक्षिण दरवाज़ा खराब करे ।**

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 167

केतू – वृहस्पति

दुशमन 4 साल – जब बिल्मुकाबल – मुशतरका तो नेक होगा – लेमूँ – ज़रद लेमूँ मन्दी में । गुरु पूजा स्थान पर । मामा मरें तो बेशक – हमसाये मारे जावें । तो सच । (बुध के नं० 6 के फल) मगर वृहस्पति का जाति फल मंदा न होगा । और खुद केतु (औलाद) ऊँच असर का होगा । पर्वत पर शंख का असर अब प्रबल होगा । जब दोनों में से किसी एक का फल किसी तरह भी मंदा होवे तो दोनों का कुण्डली वाले के लिए उत्तम और शुभ होगा । मगर केतु व **वृहस्पति की जानदार चीज़ों का फल (असर) मंदा होगा ।**

ख़ाना नं० 1 : एक संख । हमेशा आराम पावे ।
ख़ाना नं० 2 : लम्बा चेहरा – चौड़ी पेशानी – हमदर्द बुलन्द – मरतबा होगा । चौड़ा चेहरा व तंग पेशानी(जब नं० 8 में दुशमन ग्रह हों) स्वार्थी मंद भाग होगा नं० 8 में दोस्त हों तो प्रभावशाली आसूदा हाल होगा।
ख़ाना नं० 4 : तादाद संख 4 । तालीम वाला होवे ।
ख़ाना नं० 6 : ख़ाना नं० 2 की दृष्टि के ग्रहों के संबंध से अगर :–
(1) केतु नीच मंदा मगर वृहस्पति कायम। पहली औलाद का सुख न हो ।
(2) केतु क़ायम वृहस्पति मंदा – दूसरों का गुलाम ।
(3) दृष्टि ख़ाली या दोनों साथी – ख़श – गुज़रान होवे ।
ख़ाना नं० 7 : तपस्वी । गदाद संख 5
ख़ाना नं० 8 : दिलदारी मगर मुफलिस । तादाद संख 2
ख़ाना नं० 12 : तादाद संख 6 या ज्यादा । बड़ा ही अमीर हो ।
बाकी घर : अपना अपना असर ।

केतु – सूर्य

समय–समय पर ग्रहण सूर्य – **सूर्य के दुशमन ग्रहों की चीज़ों का चलते पानी में बहाना शुभ होगा । सूर्य का फल मध्यम होगा ।**

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 168

केतू स्वयं बर्बाद होगा । राज दरबार की कमाई को ग्रहण से स्याह कर देगा । खुद केतू (लड़के) की औरत भी ''मिर्ज़ा हल्का–सारंगी भारी'' की हालत होगी । या कुत्ता सूर्य की तरफ़ मुँह करके रोएगा या कुत्ते को मौत के यम नज़र आएँगे । बाहर हाल औलाद का फल मंदा होगा। या औलाद की औलाद पोते बसद मुशकिल हाज़िर होंगे । खुद कुण्डली वाले की उमर पर कोई मंदा असर न होगा । अगर होगा तो सिर्फ बादल का साया होगा । मगर सूर्य ग्रहण न होगा । पर मध्यम तो ज़रुर होगा ।

केतू – चन्द्र

लड़कियाँ 6 साल (नर ग्रह: बृहस्पत सूरज मंगल) । ऐसे टेवे में ऊँच या उमदा और कायम होगा । वरना वह नाक़ाबिले गृहस्थ होगा ।

चाँद्र ग्रहण होगा । सिर्फ उन बातों पर जो राहु चन्द्र मुशतरका में लिखी है । अगर चन्द्र खुद नीच हो या पाताल के खाना नं० 6 में हो या बुध की मार से मर रहा हो तो माता और बेटे दोनों के लिए मौत तक का ग्रहण होगा । जिसका इलाज केतू की दो रंगी मगर लाल रंग की अशिया का साथ मददगार होगा । या **बैवक्त चन्द्र ग्रहण चलते पानी में केतू की (चन्द्र के दुशमन ग्रहों) चीज़ें बहाना शुभ होगा ।**
दोनों बिलमुकाबल या दृष्टि में : दोनों का मंदा फल । खासकर जब एक तो हो खाना नं० 3 में और दूसरा होवे खाना नं० 11 में ।

केतू – शुक्र

दुशमन 4 साल । नेक घरों में नेक व बद घरों में बुरा असर होगा ।
ख़ाना नं० 1 : औलाद के विघ्न लावल्दी तक । दोनों नं०1 और मंगल नं० 4 औलाद और दूसरों की मौतें ख़राब करें ।
ख़ाना नं० 6 : दोनों का मंदा हाल । **''कुत्ते को घी हज़म न होगा'' का हाल होगा । औरत बाँझ होगी ।**

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 169

ख़ाना नं० 12 : औरत बहादुरी में सूरनी होगी । 12 बच्चे, वह भी सूअर की तरह उमदा सेहत और बहादुर व सुखिया होंगे ।
बाकी घर : अपना अपना असर ।

केतू - मंगल

फोका ऐश 3 साल - लड़के 24 साल - एक असल केतू दूसरा मसनूई केतू (शुक्र - शनि - मुशतरका) । जब यह मुशतरका होगें शुक्र शनि भी मुशतरका होंगे ।

इकट्ठे या आपसी दृष्टि में हों तो मंगल दुगना नेक होगा । लेकिन केतु और मंगल सिर्फ दोनों दृष्टि या मुकाबला पर शेर की और कुत्ते की लड़ाई होगी ।

ख़ाना नं० 2 : हुकमरान । दोनों का जुदा जुदा और उत्तम फल होगा ।

ख़ाना नं० 9 : 28 साला उमर से हालात तबदीली पर होंगे । ख़ाना नं० 3-5 के ग्रह न्यायक होंगे । मकान की बुनियाद (देखो नीचे दिया असर ख़ाना नं० 1) दरुस्त होने पर नेक असर होगा । चन्द्र बरसात का पानी सहायक होगा । केतू भी अब अच्छा असर का होगा ।

ख़ाना नं० 1 : 28 साला उमर के बाद हालात रद्दी होंगे । मंगल बद होगा । औलाद तबाह या नलायक होगी । 45 साला उमर तक मंदा रहेगा ।

केतु घर 1 वें का शक्की, कुत्ता लड़का मन्दे ।
मंगल भी चाहे 1 वे होवे, फिर भी दोनों मन्दे ।
अब उपाय केतु होगा, या चन्द्र का पानी ।
महल मकाना नीचे देवे, दूध शहद वह प्राणी ।

बारिश का पानी - या शहद ख़ालिस चाँदी के बर्तन में मकान की बुनियाद में दबा दे ।

ख़ाना नं० 11 : दोनों नं० 11 में हों तो मंगल नं० 1 का फल देंगे ।

बशर्ते कि ¤ चौकी मौजूद हो ।

बाकी घर : अपना अपना फल लेंगे ।

केतू - बुध (राशि फल)

दुश्मन 37-41 साल । केतू कुत्ता - बुध दुम - दोनों दुश्मन - हड़काये कुत्ते की दुम ने उसे पागल किया । दोनों का फल मंदा ।

बुध जब केतू के साथ हो तो बुध घर का मगर केतू नीच होगा । मौत नहीं तो अय्यामे गर्दिश जरुर होगा । जानवर जिससे हाथी भी डरकर भागता है । **मंगल का उपाय सहायक होगा ।**

दोनों बिल्मुकाबिल या दृष्टि में : दोनों का मंदा फल । खासकर जब एक हो खाना नं० 3 में और दूसरा 11 में ।

ख़ाना नं० 6 : केतु की चीज़ों पे केतु मंदा पर मंदा न दूसरों पर । बुध भी गर वाँ साथी हो, खुद मंदा बुरा दूसरों पर ।

बाकी घर : अपना अपना असर

केतू - शनि

के वल उमर पर शनि का फैसला- लड़के 24 साल - दोनों का उत्तम फल ।

जब तक सिर्फ दोनों इकट्ठे - शुभ । जब कोई भी तीसरा ग्रह आ मिला, तीनों का ही फल मंदा होगा । दोनों मुशतरका होगा।

ख़ाना नं० 6 : ऊर्ध रेखा पीठ में । उमर 7 साला होगी ।

ख़ाना नं० 9 : निहायत शुभ । भारी कबीला । धन दौलत शाहाना । शान की उमर और लम्बा समय सुख सागर का होगा । पुश्त सदी तक नेक होगा ।

बाकी घर : अपना अपना असर लेंगे ।

केतू - सूर्य - चन्द्र

लाखों पति फिर भी दुखिया, अकल सहायता न देवे । न दिन चैन न रात आराम । **दुर्गा पूजन और बुध का उपाय मददगार होगा । केतु का फल मंदा ही होगा ।**

ख़ाना नं० 5 : सूर्य की तो अब मदद होगी । चन्द्र और केतू दोनों बर्बाद। औलाद तबाह । मगर नसल बन्द न होगी । **बुध का अपना फल मदद देगा। खाना नं० 5 को बर्बादी से रोक लेगा ।**

केतू - शुक्र - बुध

तीनों का ही फल मंदा खासकर ख़ाना नं० 7 में । शादी, औरत, औलाद बगैरा में सख्त गड़बड़ होवे ।

केतू - मंगल - वृहस्पति

केतू व मंगल का अपना अपना फल होगा । भाई लंगड़ा व निर्धन फिर भी 45 साला उमर तक

मददगार, बाद में बेमाइनी । खुद ऐसा शख्स 45 साला उमर तक किस्मत के मैदान में हल्का ही रहे । **शनि के पत्थर को पीले रंग वृहस्पति के फूलों से बतौर उपाय उत्तम करे ।**

केतू - मंगल - शनि

हर जगह मंगल बद और हिरण की तरह डरपोक होगा । कच्चा पक्का मकान और इसमें **नीम का दरखत या मकान - मकान इसमें नीम का दरखत व कुत्ता मौजूद हो ।**

केतू - सूर्य - वृहस्पति

सूरज का फल निहायत मंदा होगा । सूरज बृहस्पत को अगर केतू देखे तो दरजा दृष्टि की ज़्यादती मंदे असर की ज्यादती होगी । यानि

१ फी सदी पर १ फीसदी मंदा ।

केतू - सूर्य - शुक्र

शुक्र पर खराबी होगी । दिमागी तकलीफें औरत की खासकर जब खाना नं० 1 में हों । तब तक वह औरत कुण्डली वाले के जद्दी मकान में रहे ।

केतू - सूर्य - बुध

भतीजे भानजे खा पीकर डकार मार जाने वाले होंगे । या उनकी कोई मदद की उम्मीद न होगी ।

केतू - सूर्य - बुध - चन्द्र

माता पिता बर्बाद या डूब ही मरे । हर एक का अलग - अलग फल ।

केतू - मंगल - शुक्र - बुध

शादी में मर्दों व औरतों की कबूतर बाजी से और फालतु व नाजायज़ खर्चा से धन बर्बाद हो । अगर कायम तो इक़बाल मन्द ।

वृहस्पति - सूर्य - बुध

अगर कायम तो राज योग ।

वृहस्पति - चन्द्र - शनि

वृहस्पति व शनि दोनों का उमदा व दोस्ताना - लोहे को पारस का काम देवे । दोस्ती से लाखों पर जावें । सिवाय ख़ाना नं० 9 जहां कि खराब असर होगा । या चन्द्र का खराब असर मिला हुआ होगा ।

वृहस्पति - शुक्र - बुध

शादी में रुकावट व दीगर फ़तूर होंगे ।

वूहस्पति - शनि - शुक्र

हर हालत में उत्तम फल । खासकर ख़ाना नं० 9 में उमदा होवे। दो साँप होंगे (और केतु स्वाभाव) ।

वृहस्पति - शनि - बुध

बुनियाद पर मच्छ रेखा होगी मगर ख़ुद जानी, अय्याश और **ज़ुबान के चस्का से खराब होवे ।**

सूर्य - बुध - शनि

दोनों ग्रहों यानि सूर्य और शनि का अपना अपना फल होगा।

सूर्य की उमदा हालत वाले घरों में दिल व दिमाग़ के काम, व्यापार का फायदा और शनि के अच्छे फल वाले घरों में जायदाद बढ़े या मिले ।

सूर्य - बुध - वृहस्पति

सूर्य और वृहस्पति - दोनों का उमदा फल होगा ।

सूर्य - वृहस्पति - शनि

हर जगह कदर, खासकर जब ख़ाना नं० 6 में हों । शादी के दिन से किस्मत जागेगी । औरत भी हर तरह से रंग स्वभाव और नसीबा में नेक होगी ।

सूरज - शनि - शुक्र

मकान का सुर्ख फर्श शुभ न होगा । मर्द की औरत या

औरत का मर्द बर्बाद हो । गृहस्थ मंदा होवे । **मिट्टी के कूज़े में लाल पत्थर के टुकड़े दूध से भरकर इस घर की संबंधित जगह में दबा दें जहाँ कि वह बैठे हों ।**

चन्द - शनि - बुध

मामा खानदान का हाल मंदा । खासकर जब कि खाना नं० 4 में। लेकिन बेवजह ग़रीबी मौत न होगी । ख़ूनी होगा ।

चन्द्र - शुक्र - सूर्य

रात दिन मुसीबत में मुसीतब । कभी तो अमीरी के समुन्द्र की ठाठों के ख़ज़ाने होंगे और कभी गरीबी में रेत के जर्रा की चमक भी न होगी ।

चन्द्र - शुक्र - बुध

दिमाग़ी हालत ठीक न होगी । 33 साला उमर तक शादी का कोई मतलब न होगा । **अगर 34 साल से पहले शादी हो जाये तो भाई बन्दु बर्बाद होंगे । नर औलाद पैदा या क़ायम न होगी । बल्कि औरत भी अंधी हो जायेगी** । खेती बर्बाद। और पेशा बदनाम करेगा । और 34 साला उमर तक (औरत की उमर) हमल बगैरा बहुत हों । मर्द 48 से पहले और औरत (औरत की) 34 साला उमर से पहले औलाद का सुख न पायेगी । **राज दरबार और व्यापार भी मंदा हो । बुध का उपाय तोता - दुर्गा पाठ - या स्याह मछलियों को सूरज निकलने से पहले सफेद आटे की खुराक (या अपनी खुराक का 1/1 हिस्सा) देना मुबारक होगा । मगर हर हफ्ते में सिर्फ एक दिन । शुक्र की रात और शनि की सुबह वाले दिन ।** उमर 85 साला होगी ।

चन्द - शुक्र - शनि

मददे मर्दा मददे ख़ुदा । धन दौलत उमदा । इसका धन औलाद के हाथ लगे । मौत प्रदेश में हो । वरना धन मानिन्द मिट्टी का पहाड़ । ज़ाहिर दारी उमदा । अन्दर से खाली ढोल । जो सुसराल खानदान के बजाने के काम आवे ।

चन्द्र - शुक्र - वृहस्पति

कभी शाह, कभी मलंग । कभी खुशहाल कभी तंग । गन्दा इश्क और मंदी मुहब्बत कबूतर बाज़ी (औरत) से बर्बाद होवे । और किसी को भी इससे फ़ायदा न होवे । जब होवे, नुकसान होवे ।

तीनों मुशतरका और मंगल का यम :

दरिया दिल । हवा और समुन्द्र की लहरें भी मददगार । अगर मंगल नष्ट तो शुक्र का फल होगा ।

शुक्र - बुध - मंगल

शादी और औलाद में गड़बड़ । अल्पआयु भी होगा ।

शुक्र - बुध - शनि

यदि ग्रास । दनिया के तीनों सुखों का मालिक होगा ।

मंगल - बुध - सूर्य

शरारत का माकूल जबाव दे सकेगा । दिली ताकत ज्यादा होगी । बर्ते चाहे भली तरफ या बुरी ।

मंगल बुध चन्द्र

धन दौलत और सेहत उमदा। खासकर ख़ाना नं० 1-4-5 में ।

मगर शनि का संबंध या खाना नं० 1-11 में मंदा असर होगा । **मृग छाला बुरे असर से बचायेगी ।**

मंगल — बुध - शनि

दो साँप होंगे (राहु स्वभाव) । मंगल बुध चन्द्र का ऊपर दिया असर होगा । **मृग छाला बुरे असर से बचायेगी।**

मंगल - चन्द्र - शनि

दिखावे का धन दौलत जो आखिर पर भी भाई बन्दों ताये चाचा के काम आये । **बुढ़ापे में नज़र का धोका होवे ।** शनि के घर नं० 11 में राज दरबार से फ़ायदा हो । मंगल या चन्द्र के घर 3-4-8 में हर तरह से हानि । धन दौलत बर्बाद और मौत खड़ी रहे ।

मंगल - वृहस्पति / मंगल चन्द्र
देखते हों वृहस्पति को

लम्बी उमर । ग़ैबी मदद ।

मंगल - चन्द्र - शनि

लम्बी उमर होगी । फाँसी लटकाए के पाँव तले मदद के लिये तखता ख़ुद-ब-खुद आ जाएगा । **क़बर से वापिसी तक होगी** । सबसे मदद और आल औलाद की पूरी मदद खुद ब खुद होती रहे । माता-पिता का साया व सुख सागर बहुत लम्बा व मीठा हो ।

मंगल - शुक्र - शनि

दुगना नेक मंगल । दो नेक केतु । अगर मंगल बढ़कर वृहस्पति की मदद करे तो वृहस्पति बढ़े और शुक्र का नेक फल होवे । अगर मंगल भाई शुक्र की तरफ भारी होकर मदद करे तो शुक्र बढ़े । जो औलाद से

महरुम करे मगर ऐश-व-इशरत व इश्क खूब दिखावे ।

मंगल - चन्द्र - वृहस्पति

पीपल, नीम और बड़ तीनों का मुशतरका वृक्ष होगा । जो हर तरह से उत्तम फल देगा ।

मंगल - चन्द्र - शनि

तीनों रंग में रंग बिरंगा । अगर साँप भी तो चितकबरा, बीमारी का घर और फुलबहरी का मारा हुआ होवे ।

मंगल - शनि - वृहस्पति

श्राप देने वाला साधु होगा । आदमियों की कमी और कर्ज़ाई हो। जो इसके सामने रहे, बर्बाद हो । चोरों को फंसाने वाला साधु हो । बीमारियों व इच्छाओं का पुतला हो ।

मंगल - शनि - सूर्य

धन दौलत उमदा । मगर जब शनि के संबंध में हो ख़ाना नं० 11 तो दुनिया को झूठा बना दे । मगर खुद झूठा न होवे । या अपना झूठ न माने ।

मंगल मय पापी ग्रह

सारी उमर चोर राहज़न, फिर भी मुसीबत पर मुसीबत रहे ।

मंगल शनि के साथ कोई तीसरा ग्रह

तीसरा साथी ग्रह मन्दा और श्राप ही देने वाला होगा ।

चन्द्र – शनि – शुक्र – मंगल

दिल रेखा के आखिर पर निशान त्रिभुज । गुस्सा वाला । राज से संबंध व खुश गुज़रान होवे । ख़ासकर नं० 2 में ।

चन्द्र – वृहस्पति – बुध – शनि

खोटी सोहबत, खोटे काम, अच्छी शौहरत भला हो नाम ।

मंगल – शनि –सूर्य – बुध

फटा पतंग । चारों ग्रहों का मंदा फल ।

मंगल – चन्द्र – शुक्र – बुध

चारों का मंदा फल । **लड़की की शादी से नेक फल शुरु होगा ।**

मंगल – चन्द्र – सूर्य – वृहस्पति

वृहस्पति नं० 2 । नेक गुरु प्रणाम की जगह । उमदा किस्मत हो ।

मंगल – शनि –सूर्य – बुध

अगर चारों ग्रह नष्ट या बर्बाद हों तो एक अकेला ही लाखों से मुकाबला करने की हिम्मत का मालिक होगा। अगर चारों क़ायम तो सबको ही लूट खसूटकर खुद अमीर होगा ।

चन्द्र – शुक्र – बुध – शनि

बद फेअल, बद करार । माँ, औरत में फर्क न जाने ।

चन्द्र – शुक्र – बुध – सूर्य

भला लोग भले काम । माँ बाप दोनों की तरफ से खालिस खून

और दोनों का सहायक ।

पंचायत

सूर्य /मंगल

शुक्र – वृहस्पति मय 3 पापी केतु

शुक्र – वृहस्पति – चन्द्र – शनि – राहु

केतू – सूर्य / मंगल

धन्ने भक्त की गौआँ राम चरावे । यदि मिट्टी का माधो मगर किस्मत का धनी हो । वृहस्पति की उत्तम हालत का फल और गृहस्थी सुख व ज़रुरयात सब क़ायम हों । हुकमरान, साहबे औलाद हो ।

कोई पाँच ग्रह जिनमें न स्त्री व पापी मिले हों सिवाय बुध के

शुक्र वृहस्पति शनि सूर्य बुध पाँचों ही 1 से ख़ाना नं० 6 तक किसी भी घरों में इकट्ठे या अकेले-अकेले क़ायम या एक से एक उमदा हालत का होवे ।

तमाम ग्रह इकट्ठे

चाहे राहू या केतू में से एक बाहर रह जाया करता है मगर वह भी दृष्टि के हिसाब से अपने से बाद वाले में अपना फल मिलाकर खुद

सिफर हो जाता है ।

ख़ाना नं० 2 : हुकमरान होवे ।
ख़ाना नं० 3 : मिसल राजा साहिबे इक़बाल हो ।
ख़ाना नं० 8 : हुकमरान , मगर खुद अपने आप को बढ़ावे।
ख़ाना नं० 9 : हुक्मरान । साथियों को बढ़ाकर खुद भी बढ़ता जावे ।

****

वर्ष फल चार्ट

आयु/घर /	घर/	घर/	घर/	घर/	घर/	घर /	घर/	घर/	घर/	घर/	घर
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12

18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8

33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक — 182

44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक — 183

70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6

82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9

96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
104	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	1	9	10

****

जन्म कुण्डली जो चाहे बमूजब इल्म ज्योतिष बनाकर लग्न को ख़ाना नं० 1 देकर बाकी ख़ाने पूरे किये हों और चाहे इल्म सामुद्रिक से बनाई हुई हो, मुकम्मल करने के बाद आगे दी हुई फहरिस्त के अनुसार अमल दर आमद करें।

सालान हालत के लिए दिया हुआ वर्ष फल

महावारी हालात के लिये सूर्य को चला दें रोजाना हालात के लिये मंगल करे चला दें घंटो के हालात के लिये वृहस्पति को चला दें मिन्टों के हालात के लिये सनीचर को चला दें सैकेंडों के हालात के लिये बुध को चला दें डिग्री के हालात के लिये चन्द्र को चला दें हफ़्तों के हालात के लिये शुक्र को चला दें रातों के हालात के लिये राहु को चला दें दिनों के हालात के लिये केतु को चला दें वर्ष की कुण्डली को घुमा दें । सालाना कुण्डली को घुमावें ।

एक साल के अन्दर के हालात के लिये ऊपर के हिसाब से लिये हुये वर्ष फल की कुण्डली के जिस ख़ाना में सूरज बैठा होवे उस ख़ाना को उमर के महीने का अक्छर नम्बर देकर तमाम कुण्डली मुकम्मल कर लें । महीना का शुरु जन्म वक्त से लेंगे । मसलन 31 की पैदाइश हो तो 3 दूसरे महीने की तक पूरा महीना होगा । एक साला उमर के बच्चे के लिए भी यही असूल होगा । मसलन :–

जन्म वक्त 11 5/41 मंगलवार 43–5 बजे शाम

जन्म कुण्डली (लग्न से हर ग्रह)

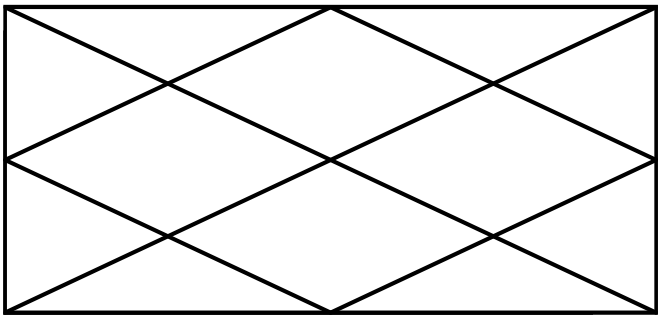

11 5/41 शाम 43–5 बजे के बाद – 44 वाँ जारी

लग्न से हर ग्रह (वार्षिक कुण्डली)

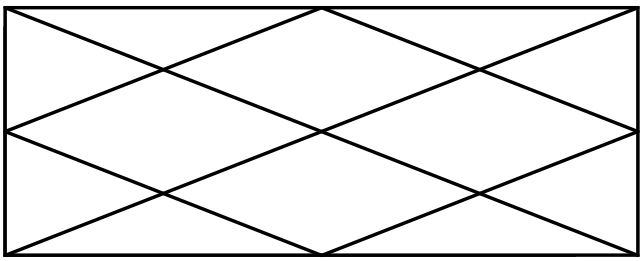

जब वर्ष फल बदला गया ।

11 9/41 शाम 43–5 बजे के बाद 5 वाँ महीना शुरु ।

सूर्य बैठा होने वाले घर को खाना नं० 5 दिया गया । वर्ष फल की कुण्डली को ।

मासिक कुण्डली

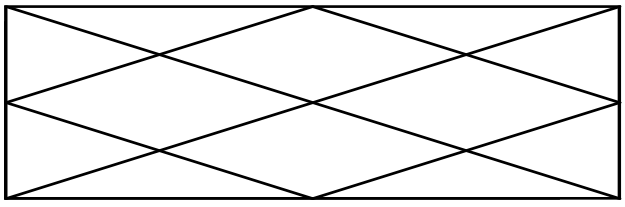

एक दिन की कुण्डली

5 वें महीने का 17 वाँ दिन । पहले दिन से 12 वें दिन तक एक से 12 ।

मासिक कुण्डली में जिस जगह मंगल बैठा है उस घर को एक से गिनकर 17 वें नम्बर यानि नम्बर 6 दिया गया मंगल को ।

दिन कुण्डली

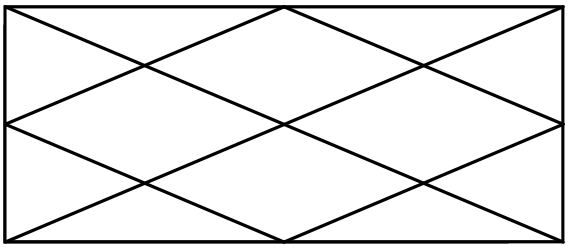

5 वें महीने का 23 वाँ घँटा । रोज़ाना कुण्डली में वृहस्पति वाले घर को एक गिनकर 23 वाँ नम्बर वृहस्पति को ।

घंटा कुण्डली

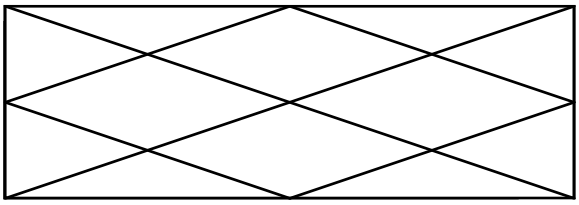

घंटो वाली कुण्डली से 21 वाँ मिनट शनि को चलाया गया ।

मिनट कुण्डली

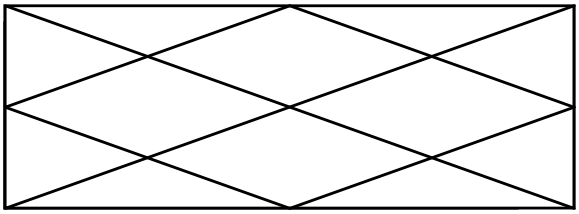

सैकेंड कुण्डली

24 वाँ सैकेंड । मिनटों वाली कुण्डली से अब बुध को चलाया गया ।

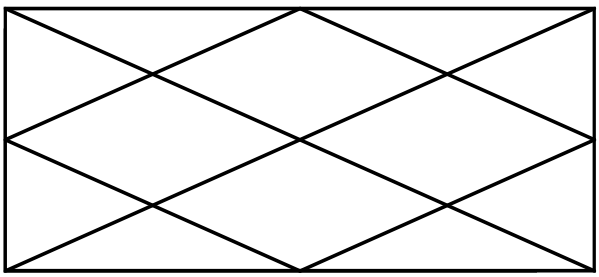

रात कुण्डली

44 वें साल की कुण्डली को रातों के हाल के लिये राहू को चलाया गया । यानि उसे ख़ाना नं० 2 या अपने हैड क्वार्टर में कर दिया ।

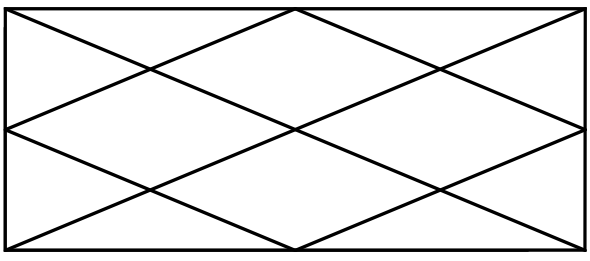

सैकेंडों वाली कुण्डली से 53 डिगरी पर । अब चन्द्र को चलाया गया ।

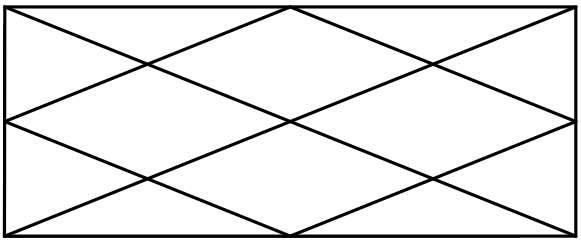

दिन कुण्डली

राहू की तरह अब केतू को खाना नं० 2 में किया दिनों के लिए ।

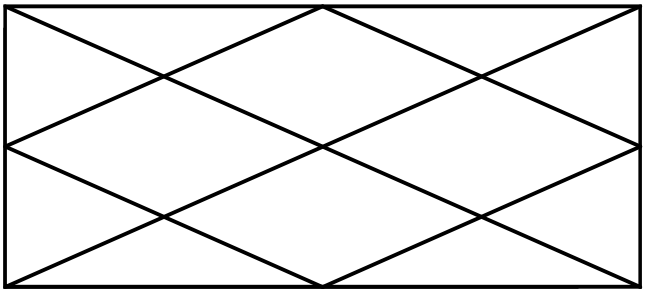

ग्रह से घर

विशेष – विशेष घर कहाँ खड़े होंगे ?

ग्रह टेवे में चाहे किसी भी घर में इकट्ठे हो जाये तो उनके सामने दिये हुये खाना नं० का प्रभाव पैदा हो जायेगा ।

ग्रह	ख़ाना नम्बर
सूरज मंगल शुक्र बृहस्पत बुध मंगल मंगल शुक्र सूर्य बृहस्पत बुध केतु शुक्र बुध मंगल शनि चन्द्र	1 2 3 4 5 6 7 8

दृष्टि ग्रह

खाना	दृष्टि	बाहम मदद		आयु हालत		टकराव	बुनियादी धोका	मुश्तरका दीवार	अचानक चोट
1	AB	5 9	7 7	8 6	9 5	10 4	2 12–10	3–7–11	
2	AB	6 10	8 8	9 7	10 6	11 5	3 1	4	
3	AB	7 11	9 9	10 8	11 7	12 6	4 2	1	
4	AB	8 12	10 10	11 9	12 8	1 6	5 3–1	10–6	
5	AB	9 1	11 11	12 9	1 6	2 7	6 4	7	
6	AB	10 2	12 12	2 4	2 10	3 9	7 5	4	
7	AB	11 3	1 1	2 12	3 11	4 10	8–10 4–6	1–5–9	
8	AB	12 4	2 2	3 1	4 12	5 11	9–2 7	10	
9	AB	1 5	3 3	4 2	5 1	6 12	10 8	7	
10	AB	2 6	4 4	5 3	6 2	7 1	1–11 7–9	4–8–12	
11	AB	3 7	5 5	6 4	7 3	8 2	12 10	1	
12	AB	4 8	6 6	7 5	8 4	9 3	1 11	10	

A = देख सकता है – ख़ाना को
B = देखा जा सकता है खाना नं० से ।

खाना नं० 2–8, 2–9, 2–1, 11–8, 3–8, 3–5 मुशतरका गिने जाते हैं ।
नर ग्रह बोलते जुफ़त के घर में, स्त्री बोलते ताक़ में है ।
बुध है बोलता 3–6 में तो,

पापी नहीं बोलते 2 में हैं ।
हर ग्रह के दरम्यानी ग्रह

ग्रह	शुरु	दरम्यान	आखिरी हिस्सा	ग्रह	शुरु	दरम्यान	आखिरी हिस्सा
वृह०	सूर्य	चन्द्र शुक्र	मंगल	केतु	सूर्य	वृह० मंगल	मंगल
वृह०	चन्द्र	सूर्य शुक्र	शनि	सूर्य	मंगल	चन्द्र बुध	शुक्र बुध शनि
राहु	केतू	चन्द्र	राहु मंगल	शनि	मंगल	बुध केतू	राहु
							वृह० शनि राहु केतु

शनि का जाति स्वभाव

पहिले घर में	दरम्यान में	आखिरी घर में/बाद में	सनीचर का स्वभाव
राहु केतू	राहु केतु शनि	शनि राहु केतु	शनि राहु शनि केतु शनि राहु केतु शनि शनि केतु राहु केतु केतु
राहु शनि	शनि केतु के	राहु सनीचर	राहु केतु शनि केतु राहु केतु शनि राहु ख़राब नेक ख़राब नेक खराब नेक
			शनि का अपना खराब नके (अपना) ख़राब नेक ख़राब नेक

मंदे स्वभाव का शनि जिस घर में बैठा हो उस घर की संबंधित चीज़ों पर बुरा असर देगा । चाहे स्वयं गुरुद्वारे में (नं० 2) ही बैठा होवे ।

बुध का हर घर से तअल्लुक

ग्रह	तअल्लुक
वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि राहु केतू	मानिंद राख मानिंद पारा दही में पानी दही में पानी शेर के दाँत जाति स्वीभाव कलई हाथी की सूँड कूत्ते की दुम

ग्रह तअल्लुक का	ख़ाना नं०	ताकत	ताकत ग्रह (बुध)
केतु राहु शनि बुध मंगल शुक्र चन्द्र सूरज वृहस्पति	8 2 12 3 5 5 6 3 4	1/9 2/9 3/9 4/9 5/9 7/9 8/9 9/9 6/9	
	8 4 36 12 25 35 48 27 24		
	मेजान		219

मेज़ान को 9 पर तकसीम किया ($21\ ^{9}/_{9}$) $24\ ^{3}/_{9}$ । अब कसर का हिन्दसा आया $^{3}/_{9}$ । यह $^{3}/_{9}$ शनि की ताकत है । सो अब बुध का सनीचर का ही स्वभाव होगा । अब शनि का जाति स्वभाव खराब है । (राहु केतु के दाँए बाँए से) या शनि दुगना मन्दा होगा जब बुध का ज़माना होगा ।

अगर बाकी सिफर हो तो खाना नं० 5 के ग्रह जैसा वरना सूरज के स्वभाव का होगा । और राहु केतु भी सिफर होंगे ।

धोका के ग्रह की तरतीब

सूर्य – चन्द्र – केतू – मंगल – बुध – शनि – राहू – ख़ाना नं० 8 के ग्रह । ख़ाना नं० 9 के ग्रह: वृहस्पति शुक्र ।

ग्रह आम अरसा कुल उमर महादशा वक्त असर
वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि राहू केतू मंगल (बद) मंगल (नेक) 6 साल 2 साल 1 साल 3 साल 6 साल 2 साल 6 साल 6 साल 3 साल 3 साल 3 साल 16 साल 22 साल 24 साल 25 साल 28 साल 34 साल 36 साल 42 साल 48 साल 15 साल 13 साल 16 साल 6 साल 1 साल 2 साल 7 साल 17 साल 19 साल 18 साल 7 साल 4 साल 3 साल दरम्यान शुरु आखिर पर दरम्यान शुरु एकसाँ आखिर पर आखिर पर

औसत आमदन माहवार

क़ायम या उमदा ग्रह मासिक आमदन ग्रह आमदन औसत
वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि उत्तम उत्तम उत्तम मध्यम मध्यम निम्मन उत्तम मंगल – शनि वृहस्पति– शनि वृहस्पति चन्द्र सूर्य चन्द्र सूर्य बुध मंगल चन्द्र शुक्र बुध अधिक उत्तम अधिक उत्तम अधिक उत्तम उत्तम मध्यम उत्तम निम्मन
राहू केतू उत्तम मध्यम

राहू केतू और शुक्र शनि :- वही –काग़ज़ी हिसाब वसूली नदारद ।
बुध शनि :- जायदार देवें ।

ग्रहों की दोस्ती दुश्मनी

ग्रह बराबर ताकत दोस्त दुश्मन
वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि राहू केतू शनि राहू केतू बुध नदारद शुक्र शनि मंगल वृहस्पति मंगल वृहस्पति राहू नदारद शनि शुक्र शनि केतु मंगल वृहस्पति केतु बृहस्पति वृहस्पति । चन्द्र मध्यम होवे वृहस्पति–शनि बुध । सूर्य मध्यम होवे । सूर्य चन्द्र मंगल वृहस्पति चन्द्र मंगल शनि बुध राहु शनि बुध केतु सूर्य चन्द्र बृहस्पत सूर्य शुक्र राहु बुध शुक्र राहु बुध केतु शनि शुक्र राहू शुक्र बुध शुक्र शनि राहू ग्रहण केतू मध्यम करे मध्यम करे केतू ग्रहण करे सूर्य चन्द्र राहू बुध केतू चन्द्र चन्द्र सूर्य मंगल शुक्र सूर्य मंगल चन्द्र मंगल

सोए व ख़ाली ख़ाने

(1) वृहस्पति जब नं० 9 में हो तो खाली ख़ाना नं० 12 का मालिक राहु होगा ।

वृहस्पति अगर नं० 9 व नं० 12 में न हो तो खाली ख़ाना नं० 12 का मालिक बुध (वृहस्पति राहु मुशतरका मसनूई बुध होगा) ।

इसी तरह ही जब बुध होवे ख़ाना नं० 3 में तो खाली ख़ाना नं० 6 का मालिक केतू होगा । और जब बुध ख़ाना नं० 6 व 3 में न हो तो खाली ख़ाना नं० 6 का मालिक बुध या केतु में से – जो भी इस कुण्डली में उमदा होवे – लेंगे ।

खाली खाना नं० 9 का मालिक बृहस्पति और नं० 6 खाली का मालिक बुध होगा।
बाकी खाली खानों के लिए इस खाली राशि नं० का मालिक ग्रह (घर का) लेवें ।

(2) बग़ैर जगाये सोया हुआ ग्रह अगर खुद बखुद जाग उठे – यानि अपना फल देना शुरु कर दे तो ऐसे जागे हुए ग्रह की आम उमर (जैसे कि शुक्र 3 मंगल 6 केतु 3 बैगरा) के आखिरी साल यानि शुक्र 2 शादी के तअल्लुक में शादी के तीसरे साल हर एक ग्रह का मंदा फल जरुर होगा । चाहे वह ग्रह जागे हुये

ग्रह के दोस्त हो या दुश्मन । हर अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा) न देगा । जब तक कि संबंध तरफ या जगह में इस ग्रह की संबंधित चीज़ न हो ।

कुण्डली में बन्द मुट्ठी के ख़ाने

साथ लाया माल – 1–7–4–1ो

वाल्दैनी हाल बचपन – 9–11–12

औलाद व बुढ़ापा – 2–3–5–6

बीमारी – 8

1ो फीसदी – 1–7–4–1ो साथ लाये ख़ज़ाने ।

5े फीसदी – 3–11–5–9 दूसरों से पावे ।

25 फीसदी – 2–6–12 रिशतेदारों से पावे ।

चेहरा पर ग्रह

वृहस्पति	नाक माथा
सूर्य	दाँया डेला
चन्द्र	बाँया डेला
शुक्र	रुख़सारा
नेक मंगल	होंठ ऊपर का
बद मंगल	होंठ नीचे का
बुध	दाँत, नाक का अगला सिरा
शनि	बाल, भवें
राहू	ठोड़ी
केतू	कान

कुर्बानी के बकरे

किस ग्रह का **कौन ग्रह कुर्बानी का बकरा होगा**

वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि राहू केतू केतू । शनि के वक्त शुक्र बर्बाद । दोस्त ग्रह को । चन्द्र । केतू । शुक्र । अपने एजेंटों को । ख़ुद अपना आप ही निभायेंगे ।

हफ्ता व एक दिन में ग्रह

क्रम सं० ग्रह दिन समय

1 2 3 4 5 6 7 8 9 1ो वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल (दोनों) बुध शनि राहू केतू जन्म वक्त ग्रह/जन्म दिन का ग्रह वीरवार इतवार सोमवार शुक्रवार मंगलवार बुधवार शनि वार वीरवार की पक्की शाम इतवार की सुबह सादिक सूर्य निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा । दिन के पहिले हिस्से के बाद मगर दोपहर से पहले । चाँदनी रात । अंधेरे व चानन की दरम्यानी अमावस की रात । पूरी दोपहर 11 ता 1 बजे । दोपहर के बाद मगर शाम अँधेरी से पहिले 4–5 बजे । काली रात । घनघोर बादल का दिन । पूरी शाम मगर रात से पहिले । सुबह सादिक मगर सूरज निकलने से पहिले । ऐसा मिलाव राशि फल का होगा ।

जन्म कुण्डली के ख़ाने (दिमाग़ पर)

टेवे के अनुसार (जब ख़ाना नं० 1 देकर अरुण संहता (लाल किताब) दुरुस्त हो चुका हो) एक फोटो की शक्ल पर 12 दिये हुए ख़ानों में तमाम ग्रह दिये हुये खानों में लिखकर दिमाग़ी ख़ानों के असर के अनुसार कुण्डली दुरुस्त करें ।

मसनूई ग्रह

वृहस्पति सूर्य शुक्र – खाली हवाई वृहस्पति ।
सूर्य बुध शुक्र ।
चन्द्र सूर्य वृहस्पति ।
शुक्र राहू केतू – हवाई खयाली शुक्र ।
मंगल सूर्य बुध – मंगल नेक ।
सूर्य शनि – मंगल बद ।
सूर्य शनि – नीच राहू ।
बुध राहू वृहस्पति
शुक्र वृहस्पति (केतू स्वभाव)
शनि मंगल बुध (राहू मंदा स्वभाव)
राहू मंगल शनि (ऊँच राहू)
केतू शुक्र शनि (ऊँच केतू)
चन्द्र शनि (नीच केतू)

ऋण

जिस ग्रह की जड़ में इसका दुश्मन जब फल बर्बाद कर रहा हो और खुद भी वह ग्रह मंदा हो रहा हो तो पितृ ऋण होगा ।

ऋण

पाप	ऋण	उमर साल	महादशा साल
फ़कीर कुत्ते का पाप सुसराल का पाप जानबरों का पाप धी बहन का पाप हक़ीक़ी रिश्तेदार का पाप कुटुंबी पाप ख़ुद जाति पाप माता का पाप पिता का पाप			
केतु राहु सनीचर बुध मंगल शुक्र सूरज चन्द्र बृहस्पत	दरगााही अनजम्मे का ज़ालिमाना ऋण बहन का भाई का स्त्री जाति ऋण मातृ पितृ ऋण		
बदचलनी दग़ा-फ़ेब जीवहत्या ज़ुबानी धोका मित्र मार मार पीट खराब आकिबत नीयत बद श्राप		48 42 36 34 28 25 22 24 16	7 18 19 17 7 2 6 1 16

सूर्य का प्रभाव

सूर्य का असर शुरु होगा : 9 महीने साल का फ़र्क । आम तौर पर जन्म दिन से ग्रह चाल शुरु होगी । या जिस ख़ाना नं० में कुण्डली के सूरज हो इसी महीना देसी से । जैसे बैसाख पहिला, जेठ दूसरा असर शुरु होगा

ख़ाना नं० 9 बुनियाद होगी । अगर सूर्य खाना नं० 9 से ख़ाना नं० 1–11–12 की तरफ बैठा हो तो 9 और 12 के दरम्यानी घरों के ग्रहो की म्याद जन्म दिन से तफ़रीक करें (जहाँ सूरज हो) । असर जन्म बक्त से पहिले ही शुरु होगा।

अगर सूर्य ख़ाना नं० 9 से पहली तरफ़ (8–7–6 ता 1) की तरफ बैठा हो तो 9 तक और बैठा होने वाले घर के दरम्यानी ग्रहों की मय्याद जमा करें । जन्म वक्त में । या इतना अरसा जन्म वक्त के बाद असर शुरु होगा । मय्याद गिनते वक्त सूरज की ख़ुद अपनी मय्याद नहीं गिनते । मगर ख़ाना नं० 9 के ग्रह की मय्याद शामिल कर लेंगे ।

उमर के सालों को 12 पर तकसीम करने पर जो हिन्दसा आवे (यानि 48 साला उमर /12 = 4) पहिले/बाद दिन असर शुरु होगा । 7 तारीख़ जन्म तो 11 वें दिन असर शुरु ।

मकान कुण्डली

इन्सान व मकान का दरम्यानी खाली

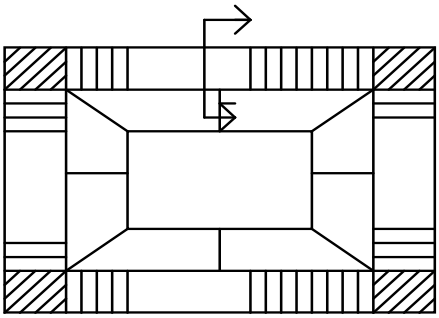

लाल किताब के अनुसार जब ख़ाना नं० 1 लग्न को देकर कुण्डली तैयार हो जावे तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों को नकल कर लें । अब मकान कुण्डली में तमाम तरफ़ें उत्तर, दक्षिण, पूर्व बगैरा निश्चत है । फ़र्ज़न जन्म कुण्डली में सूरज ख़ाना नं० 9 में हो तो मकान कुण्डली में सूर्य कुण्डली के वस्त या मरकज़ में लिखा जाएगा । जिसकी दरुस्ती के लिए इसके जद्दी मकान के मरक़ज़ में खुला सेहन या सूर्य की रोशनी पड़ती होगी । जन्म कुण्डली में शुक्र नं० 5 का हो तो मकान कुण्डली में शुक्र मशरिक की दीवार होगी । जो कच्ची मिट्टी की होगी या गाय तअल्लुक पूर्वी दीवार के साथ होगा । बगैरा बगैरा सब ग्रहों की चीज़ें होंगी । बचाव सिर्फ यह है कि टेवे में मंदे ग्रह की चीज़ मकान में इस ख़ाना नं० (बमूजब मकान कुण्डली) कायम न होने देवें । जिसमें कि वह जन्म कुण्डली में है ।

इनसान की जन्म कुण्डली के हर ख़ाना का मकानों से तअल्लुक

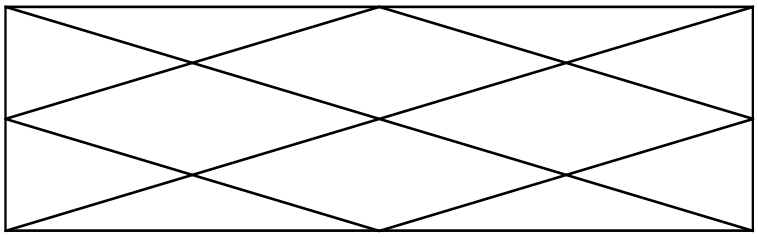

आम कुण्डली के ख़ाने

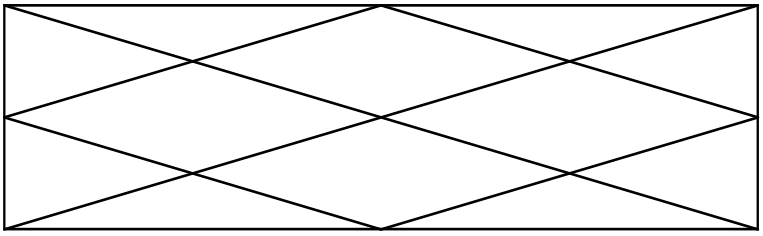

(1) धोके का ग्रह अपने धोके के साल में जब ख़ाना नं० 1 में ही आ जावे तो पूरा धोका देगा । यानि दुगना नेक या दुगना मंदा होगा ।

(2) किस्मत का ग्रह ख़ाना नं० 2 का होगा । मगर किस्मत साथ लाने का घर बन्द मुट्ठी के खानों की क्रम से लिया हुआ घर होगा ।

उमर कुण्डली

उमर का फैसला शनि- वृहस्पति वाल टेवे के लिए कुण्डली के ख़ाना नं० 11 के ग्रह करेंगें ।

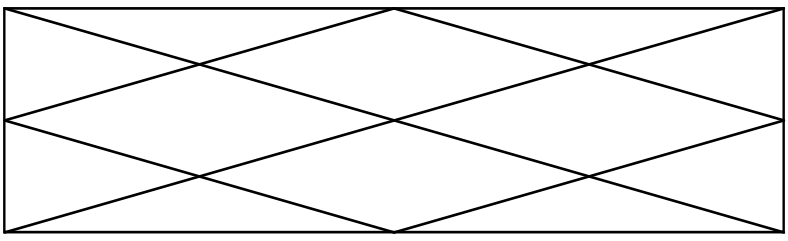

ऐसे टेवे में दृष्टि व उपाय बगैरा आम टेवे से फर्क पर होंगे । यानि ख़ास-ख़ास ख़ानों में ख़ास-ख़ास ग्रहों

की निश्चित दृष्टि होगी । जिन की रुह से फैसला होगा ।

कुण्डली मुशतरका खानदान

सूर्य – जहाँ कि ख़ुद टेवे वाले की अपनी कुण्डली में हो ।
वृहस्पति – बाबा

चन्द्र – माता
शुक्र – स्त्री
मंगल – बड़ा भाई
बुध – बहन
शनि – हम उमर मगर रिशता में फर्क ।
राहू – सुसराल
केतू – औलाद, लड़का ।

जहाँ कि बाबे की कुण्डली में वृहस्पति लिखा हो इसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में वृहस्पति लिखें । इसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में वृहस्पति लिखें । इसी तरह सब रिशतेदार । जो रिशतेदार न होवें उन रिशतेदारो के आपसी ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के बदस्तूर लेवें ।

मुशतरका असर सात पुश्त तक का होगा । 3 ऊपर –3 नीचे । दरम्यान में सूर्य ख़ुद टेवे वाला ।

कुर्राए हवाई

एक महीना में जो दिन जितनी दफा आवे, उसी ख़ाना नं० में लो । मसलन एक महीना में सोमवार 4 दफा हो तो चन्द्र नं० 4 का होगा ।

लीप के साल में राहू केतू अपने–अपने घर के यानि राहु नं० 6 केतु नं० 12 का होगा । बाकी साल राहु नं० 12 केतु नं० 6 ।

जब कोई ग्रह चाल काम न देवे और तमाम तरफ से मायूसी होवे तो बुनयादी रुकावट देखने के लिए यह कुण्डली काम देगी । मगर अकसर नहीं ।

अभ्यास कुण्डली

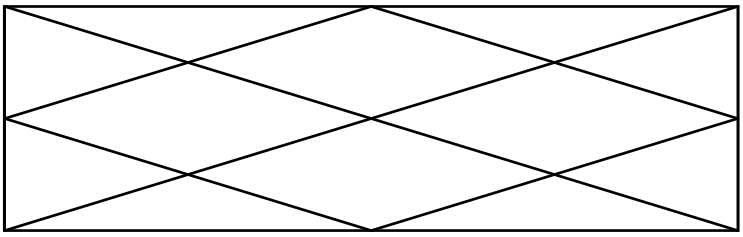

ग्रह ताक़त के लिये सूर्य $^{9}/_{9}$, वृहस्पति $^{9}/_{9}$ बगैरा (बुध के हाल

वाली होगी) । और मकान कुण्डली के कोनों के हिसाब से जन्म कुण्डली का ख़ाना मुकर्र होगा ।

सिर्फ इस वक्त बर्तेंगे जब किसी ऐसी जगह जा पहुँचें जहाँ कि तमाम दुनियावी किताबें घंटे घड़ियाँ बगैरा किसी चीज़ की भी मदद न मिलती हो ।

दौलत की हैसियत

खाना नं०	**ख़ाना नं० का ग्रह होगा**
3 11 1–5–9	परसू परसा परस राम

जो ग्रह इन घरों में होवें वही रिशतेदार इस हैसियत का होगा ।

खर्च बचत

आमदन देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 11
खर्च देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 12
बचत अज़ बज़ुर्गाँ देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 9
बचत अज़ जाति कमाई देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 2
बचत अज़ औलाद देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 5
साहुकारा लेन देन देखेंगे अज़ ख़ाना नं० 6

चन्द्र धन, शनि खज़ानची । दोनों की हालत जेब की हालत बतलायेगी । सनीचर और मंगल जायदाद के मालिक है । चन्द्र वृहस्पति सोना चाँदी की दौलत के मालिक हैं ।

मर्द औरत की बाहमी उमर

शुक्र क़ायम या शुक्र के दोस्त सहायक तो औरत की उमर लम्बी ।
बुध क़ायम या बुध के दोस्त इसके सहायक तो मर्द की उमर लम्बी ।

तादाद शादी

शुक्र क़ायम या अपने दोस्तों से मदद लेवे तो औरत एक ही क़ायम
अगर रद्दी तो तादाद औरत ज्यादा ।

औलाद

	ग्रह कहाँ ?	**ग्रह फल**
(1)	चन्द्र नं० 1 शनि नं० 7 सूर्य नं० 4 शुक्र नं० 5	नामर्द
(2)	शुक्र नं० 2 नं० 6 का हर तरह से खाली अज़ दृष्टि नं० 8 या नं० 2	औरत बाँझ होगी
(3)	शुक्र केतू नं० 1 और बुध नष्ट या शुक्र वृहस्पति नं० 7 और चन्द्र मंगल नष्ट	ला वल्द होगा
(4)	सूर्य नं० 12 या मंगल और बुध साथी हों या दोनों बाहम एक दूसरे के दोस्तों के घरों या राशियों में हों	ला वल्द होगा
(5)	शुक्र केतु नं० 1 और मंगल नं० 4 या शुक्र मंगल बुध नं० 3 या पापी में से कोई नं० 5, नं० 9 मंगल नं० 4 या राहु या बुध नं० 5 नं० 9 शुक्र बुध मय राहु या केतु नं० 7	औलाद के विघ्न जरुर होंगे ।
(6)	मंगल नं० 6 या केतु नं० 8 में हो	औलाद में देरी हो ।
(7)	सूर्य नं० 6 शनि नं० 12	औरत पर औरत मरे ।
(8)	सूर्य नं० 6 मंगल नं० 1–11	लड़के पर लड़का मरता जाये ।
(9)	बुध – सूर्य – शुक्र – वृहस्पति – शनि कायम – नेक घरों में या हर एक या तमाम उमदा ।	साहिबे औलाद

औलाद का सुख 1–3–5 के घरों की हालत से ज़ाहिर होगा ।
3–5–11 में बुध हो तो लड़कियाँ ज़रुर कायम होंगी ।
3–5–11 शुक्र के दोस्त ग्रह/ शनि केतु हों तो लड़के ज़रुर कायम होंगे ।

वक्त औलाद

बमूजब वर्ष फल जब मंगल या शुक्र या केतु बुध में से कोई तखत का मालिक या नं० 1 में आ जावे या शनि भी शामिल हो जावे या चन्द्र या नर ग्रह नं० 5 में आ जावें ।

औलाद

पहले घरों में	**दरम्यान में**	**आखिर के घरों में**	**क्या असर होगा ?**
वृहस्पति बुध	मंगल मंगल बृहस्पत बृहस्पत बुध मंगल,	बृहस्पत मंगल बुध बृहस्पत बुध मंगल	– – बृहस्पत बुध मंगल बुध बृहस्पत – – – –
–	बुध बृहस्पत बुध बृहस्पत बुध मंगल मंगल बुध बृहस्पत मंगल बुध मंगल बृहस्पत बुध बृहस्पत		बुध के वक्त से वालिद दुखिया होगा या बर्बाद ही हो जावे । नर औलाद कायम रहे । मादा औलाद क़ायम । औलाद दोनों किस्म, सब सुखिया लड़की कायम । वालिद दुखिया । लड़की कायम । वालिद दुखिया । औलाद वालिद दोनों दुखिया । औलाद क़ायम पर वालिद दुखिया ।

केतु के दौरे या तखत की मालकीयत के ज़माना में लड़की की पैदाईश से किस्मत का असर मंदा मगर इस वक्त की पैदाईश का लड़का एक नायाब किस्मत का मालिक होगा । इसी तरह ही बुध के ज़माना की लड़की बगैरा सब ग्रहों से बुध व केतु का तअल्लुक होगा ।

तादाद औलाद शुक्र या बुध या दोनों से जितने घर दूर पर बृहस्पत हो । (दरम्यानी घरों की तादाद)

लड़की : शुक्र के दोस्त ग्रह (शनि–केतु–बुध) मगर शुक्र नहीं ।
3–5–11 में हो जायें ।

लड़का : बुध या बुध के दोस्त (सूर्य शुक्र राहु)
3–5–11 में हों जायें ।

(दोनों जब बमूजब वर्ष फल औलाद का वक्त हो)

वृहस्पति क़ायम तो सब औलाद क़ायम।
केतू क़ायम तो सब लड़के कायम ।
राहू क़ायम तो सब लड़कियाँ कायम ।
चन्द्र नं० 6 हो तो सब लड़कियाँ हों ।
केतू न० 4 हो तो सब लड़के हों ।
चन्द्र केतू इकट्ठे हों तो लड़के लड़कियाँ मसावी ।

मकान

शनि जब राहू केतू के संबंध वाले हिसाब से जाति स्वभाव का नेक असर का साबित हो रहा हो या राहु/केतु के साथ ही बैठा होवे तो मकानात बनेंगे । जब राहु के साथ तो हो मगर स्वभाव के पैमाने से बुरे असर का साबित होवे तो बने बनाये बिकवा देगा । या गिरवा देगा । (मंदा असर होगा) ।

(तूल जमा अरज़) ज़रब 3 मनफी 1 तकसीम 8 करने पर

बाक़ी **फल**

1 2 3 4 5 6 7 8 राजा – सूर्य नं० 1 कुत्ता – वृहस्पति शुक्र नं० 2 शेर – मंगल ननं० 3 गधा – चन्द्र शनि नं० 4 गऊ घाट – सूर्य नं० 8 वृहस्पति न० 5 तकिया – सूर्य शनि नं० 6 हाथी – चन्द्र शुक्र नं० 7 चील – सिफर – मंगल शनि नं० 8

मकान के कोने

8–18–13– तीन, बिचून चौक भुजा बल हीन ।
पाँच कोण का मंदिर रचे, कह विश्वकर्मा कैसे बसे ।

(1) 8 कोने – शनि नं० 8 । मातम व बीमारी आम होगी ।
(2) 18 कोने – वृहस्पति का फल रद्दी ।
(3) 3 कोने – मंगल बद नं० 3 । भाई बन्दों की मौतों से तबाह ।
(4) बिचों चौक – खानदानी नसल लावल्दी की तरफ जावे ।
(5) भुजा बल हीन – शादी वाला रंडवा या रंडी (बेवा) होवें ।
(6) पाँच कोण – औलाद बर्बाद होवे ।

* दरवाज़ा पूर्व , पश्चिम और उत्तर दरजा बदरजा कम नेक होगा ।

दक्कन का मनहूस । जिस पर लोहे की कीले (दहलीज़) या चाँदी (वास्ते कर्ज़ा व औलाद) मुबारक होंगी ।

* जन्म कुण्डली और मकान कुण्डली जब तक एक ही जैसी हों – जन्म कुण्डली का फल प्रबल होगा। वरना मकान कुण्डली प्रबल होगी ।

* मंदे ग्रह की चीज़ को मकान में क़ायम न रहने देवें ।

महादशा

(1) कोई ग्रह खुइ भी मंदा हो और आगे तखत की मालकीयत से भी दुश्मन आ जावे तो महादशा में होगा ।
(2) क़ायम या दरुस्त ग्रह कभी महादशा में नहीं हो सकते ।
(3) सारी उमर में ज्यादा से ज्यादा दो मंदी महादशायें होंगी ।
(4) ज्यादा से ज्यादा मंदा महादशा का अरसा सारी उमर में 39 साल होगा।

लगातार दो महादशाओं का दरम्यानी (हर दो का) साल गिनती में गिना जायेगा । मगर असर में इस ग्रह का जाति असर या ख़ाली असर का होगा ।

औकात महादशा

ग्रह महादशा (साल) जाति असर का साल ग्रह जो सो जांएगे

वृहस्पति सूर्य चन्द्र शुक्र मंगल बुध शनि राहू केतू 16 6 1 2 7 17 19 18 7 1 वाँ ताक़ जुफ़त 11 वाँ चौथा 5 वाँ 6 वाँ 7 वाँ 3 रा शनि 6 – राहु 6 – केतु 3 साल मंगल – बद 6 वृहस्पति 2 – मंगल 6 – शनि 2 वृहस्पति 6–मंगल 6 –बुध 2 शनि 6 शुक्र 1 – शनि 6 राहू सिफर वृहस्पति 6 मंगल 6 शनि 5 केतू सिफर वृहस्पति 16 – केतू 3 वृहस्पति 8 सूर्य सिफर चन्द्र 1 शुक्र 3 मंगल 6 वृहस्पति 6, सूरज बुध शनि सिफर

महादशा में ग्रह बदस्तूर

सिवाय पापी ग्रहों के बाक़ी सब बदस्तूर जारी ।
सिवाय मंगल बद ग्रहों के बाक़ी सब बदस्तूर जारी ।
बुध – शुक्र – सूर्य – राहु केतु
सूर्य – चन्द्र – राहू – केतु
सूर्य – चन्द्र – वृहस्पति – केतू – बुध – राहू नदारद
सूर्य – चन्द्र – शुक्र – राहु – केतू – नदारद
सूर्य – चन्द्र – मंगल – बुध – शुक्र – राहू
शनि – बुध – केतु – सूर्य नदारद
चन्द्र – शुक्र – मंगल – राहू – सूर्य नदारद – बुध नदारद

बाप बेटा – मुशतरका किस्मत

किस्मत 1 7 14 21 28 34 42 49 56 63 7 12 **उमर** 7 63 56 49 42 35 28 21 14 7 1 12

कुण्डली के ख़ानों में मकान व सेहन का तअल्लुक

अगर घर होवे ख़ाना नं० तो सेहन होगा खाना नं० कौन सेहन का मुनसिफ ग्रह होगा

1 2 3 4 5 6 7 8 9 1 11 12 7 8 11 1 9 12 1 2 5 4 3 6 मंगल चन्द्र (उमर) सूर्य वृहस्पति

उपाय ग्रहों के

ग्रह	किस्म ग्रह	गंबी ताकत में	रंग	उपाय वास्ते औलाद व दीगर बजूहात	उपाय आम की चीज़े
वृह०	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध
शनि	राहू	केतू	नर	नर	स्त्री
स्त्री	नर	नंपु०	नंपु०	नंपु०	नंपु०
ब्रह्म	विष्णु	शिवजी	लक्ष्मी	हनुमान	दुर्गा जी
भैरों	बली	सरस्वती	गऊ माता	ज़रद	गन्दगी
दूध का दही का	सुर्ख	सब्ज़	स्याह	नीला	चितकबरा
हरि पूजन कथा	हरिवंश	आराध्य पूजन	लोगों की पालना	गायत्री पाठ	दुर्गा पाठ
राजा की उपासना	कन्यादान	दान कपिला गायदाल	चना	सोना	गंदम
सुर्ख ताँबा	चावल	दूध	चाँदी	घी, दही, रेत	काफूर
मोती सफेद	दाल मसूर	लाल मूँग	सालम ज़मुर्द	माश	सालम
लोहा	सरसों	नीलम	तिल		

अवधि – उपाय:– हर एक उपाय की अवधि कम – अज़ कम 4 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी जो अपनी निसफ और चौथाई हिस्सा अवधि में भी अपना प्रभाव प्रकट कर देगी ।

खानदानी उपाय पितृ ऋण, मातृ ऋण बगैरा या कुल संबंधित की मदद के लिये उपाय की अवधि होगी तो वही 4 या 43 दिन मगर हर रोज़ लगातार की बजाय हफतावार लगातार होगी । यानि हर आठवें दिन जो 4, 43 हफते होंगे ।

उपाय के वक्त चाहे आखिरी दिन 39 वें 4 वें ही भूल जायें या बन्द कर बैठें तो सब किया कराया निष्फल होगा । और नये सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी अवधि तक करने के बाद फल देगा ।

अगर किसी वजह से उपाय बन्द ही करना दरकार हो मगर पहिला असर भी कायम रखना मंजूर हो तो **चावल दूध से धोकर अपने पास रखते जायें। सेहत बीमारी :**–सेहत बीमारी ख़ाना नं० 3–5 के ग्रहो से ज़ाहिर होगी ।

उमर होगी	ग्रह चाल होगी
12 दिन	12 माह
9 साल	1 साल
12 साल	15 साल
2 साल	22 साल
25 साल	3 साल
35 साल	4 साल
45 साल	5 साल
7 साल	75 साल
8 साल	85 साल
9 साल	96 साल

चन्द्र नं० 5 – सूरज नं० 1 – चन्द्र केतु नं० 6 सूर्य शनि मुशतरका वृहस्पति के घरों में । जब नर ग्रह साथ या साथी सहायता पर न हो । सूर्य चन्द्र मुशतरका नं० 11 चन्द्र केतु नं० 1 चन्द्र नं० 5 सूरज नं० 11 जब नर ग्रह साथ या साथी मदद पर न हो । चन्द्र राहु नं० 1 वृहस्पति राहु नं० 2 या बुध वृहस्पति नं० 6 सूर्य राहू ख़ाना नं० 1 या 11 में । जब ख़ाना नं० 8 में उमर को रद्दी करने वाले ग्रह हों और साथ ही सूर्य राहू मुशतरका बैठे हों (1) खाना नं० 1 में और शनि मैं स्त्री ग्रह बैठे हों ख़ाना नं० 2 में या (2) ख़ाना नं० 11 में हों सूर्य राहु और शनि खुद उमर को रद्दी मंदा या नष्ट बर्बाद करने वाले घरों में हो या वह खुद ही मंदा हो रहा हो । मगर नर ग्रह साथ या साथी या मदद पर न हो । वरना उमर लम्बी होगी । चन्द्र राहु नं० 6 या मंगल बद (मंगल बुध नं० 6 या शुक्र और केतू दोनों नष्ट) बुध वृहस्पति नं० 2 या राहु नं० 3 चन्द्र बुध राहू मुशतरका वृहस्पति राहु नं० 9 या नं० 12 बुध केतू नं० 12 या वृहस्पति राहु नं० 6 चन्द्र राहू नं० 5 बशर्ते कि दोनों हर तरह से अकेले और दृष्टि से ख़ाली या नं० 2 या नं० 7 में में ग्रह । वृहस्पति केतु नं० 9 या सनीचर केतु नं० 6 या चन्द्र शनि नं० 7 चन्द्र राहू नं० 9 या चन्द्र नं० 9 चन्द्र वृहस्पति नं० 4 या नं० 3 – 6 चन्द्र नं० 7 चन्द्र क़ायम खाना नं० 1–8–1–11 चन्द्र नं० 2 या नं० 4

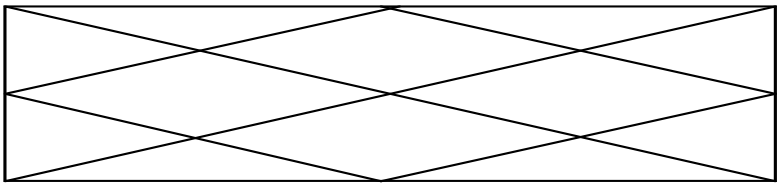

जब चन्द्र होवे ख़ाना नं० 1 में तो मौत का दिन होगा ।

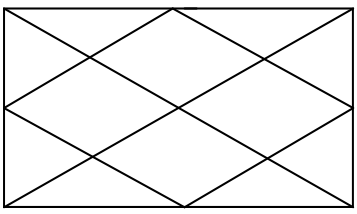

जब ख़ाना नं० 12 ख़ाली होवे तो चन्द्र बैठा होनेवाले घर के दिन मौत होगी ।

ग्रह की उमर

ख़ाना नं० ग्रह **आयु**

2 3 4, 5, 6 7, 8 9 वृहस्पति बुध या केतु शनि या मंगल या राहू शुक्र व चन्द्र सूर्य 75 साल
8 साल 9 साल 85 साल (अगर नर ग्रह की मदद हो तो 96 तक) 1 साल तक

ख़ाना नम्बरों की उमर

ख़ाना नं० उमर खाना 1 1 2 75 3 9 4 85 5 6 8 7 85 8 9 1 9
11 12 9

ख़ाना नं० 5 औलाद ख़ाना नं० 8 मौत
ख़ाना नं० 9 बुजुर्ग ख़ाना नं० 11 धर्म मन्दिर

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 212

अगर चन्द्र राहु मुशतरका होकर किसी भी राशि में हों तो हर ख़ाना नं० में चन्द्र की दी हुई उमर के सालों की तादाद निसफ हो जायेगी । मुतअल्लका मगग खुद इसके अपने खून के रिशतेदारें के लिये बशर्ते कि यह दोनों मुशतरका हर तरह से अकेले दृष्टि से ख़ाली हों । अगर कुण्डली के पहले घरों में हों तो मौत न होवे मगर डरपोक ज़रुर होगा । बैवक्त चन्द्र या राहु ।

लम्बी उमर

(1) चन्द्र कायम और केतु वृहस्पति नं० 12 चन्द्र वृहस्पति नं० 5 या चन्द्र और नर ग्रह क़ायम
(2) मंगल 1–2–7 और सूर्य नं० 4 चन्द्र वृहस्पति नं० 12 : उमर 12 साल

अल्प आयु

खाना नं० 9 में बुध वृहस्पति शुक्र या वृहस्पति के बहुत से दुशमन या चन्द्र राहु खाना नं० 7–8 में या शुक्र मंगल बुध नं० 7 में । उमर 8×8 = 64 तक ।

चन्द्र कुण्डली

2 चेत विक्रमी सम्वत् 1992 शनि–वार बमुकाम लाहौर छावनी खास; 5 बजे सुबह; मुताबिक 14:`3: 36 हो तो उस दिन की चन्द्र कुण्डली

चन्द्र – कुण्डली जन्म–कुण्डली

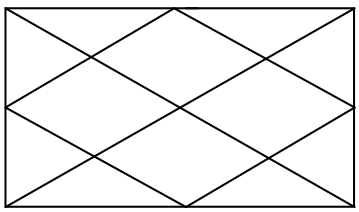

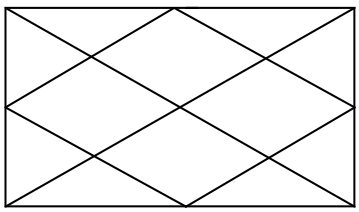

अरुण संहिता (लाल किताब) सामुद्रिक – 213

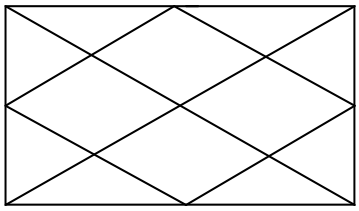

अब लाल किताब के लिये पैदाइश के दिन वाली चन्द्र कुण्डली में चन्द्र को जन्म लग्न की राशि का अंक्षर

यानि अक्षर नं० 11 दिया तो वही चन्द्र कुण्डली हसब जैल होगी ।

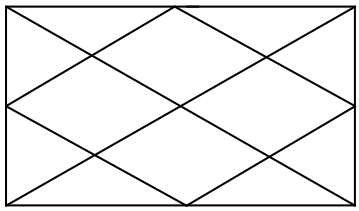

फिर अक्षर नं० 1 को अपनी ऊपर की जगह किया तो 'लाल किताब' के अनुसार चन्द्र कुण्डली होगी :-
अब ऊपर की चन्द्र कुण्डली से इस व्यक्ति की औरत का हाल इसी तरह ही देख लें जिस तरह कि जन्म कुण्डली से मर्द का हाल देख लेते हैं । वर्ष फल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा । जिस तरह कि जन्म - कुण्डली और मर्द का है । फर्क सिर्फ यह है कि शादी से पहले ऊपर की चन्द्र - कुण्डली अचानक असर दिया करेगी मगर शादी के दिन या औरत आने पर पूरा पूरा फल देगी । जो औरत का मुफस्सल हाल होगा । और इसी व्यक्ति को राशि फल बनकर मदद देगी ।

टेवे की आसान दरुस्ती

(1) इल्म ज्योतिष के अनुसार बनाई हुई जन्म कुण्डली के लग्न के ख़ाना नं० को एक का अक्षर देकर जब कुण्डली बन चुकी तो मालूम हो जायेगा कि लग्न से हर ग्रह कौन-कौन से घर है । इस तरह बैठे हुये ग्रहों के मुताबिक फलादेश देखें । और दिये हुये लग्न को तीन दफा हिला कर जाँच कर लें । जहाँ दरुसत मालूम होवे वही पक्का लग्न रख लेवें । जैसे :-

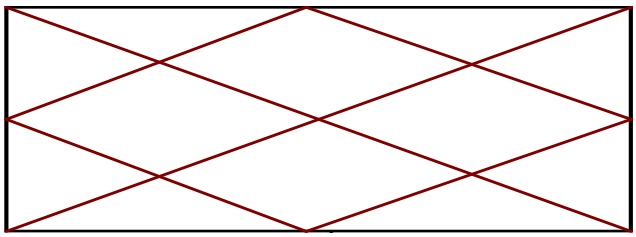

मकान कुण्डली बनाई और हर एक ग्रह की संबंधित चीज़ों से पड़ताल की । या उसके ख़ून के रिशतेदारों, हर एक से, संबंधित का हाल देखा तो मालूम हुआ कि वह दिये हुये टेवे के अनुसार दरुसत नहीं है । फिर वृहस्पति को खाना नं 2 या ख़ाना नं० 12 देकर देखा तो नं० 12 में वृहस्पति रख कर बाकी सब ग्रहों का फल मिलाया गया । अब तमाम हालात आम उमर और साल वार बगैरा देख लें । सही जबाब होगा ।

(2) ऊपर के ढँग से तो फर्क सिर्फ उस हालत का दरुस्त

होगा जबकि जन्म वक्त में मामूली फर्क लिखा गया हो। लेकिन हो सकता है कि किसी की पैदाइश हो तो जैसे कि सुबह सबेरे की मगर गलती से लिखी जाय शाम पक्की की। ऐसी हालत में दिये हुये पैदाइश के दिन की चन्द्र कुण्डली बना लें । और चन्द्रमा बैठा होने वाले घर को खाना नं० 1 देकर या चन्द्र को ख़ाना नं० 1 में करके बाकी घरों के ग्रह बिना क्रम के लिख लें और देखें कि हाथ रेखा के असूलो पर कुण्डली बनाने के ढंग से नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली से मालूम होवे, उसे उस घर में करके बाकी सब ग्रहों को बिना क्रम लिख देवें। अब लग्न सारणी के अनुसार देख लें कि जन्म वक्त दर-असल क्या हुआ । साथ ही इस तरह पर दरुस्त किये हुये टेवे का फलादेश बोल कर देख लेवें कि आया कापी में लिखा हुआ मिल गया । ग्रह - स्पष्टी के लिये हर ख़ानादार असर के लिये ऊपर दी हुई चीज़ों, बैठा होने वाले घर की आम संबंधित चीज़ों व ग्रह संबंधित की आम चीज़ों का संबंध भी बोलकर देख लेवें । जब पूरी तसल्ली हो जाए कि मकान कुण्डली के अनुसार भी अब वह टेवा दरुस्त हो गया है तो फिर आगे फलादेश देखना शुरु करें ।

ॐ
श्रीविष्णवे नमः

*********११/१२/९४